दादू दयाल की बानी

भाग २

प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद

दादू दयाल की बानी

भाग २

प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद

चतुर्थ बार]　　१६७४　　[मूल्य

Printed at the Belvedere Printing Works, Allahabad, by Sheel Mohan.

सूचीपत्र

ह

गुजराती भाषा के शब्द

———

दादू दयाल की बानी

भाग २—शब्द

॥ राग गौरी ॥

(१)

राम नाम नहिं छाडौं भाई । प्राण तजौं निकट जिव जाई ॥टेक॥
रती रती करि डारै मोहिं । जरै सरीर न छाडौं तोहि ॥१॥
भावै ले सिर करवत दे । जीवन मूरि न छाडौं ते ॥२॥
पावक में ले डारै मोहिं । जरै सरीर न छाडौं तोहि ॥३॥
इब दादू ऐसी बनि आई । मिलौं गोपाल निसाण बजाई ॥४॥

(२)

राम नाम जिनि छाडै कोई । राम कहत जन निर्मल होई ॥१॥
राम कहत सुख संपति सार । राम नाम तिरि लंघै पार ॥२॥
राम कहत सुधि बुधि मति पाई । राम नाम जिनि छाडौ भाई ॥३॥
राम कहत जन निर्मल होइ । राम नाम कहि कुसमल धोइ ॥४॥
राम कहत को को नहिं तारे । यहु तत दादू प्राण हमारे ॥५॥

(३)

मेरे मन भैया राम कहौ रे ॥ टेक ॥
राम नाम मोहिं सहजि सुनावै । उनहिं चरण मन कीन[1] रहौ रे ।
राम नाम ले संत सुहावै । कोई कहै सब सीस सहौ रे ॥
वाही सौं मन जोरे राखौ । नीकै रासि लिये निबहौ रे ।
कहत सुनत तेरो कछू न जावै । पाप निछेदन[2] सोई लहौ रे ॥
दादू रे जन हरि गुण गावो । कालहि जालहि फेरि दहौ रे ॥

(४)

कौण बिधि पाइये रे, मीत हमारा सोइ ॥ टेक ॥
पास पीव परदेस है रे, जब लग प्रगटै नाहिं ।
बिन देखे दुख पाइये, यहु सालै मन माहिं ॥ १ ॥

(१) करे। (२) नाश करने वाल।

जब लग नैन न देखिये, परगट मिलै न आइ ।
एक सेज संगहि रहै, यहु दुख सह्या न जाइ ॥ २ ॥
तब लग नेड़े दूरि है, जब लग मिलै न मोहिं ।
नैन निकट नहिं देखिये, संगि रहे क्या होइ ॥ ३ ॥
कहा करौं कैसे मिलै रे, तलफै मेरा जीव ।
दादू आतुर बिरहनी, कारण अपने पीव ॥ ४ ॥

(५)

जियरा क्यौं रहै रे, तुम्हरे दरसन बिन बेहाल ॥टेक॥
परदा अंतरि करि रहै, हम जीव केहि आधार ।
सदा सँगाती प्रीतमा, अब के लेहु उबार ॥ १ ॥
गोप गोसाईं ह्वै रहे, इब काहे न परगट होइ ।
राम सनेही संगिया, दूजा नाहीं कोइ ॥ २ ॥
अंतरजामी छिपि रहे, हम क्यों जीवैं दूरि ।
तुम बिन व्याकुल केसवा, नैन रहे जल पूरि ॥ ३ ॥
आप अपरछन ह्वै रहे, हम क्यों रैनि बिहाइ ।
दादू दरसन कारणे, तलफि तलफि जिव जाइ ॥ ४ ॥

(६)

अजहूँ न निकसै प्राण कठोर ॥ टेक ॥
दरसन बिना बहुत दिन बीते, सुंदर प्रीतम मोर ॥ १ ॥
चारि पहर चारौं युग बीते, रैनि गँवाई भोर ॥ २ ॥
अवधि गई अजहूँ नहिं आये, कतहुँ रहे चित चोर ॥ ३ ॥
कबहूँ नन निरखि नहिं देखे, मारग चितवत तोर ॥ ४ ॥
दादू ऐसे आतुर बिरहणि, जैसे चंद चकोर ॥ ५ ॥

(७)

सो धन पिव जी साजि सँवारी । इब बेगि मिलौ तन जाइ बनवारी ॥
साजि सिंगार किया मन माहीं । अजहूँ पीव पतीजे नाहीं ॥
पीव मिलन को अहि निसि जागी । अजहूँ मेरी पलक न लागी ॥

जतन जतन करि पंथ निहारौं । पिव भावै त्यौं आप सँवारौं ॥
अब सुख दीजै जाउँ बलिहारी । कहै दादू सुणि बिपति हमारी ॥

(८)

सो दिन कबहूँ आवैगा । दादूड़ा पिव पावैगा ॥ टेक ॥
क्यूँ ही अपणे अंगि लगावैगा । तब सब दुख मेरा जावैगा ॥
पिव अपणे बैन सुनावैगा । तब आनँद अँगि न मावैगा ॥
पिव मेरी प्यास मिटावैगा । तब आपहि प्रेम पिलावैगा ॥
दे अपना दरस दिखावैगा । तब दादू मंगल गावैगा ॥

(९)

तैं मन मोह्यौ मोर रे, रहि न सकौं हौं राम जी ॥टेक॥
तोरे नाँइ चित लाइया रे, औरनि भया उदास ।
साईं ये समझाइया, हौं संग न छाडौं पास रे ॥ १ ॥
जाणौं तिलहि न बोछुटौं रे, जिनि पछतावा होइ ।
गुण तेरे रसना जपौं, सुणसी साईं सोइ रे ॥ २ ॥
भोरैं[1] जनम गँवाइया रे, चीन्हा नहीं सो सार ।
अजहूँ येह अचेत है, और नहीं आधार रे ॥ ३ ॥
पिव की प्रीति तौ पाइये रे, जे सिर होवै भाग ।
यौ तो अनत न जाइसी, रहसी चरणौं लाग रे ॥ ४ ॥
अनतैं मन निरवारिया रे, मोहिं एकै सेती काज ।
अनत गये दुख ऊपजै, मोहिं एकहि सेती राज रे ॥ ५ ॥
साईं सौं सहजैं रमौं रे, और नहीं आन देव ।
तहाँ मन बिलंबिया, जहाँ अलख अभेव रे ॥ ६ ॥
चरन कवल चित लाइया रे, भोरैं[2] ही ले भाव ।
दादू जन अचेत है, सहजैं हो तूँ आव रे ॥ ७ ॥

(१०)

बिरहणि कौं सिंगार न भावै । है कोइ ऐसा राम मिलावै ॥टेक॥

---

(१) भूल से । (२) भोलेपन से ।

बिसरे अंजन मंजन चीरा। बिरह बिथा यहु ब्यापै पीरा ॥१॥
नौसत[1] थाके सकल सिंगारा। है कोइ पीड़ मिटावनहारा ॥२॥
देह ग्रेह नहिं सुद्धि सरीरा। निस दिन चितवत चात्रिग नीरा ॥३॥
दादू ताहि न भावै आन। राम बिना भई मृतक समान ॥४॥

(११)

इब तौ मोहिं लागी बाइ। उन निहचल चित लियो चुराइ ॥टेक॥
आन न रुचै और नहिं भावै, अगम अगोचर तहँ मन जाइ।
रूप न रेख बरण कहौं कैसा, तिन चरणौं चित रह्या समाइ ॥
तिन चरणों चित सहजि समाना, सो रस भीना तहँ मन धाइ।
अब तौ ऐसी बनि आई। बिष तजे अरु अमृत खाइ ॥
कहा करौं मेरा बस नाहीं, और न मेरे अंगि सुहाइ।
पल इक दादू देखन पावै, तौ जनम जनम की त्रिषा बभाय ॥

(१२)

तूँ जिनि छाडै केसवा, मेरे और निबाहणहार हो।
औगुण मेरे देखि करि, तूँ ना कर मैला मन।
दीनानाथ दयाल है, अपराधी सेवग जन हो ॥ १ ॥
हम अपराधी जनम के, नख सिख मेरे बिकार।
मेटि हमारे औगुणाँ, तूँ गरवा सिरजनहार हो ॥ २ ॥
मैं जन बहुत बिगारिया, अब तुमहीं लेहु सँवारि।
समरथ मेरा साइयाँ, तूँ आपै आप उधारि हो ॥ ३ ॥
तूँ न बिसारी केसवा, मैं जन भूला तोहि।
दादू को और निबाहि ले, अब जिनि छाडै मोहि हो ॥ ४ ॥

(१३)

राम सँभालिये रे, बिषम दुहेलो[2] बार ॥ टेक ॥
मंझि समंदा नावरी रे, बूड़े खेवट बाझ[3]।
काढ़नहारा को नहीं रे, एक राम बिन आज ॥ १ ॥

---

(१) सोलह। (२) कठिन। (३) बझ या फस कर।

पार न पहुँचै राम बिन, भेरा[1] भौजल माहिं।
तारणहारा एक तूँ, दूजा कोई नाहिं॥ २॥
पार परोहन[2] तौ चलै, तुम खेवहु सिरजनहार।
भौसागर में डूबिहै, तुम बिन प्राण-अधार॥ ३॥
औघट दरिया क्यों तिरै, बोहिथ[2] बैसनहार।
दादू खेवट राम बिन, कौण उतारै पार॥ ४॥

(१४)

पार नहिं पाइये रे राम बिना को निरबाहणहार॥ टेक॥
तुम बिन तारण को नहीं, दूभर[3] यहु संसार।
पैरत थाके केसवा, सूझै वार न पार॥ १॥
बिषम भयानक भौजला, तुम बिन भारी होइ।
तूँ हरि तारण केसवा, दूजा नाहीं कोइ॥ २॥
तुम बिन खेवट को नहीं, अतिर[4] तिर्‌यो नहिं जाइ।
औघट भेरा डूबि है, नाहीं आन उपाइ॥ ३॥
यहु घट औघट बिषम है, डूबत माहिं सरीर।
दादू काइर राम बिन, मन नहिं बाँधै धीर॥ ४॥

(१५)

क्यों हम जीवैं दास गुसाईं। जे तुम छाडौ समरथ साईं॥टेक॥
जे तुम जन को मनहिं बिसारा। तौ दूसर कौण सँभालनहारा॥१॥
जे तुम परिहरि रहौ निनारे। तौ सेवग जाइ कौन के द्वारे॥२॥
जे जन सेवग बहुत बिगारै। तौ साहिब गरवा[5] दोष निवारै॥३॥
समरथ साईं साहिब मेरा। दादू दास दीन है तेरा॥४॥

(१६)

क्यों कर मिलै मो कौं राम गुसाईं। यहु बिषिया मेरे बसि नाहीं॥टेक॥
यहु मन मेरा दह दिसि धावै। नियरे राम न देखन पावै॥१॥
जिभ्या स्वाद सबै रस लागे। इंद्री भोग बिषै कौं जागे॥२॥

(१) बेड़ा, नाव। (२) नाव। (३) कठिन। (४) तैरने के योग्य नहीं, बोझैल।
(५) गहिर गंभीर।

स्रवणहुँ साच कदे नहिं भावै । नैन रूप तहँ देखि लुभावै ॥३॥
काम क्रोध कदे नहिं छोजै । लालच लागि बिषै रस पीजै ॥४॥
दादू देखि मिलै क्यों साईं । बिषै बिकार बसै मन माहिं ॥५॥

(१७)

जौ रे भाई राम दया नहिं करते ।
नवका नाँव खेवट हरि आपै, यों बिन क्यों निस्तरते ॥टेक॥
करनी कठिन होत नहिं मोपै, क्यों कर ये दिन भरते ।
लालच लागि परत पावक में, आपहि आपै जरते ॥१॥
स्वादहिं संग बिषै नहिं छूटै, मन निहचल नहिं धरते ।
खाय हलाहल सुख के ताईं, आपै ही पचि मरते ॥२॥
मैं कामी कपटी क्रोध काया में, कूप परत नहिं डरते ।
करवत[1] काम सीस धरि अपने, आपहि आप बिहरते ॥३॥
हरि अपना अंग आप नहिं छाडै, अपनी आप बिचरते ।
पिता क्यौं पूत कौं मारै, दादू यों जन तरते ॥४॥

(१८)

तौ लगि जिनि मारै तूँ मोहिं । जौं लगि मैं देखौं नहिं तोहिं ॥टेक॥
इब के बिछुरे मिलन कैसे होइ । इहि बिधि बहुरि न चीन्है कोइ ॥१॥
दीनदयाल दया करि जोइ । सब सुख आनँद तुम थैं होइ ॥२॥
जनम जनम के बंधन खोइ । देखण दादू अहि निसि रोइ ॥३॥

(१९)

संग न छाडौं मेरा पावन पीव । मैं बलि तेरे जीवन जीव ॥टेक॥
संगि तुम्हारे सब सुख होइ । चरण कँवल मुख देखौं तोहि ॥१॥
अनेक जतन करि पाया सोइ । देखौं नैनौं तौ सुख होइ ॥२॥
सरणि तुम्हारी अंतरि बास । चरण कँवल तहँ देहु निवास ॥३॥
अब दादू मन अनत न जाइ । अंतरि बेधि रह्यो ल्यौ लाइ ॥४॥

---

(१) आरा ।

(२०)*

नहिं मेलूँ राम नहिं मेलूँ ।

मैं शोधि लीधो नहिं मेलूँ । चित तूँ सूँ बाँधूँ नहिं मेलूँ ॥टेक॥
हूँ तारे काजे ताला बेली । हवे केम मने जाशे मेली ॥१॥
साहसी तूँ न मन सौं गाढ़ौ । चरण समानो केवी पेरे काढ़ौ ॥२॥
राखिश हृदे तूँ मारो स्वामी । मैं दुहिले पाम्यों अंतरजामी ॥३॥
हवे न मेलूँ तूँ स्वामी मारो । दादू सन्मुख सेवक तारो ॥४॥

(२१)

राम सुनहु न बिपति हमारी हो । तेरी मूरति की बलिहारी हो ॥टेक॥
मैं जु चरण चित चाहना । तुम सेवग साधारना ॥ १ ॥
तेरे दिन प्रति चरण दिखावना । करि दया अंतरि आवना ॥२॥
जन दादू बिपति सुनावना । तुम गोबिंद तपति बुझावना ॥३॥

(२२)

प्रश्न–कौण भाँति भल मानै गुसाईं ।
तुम भावै सो मैं जानत नाहीं ॥ टेक ॥
कै भल मानै नाचें गायें । कै भल मानै लोक रिझायें ॥१॥
कै भल मानै तीरथ न्हायें । कै भल मानै मूँड मुडायें ॥२॥
कै भल मानै सब घर त्यागी । कै भल मानै भये बैरागी ॥३॥
कै भल मानै जटा बधायें[1] । कै भल मानै भसम लगायें ॥४॥
कै भल मानै बन बन डोलें । कै भल मानै मुखहिं न बोलें ॥५॥
कै भल मानै जप तप कीयें । कै भल मानै करवत लीयें ॥६॥

---

*अर्थ शब्द २० गुजराती भाषा—न छोड़ूँ, राम को न छोड़ूँ, मैंने उसको खोज लिया न छोड़ूँ, चित्त को तुम से जोड़े रक्खूँ न छोड़ूँ ॥ टेक ॥

मैं तेरे ही लिए तलफता हूँ अब क्योंकर मुझे छोड़ कर जायगा ॥ १ ॥

तू शूर वीर है पर मन तेरा कठोर नहीं है ता जो तेरे चरन से लगा उसे कैसे हटावेगा ॥ २ ॥

तू मेरा स्वामी है मैं तुझे दिल के अंदर रक्खूँगा, मैंने कठिनता से अंतरजामी को पाया है ॥ ३ ॥

अब अपने स्वामी को न छोड़ूँ, दादू तेरा सेवक सन्मुख का है ॥ ४ ॥

(१) बढ़ाने से ।

कै भल मानै ब्रह्म गियानी । कै भल मानै अधिक धियानी ॥७॥
जे तुम भावै सो तुम्ह पै आहि । दादू न जाणै कहि समझाइ ॥८॥

॥ साखी ॥

उत्तर—(दादू) जे तू समझै तौं कहौं, साचा एक अलेष ।
डाल पान तजि मूल गहि, क्या दिखलावै भेष ॥१॥ (१४-१०)
दादू सचु बिन साईं ना मिलै, भावै भेष बनाइ ।
भावै करवत उरध-मुखि, भावै तीरथ जाइ ॥२॥ (१४-४१)

(२३)

अहो गुण तोर औगुण मोर गुसाईं ।
तुम कृत कीन्हा सो मैं जानत नाहीं ॥ टेक ॥
तुम उपगार किये हरि केते, सो हम बिसरि गये ।
आप उपाइ अगिन मुख राखे, तहँ प्रतिपाल भये हो गुसाईं ॥१॥
नखसिख साजि किये हो सजीवन, उदरि अधार दिये ।
अन्न पान जहँ जाइ भसम है, तहँ तैं राखि लिये हो गुसाईं ॥२॥
दिन दिन जानि जतन करि पोषे, सदा समीप रहे ।
अगम अपार किये गुण केते, कबहूँ नाहिं कहे हो गुसाईं ॥३॥
कबहूँ नाहिंन तुम तन चितवत, माया मोह परे ।
दादू तुम तजि जाइ गुसाईं, बिषिया माहिं जरे हो गुसाईं ॥४॥

(२४)

कैसे जीवियै रे, साईं संग न पास ।
चंचल मन निहचल नहीं, निस दिन फिरै उदास ॥ टेक ॥
नेह नहीं रे राम का, प्रीति नहीं परकास ।
साहिब का सुमिरण नहीं, करै मिलन की आस ॥ १ ॥
जिस देखे तूँ फूलिया रे, पाणी प्यंड बधाना मास ।
सो भी जलि बलि जाइगा, झूठा भोग बिलास ॥ २ ॥
तौ जिवने में जीवना रे, सुमिरै साँसै साँस ।
दादू परगट पिव मिलै, तौ अंतरि होइ उजास ॥ ३ ॥

(२५)

जियरा मेरे सुमिर सार, काम क्रोध मद तजि बिकार ॥टेक॥
तूँ जिनि भूलै मन गँवार, सिर भार न लीजै मानि हार ॥१॥
सुणि समझायो बार बार, अजहुं न चेतै हो हुसियार ॥२॥
करि तैसैं भव तिरिये पार, दादू इब थैं यहि बिचार ॥३॥

(२६)

जियरा चेति रे, जिनि जारे ।
हेजैं[1] हरि सौं प्रीति न कीन्ही, जनम अमोलिक हारे ॥टेक॥
बेर बेर समझायो रे जियरा, अचेत न होइ गँवारे ।
यहु तन है कागद की गुड़िया, कछु एक चेत बिचारे ॥१॥
तिल तिल तुझ कौं हाणि होत है, जे पल राम बिसारे ।
भौ भारी दादू के जिय में, कहु कैसे करि डारे ॥२॥

(२७)

जियरा काहे रे मूढ़ डोलै ।
बनबासी लाला पुकारै, तुहीं तुहीं करि बोलै ॥टेक॥
साथ सवारी लै न गयौ रे, चालण लागो बोलै ।
तब जाइ जियरा जाणैगो रे, बाँधे ही कोइ खोलै ॥१॥
तिल तिल माहैं चेत चलो रे, पंथ हमारा तोलै ।
गहिला दादू कछू न जाणै, राखि ले मेरे मौलै[2] ॥२॥

(२८)

ता सुख कौं कहो का कीजै । जा थैं पल पल यहु तन छीजै ॥टेक॥
आसन कुंजर सिरि छत्र धरीजै । ता थैं फिरि फिरि दुक्ख सहीजै ॥
सेज सँवारि सुंदरि संगि रमीजै । खाइ हलाहल भरम मरीजै ॥
बहु बिधि भोजन मानि रुचि लीजै । स्वाद संकुटि[3] भ्रम पासि परीजै ॥
ये तजि दादू प्राण पतीजै । सब सुख रसना राम रमीजै ॥

(२९)

मन निर्मल तन निर्मल भाई । आन उपाइ बिकार न जाई ॥टेक॥

---

(१) प्रेम के साथ। (२) मालिक। (३) संकट, कष्ट।

जो मन कोइला तौ तन कारा। कोटि करै नहिं जाइ बिकारा ॥
जो मन बिसहर तौ तन भुवंगा। करै उपाइ बिषै फुनि संगा ॥
मन मैला तन उज्जल नाहीं। बहुत पचि हारे बिकार न जाहीं ॥
मन निर्मल तन निर्मल होई। दादू साच बिचारै कोई ॥

(३०)

मैं मैं करत सबै जग जावै, अजहूँ अंध न चेतै रे।
यहु दुनिया सब देख दिवानी, भूलि गये हैं केते रे ॥टेक॥
मैं मेरे में भूलि रहे रे, साजन सोई बिसारा।
आया हीरा हाथि अमोलिक, जनम जुवा ज्यूँ हारा ॥ १ ॥
लालच लोभैं लागि रहे रे, जानत मेरी मेरा।
आपहि आप बिचारत नाहीं, तूँ काको को तेरा ॥ २ ॥
आवत है सब जाता दीसै, इन में तेरा नाहीं।
इन सौं लागि जनम जिन खोवै, सोधि देखु सचु माहीं ॥ ३ ॥
निहचल सौं मन मानै मेरा, साईं सौं बनि आई।
दादू एक तुम्हारा साजन, जिन यहु भुरकी[१] लाई ॥ ४ ॥

(३१)

का जिवना का मरणा रे भाई। जो तैं राम न रमसि अघाई ॥
का सुख संपति छत्र-पति राजा। बनखँडि जाइ बसे केहि काजा ॥
का विद्या गुन पाठ पुराना। का मूरिष जो तैं राम न जाना ॥
का आसन करि अहिनिसि जागे। का परि सोवत राम न लागे ॥
का मुकता का बधे होई। दादू राम न जाना सोई ॥

(३२)

मन रे राम बिना तन छीजै।
जब यहु जाइ मिलै माटी में, तब कहु कैसैं कीजै ॥टेक॥
पारस परसि कंचन करि लीजै, सहज सुरति सुखदाई।
माया बेलि बिषै फल लागे, ता परि भूलि न भाई ॥ १ ॥

---

(१) मंत्र।

जब लग प्राण प्यंड है नीका, तब लग ताहि जिनि भूलै।
यहु संसार सेंबल[1] के सुख ज्यूँ, ता पर तूँ जिनि फूलै ॥ २ ॥
औसर येह जानि जग जीवन, समझि देखि सचु पावै।
अंग अनेक आन मति भूलै, दादू जिनि डहकावै[2] ॥ ३ ॥

(३३)

मोह्यो मृग देखि बन अंधा। सूझत नहीं काल के फंधा ॥
फूल्यौ फिरत सकल बन माहीं। सिर साँधे सर सूझत नाहीं ॥
उदमद मातौ बन के ठाट। छाडि चल्यौ सब बारह बाट ॥
फँध्यो न जानै बन के चाइ। दादू स्वाद बँधानौ आइ ॥

(३४)

काहे रे मन राम बिसारे। मनिषा जनम जाइ जिय हारे ॥टेक॥
मात पिता को बंध न भाई। सब ही सुपिना कहा सगाई ॥
तन धन जोबन झूठा जाणों। राम हृदै धरि सारँग प्राणी ॥
चंचल चित बित झूठो माया। काहे न चेतै सो दिन आया ॥
दादू तन मन झूठा कहिये। राम चरण गहि काहे न रहिये ॥

(३५)

ऐसा जनम अमोलिक भाई। जा में आइ मिलै राम राई ॥
जा में प्राण प्रेम रस पीवै। सदा सुहाग सेज सुख जीवै ॥
आतम आइ राम सूँ राती। अखिल अमर धन पावै थाती॥
परगट परसन दरसन पावै। परम पुरिष मिलि माहिं समावै ॥
ऐसा जनम नहीं नर आवै। सो क्यों दादू रतन गँवावै ॥

(३६)

सतसंगति मगन पाइये। गुर परसादैं राम गाइये ॥टेक॥
आकास धरनि धरीजै धरनी आकास कीजै, सुन्नि माहैं निरखि लीजै ॥
निरखि मुकताहल माहैं साइर आयौ। अपने पीया हौं धावत खोजत पायौ।
सोच साइर अगोचर लहिये। देव देहरे माहैं कौन कहिये ॥

---

(१) सेमर एक वृक्ष होता है जिसके बड़े सुन्दर लाल फूल देख कर सुवा मगन होता है पर फल पर चोंच मारने से केवल रुई उसके भोतर से निकलती है। (२) डिगावै।

हरि कौं हितारथ ऐसौ लखै न कोई । दादू जे पीव पावै अमर होई ॥

(३७)

कौन जनम कहँ जाता है अरे भाई । राम छाँडि कहाँ राता है ॥टेक॥
मैं मैं मेरी इन सौं लागी । स्वाद पतंग न सूझै आगी ॥
बिषिया सौं रत गरब गुमान । कुंजर काम बँधे अभिमान ॥
लोभ मोह मद माया फंध । ज्यौं जल मीन न चेतै अंध ॥
दादू यहु तन यौंही जाइ । राम बिमुख मरि गये बिलाइ ॥

(३८)

मन मूरिखा तैं क्या कीया, कुछ पीव कारणि बैराग न लिया ।
रे तैं जप तप साधी क्या किया[1] ॥ टेक ॥
रे तैं करवत कासी कदि सह्या, रे तैं गंगा माहिं ना बह्या ।
रे तैं बिरहिण ज्यौं दुख ना सह्या ॥ १ ॥
रे तैं पाले परबत ना गल्या, रे तैं आप हि आपा ना दह्या ।
रे तैं पीव पुकारी कदि कह्या ॥ २ ॥
होइ प्यासे हरि जल ना पिया, रे तैं बजर न फाटौ रे हिया ।
ध्रिग जीवन दादू ये जिया ॥ ३ ॥

(३९)

क्या कीजै मनिषा जनम कौं, राम न जपै गँवारा ।
माया के मद मातौ बहै, भूलि रहा संसारा रे ॥ टेक ॥
हिरदै राम न आवई, आवै बिषै बिकारा रे ।
हरि मारग सूझै नहीं, कूप परत नहिं बारा रे ॥ १ ॥
आपा अगिनि जु आप में, ता थैं अहि निसि जरै सरीरा रे ।
भाव भगति भावै नहीं, पीवै न हरि जल नीरा रे ॥ २ ॥
मैं मेरी सब सूझई, सूझै माया जालो रे ।
राम नाम सूझै नहीं, अंध न सूझै कालो रे ॥ ३ ॥
ऐसेहिं जनम गँवाइया, जित आया तित जाय रे ।
राम रसायण ना पिया, जन दादू हेत लगाय रे ॥ ४ ॥

(१) दो पुस्तकों में "दिया" है ।

(४०)

इन में क्या लीजै क्या दीजै, जनम अमोलिक छीजै ॥ टेक ॥
सोवत सुपना होई, जागे थैं नहिं कोई ।
मृग तृष्णा जल जैसा, चेति देखि जग ऐसा ॥ १ ॥
बाजी भरम दिखावा, बाजीगर डहकावा ।
दादू संगी तेरा, कोई नहीं किस केरा ॥ २ ॥

(४१)

खालिक जागे जियरा सोवै । क्योंकरि मेला होवै ॥टेक॥
सेज एक नहिं मेला । ता थैं प्रेम न खेला ॥ १ ॥
साईं संग न पावा । सोवत जनम गँवावा ॥ २ ॥
गाफिल नींद न कीजै । आव घटै तन छीजै ॥ ३ ॥
दादू जीव अयाना । झूठे भरम भुलाना ॥ ४ ॥

(४२)

॥ पहरा ॥

पहले पहरे रैणि दे बणिजारया, तूँ आया इहि संसार वे ।
माया दा रस पीवण लग्गा, बिसरया सिरजनहार वे ॥
सिरजनहार बिसारा किया पसारा, मात पिता कुलनारि वे ।
झूठी माया आप बँधाया, चेतै नहीं गँवार वे ॥
गँवार न चेते औगुण केते, बध्या सब परिवार वे ।
दादू दास कहे बणिजारया, तूँ आया इहि संसार वे ॥ १ ॥
दूजे पहरे रैणि दे बणिजारया, तूँ रत्ता तरुणी नाल वे ।
माया मोहि फिरै मतवाला, राम न सक्या सँभालि वे ॥
राम न सँभाले रत्ता नाले, अंध न सूझै काल वे ।
हरि नहिं ध्याया जनम गँवाया, दह दिसि फूटा ताल वे ॥
दह दिसि फूटा नीर निखूटा, लेखा डेवण साल वे ।
दास दास कहे बणिजारया, तूँ रत्ता तिरुणी नालि वे ॥ २ ॥
तीजै पहिरै रैणि दे बणिजारया, तै बहुत उठाया भार वे ।
जो मन भाया सो करि आया, ना कुछ किया बिचार वे ॥

बिचार न कीया नाँव न लीया, क्योंकरि लंघै पार वे।
पार न पावै फिरि पछितावै, डूबण लग्गा धार वे॥
डूबण लग्गा भेरा भग्गा, हाथ न आया सार वे।
दादू दास कहै बणिजारचा, तैं बहुत उठाया भार वे॥ ३॥
चौथे पहरै रैणि दै बणिजारचा, तूँ पक्का हूवा पीर वे।
जोबन गया जुरा बियापी, नाहीं सुद्धि सरीर वे॥
सुद्धि न पाई रैणि गँवाई, नैनौं आया नीर वे।
भौजल भेरा डूबण लग्गा, कोई न बंधै धीर वे॥
कोइ धीर न बंधै जम के फंधै, क्योंकरि लंघै तीर वे।
दादूदास कहै बणिजारचा, तूँ पक्का हूवा पीर वे॥ ४॥

(४३)

काहे रे नर करौ डफाँड़[1]। अंति काल घर गोर मसाण॥टेक॥
पहलै बलवँत गये बिलाइ। ब्रह्मा आदि महेसुर जाइ॥ १॥
आगैं होते मोटे मीर। गये छाडि पैगंबर पीर॥ २॥
काची देह कहा गरबाना। जे उपज्या सो सबै बिलाना॥ ३॥
दादू अमर उपावणहार। आपै आप रहै करतार॥ ४॥

(४४)

इत घर चोर न मूसै कोई। अंतरि है जे जानै सोई॥टेक॥
जागहु रे जन तत्त न जाइ। जागत है सो रह्या समाइ॥१॥
जतन जतन करि राखहु सार। तसकरि[2] उपजै कौन बिचार॥२॥
इब करि दादू जाणै जे। तौ साहिब सरणागति ले॥३॥

(४५)

मेरी मेरी करत जग षीन्हा[3], देखत ही चलि जावै।
काम क्रोध त्रिसना तन जालै, ता थैं पार न पावै॥टेक॥
मूरिष ममिता जनम गँवावै, भूलि रहे इहि बाजी।
बाजीगर कूँ जानत नाहीं, जनम गँवावै बादी॥ १॥

---

(१) डिम्भ। (२) चोर। (३) छीन या नाश हुआ।

परपँच पंच करै बहुतेरा, काल कुटँब के ताईं ।
बिष के स्वादि सबै ये लागे, ता थैं चीन्हत नाहीं ॥ २ ॥
एता जिय में जाणत नाहीं, आइ कहाँ चलि जावै ।
आगैं पीछैं समझै नाहीं, मूरिख यौं डहकावै ॥ ३ ॥
ये सब भरम भानि भल पावै, सोधि लेहु सो साईं ।
सोई एक तुम्हारा साजन, दादू दूसर नाहीं ॥ ४ ॥

(४६)

गरब न कीजिये रे, गरबैं होइ बिनास ॥
गरबैं गोबिंद ना मिलै, गरब नरक निवास ॥टेक॥
गरबैं रसातलि जाइये, गरबं घोर अँधार ।
गरबं भौजल डूबिये, गरबैं वार न पार ॥ १ ॥
गरबं पार न पाइये, गरबं जमपुर जाइ ।
गरबैं को छूटै नहीं, गरबैं बंधे आइ ॥ २ ॥
गरबैं भावैं न ऊपजै, गरबैं भगति न होइ ।
गरबैं पिव क्यों पाइये, गरब करे जिनि कोइ ॥ ३ ॥
गरबैं बहुत बिनास है, गरबं बहुत बिकार ।
दादू गरब न कीजिये, सनमुख सिरजनहार ॥ ४ ॥

(४७)

तूँ है तूँ है तूँ है तेरा, मैं नहिं मैं नहिं मैं नहिं मेरा ॥टेक॥
तूँ है तेरा जगत उपाया, मैं मैं मेरा धंधै लाया ॥ १ ॥
तूँ है तेरा खेल पसारा, मैं मैं मेरा कहै गँवारा ॥ २ ॥
तूँ है तेरा सब संसारा, मैं मैं मेरा तिन सिरि भारा ॥ ३ ॥
तूँ है तेरा काल न खाइ, मैं मैं मेरा मरि मरि जाइ ॥ ४ ॥
तूँ है तेरा रह्या समाइ, मैं मैं मेरा गया बिलाइ ॥ ५ ॥
तूँ है तेरा तुमहीं माहिं, मैं मैं मेरा मैं कुछ नाहिं ॥ ६ ॥
तूँ है तेरा तूँ हीं होइ, मैं मैं मेरा मिल्या न कोइ ।
तूँ है तेरा लंघै पार, दादू पाया ज्ञान बिचार ॥ ७ ॥

(४८)

हुसियार रही मन मारैगा, साईं सतगुर तारैगा ॥ टेक ॥
माया का सुख भावे, मूरिष मन बौरावे रे ॥ १ ॥
झूठ साच करि जाना, इन्द्री स्वाद भुलाना रे ॥ २ ॥
दुख कौं सुख करि मानै, काल झाल नहिं जानै रे ॥ ३ ॥
दादू कहि समझावै, यह औसर बहुरि न पावै रे ॥ ४ ॥

(४६)

साहिब जी सति मेरा रे। लोक झखैं बहुतेरा रे ॥ टेक ॥
जीव जनम जब पाया रे। मस्तक लेख लिखाया रे ॥ १ ॥
घटै बधै कुछ नाहीं रे। करम लिख्या उस माहीं रे ॥ २ ॥
बिधाता बिधि कीन्हा रे। सिरजि सबन कौं दीन्हा रे ॥ ३ ॥
समरथ सिरजनहारा रे। सो तेरे निकटि गँवारा रे ॥ ४ ॥
सकल लोग फिरि आवे रे। तौ दादू दीया पावै रे ॥ ५ ॥

(५०)

पूरि रह्या परमेसुर मेरा। अणमाँग्या देवै बहुतेरा ॥ टेक ॥
सिरजनहार सहज में देइ। तौ काहे धाइ माँगि जन लेइ ॥१॥
बिसंभर सब जग कूँ पूरै। उदर काज नर काहे झूरै ॥२॥
पूरिक पूरा है गोपाल। सब की चीत करै दरहाल ॥३॥
समरथ सोई है जगनाथ। दादू देख रहै सँग साथ ॥४॥

(५१)

राम धन खात न खूटै[1] रे।
अपरम्पार पार नहिं आवै, आथि[2] न टूटै रे ॥ टेक ॥
तस्करि लेइ न पावक जालै, प्रेम न छूटै रे।
चहुँ दिसि पसरयौ बिन रखवाले, चोर न लूटै रे ॥ १ ॥
हरि हीरा है राम रसाइण, सरस न सूकै रे।
दादू और आथि[2] बहुतेरी, तुस[3] नर कूटै रे ॥ २ ॥

---

(१) घटै। (२) थैली। (३) भूसी।

(५२)

राम विमुख जग मरि मरि जाइ । जीवै संत रहै ल्यौलाइ ॥टेक॥
लीन भये जे आतम रामा । सदा सजीवन कीये नामा ॥१॥
अमृत राम रसायण पीया । ता थैं अमर कबीरा कीया ॥२॥
राम राम कहि राम समाना । जन रैदास मिले भगवाना ॥३॥
आदि अंति केते कलि जागे । अमर भये अबिनासी लागे ॥४॥
राम रसायण दादू माते । अबिचल भये राम रँग राते ॥५॥

(५३)

निकटि निरंजन लागि रहे । तब हम जीवत मुकत भये ॥टेक॥
मरि करि मुकति जहाँ जग जाइ । तहाँ न मेरा मन पतियाइ ।१॥
आगैं जनम लहैं औतारा । तहाँ न मानै मना हमारा ॥२॥
तन छूटे गति जो पद होइ । मिरतक जीव मिलै सब कोइ ॥३॥
जीवत जनम सुफल करि जाना । दादू राम मिले मन माना ॥४॥

(५४)

प्रश्न—कादिर[1] कुदरति लखी न जाइ । कहँ थैं उपजै कहाँ समाइ ॥
कहँ थैं कीन्ह पवन अरु पाणी । धरनि गगन गति जाइ न जानी ॥
कहँ थैं काया प्राण प्रकासा । कहाँ पंच मिलि एक निवासा ॥
कहँ थैं एक अनेक दिखावा । कहँ थैं सकल एक है आवा ॥
दादू कुदरति बहु हैराना । कहँ थैं राखि रहे रहिमाना ॥

॥ साखी ॥

उत्तर—रहै नियारा सब करै, काहू लिप्त न होइ । (२१-३०)
आदि अंति भानै घड़ै, ऐसा समरथ सोइ ॥
सुरम नहीं सब कुछ करै, यौं कलि धरी बणाइ । (२१-३१)
कौतिगहारा है रह्या, सब कुछ होता जाइ ॥
(दादू) सबदैं बंध्या सब रहै, सबदैं ही सब जाइ । (२२-२)
सबदैं ही सब ऊपजै, सबदैं सबै समाइ ॥

---

(१) समरथ ।

(५५)

ऐसा राम हमारे आवै। वार पार कोइ अंत न पावै ॥टेक॥
हलका भारी कह्या न जाइ। मोल माप नहिं रह्या समाइ ॥
कीमति लेखा नहिं परिमाण। सब पचि हारे साध सुजाण ॥
आगो पीछौ परिमित नाहीं। केते पारिष आवहिं जाहीं ॥
आदि अंत मधि लखै न कोइ। दादू देखै अचिरज होइ ॥

(५६)

प्रश्न–कौण सबद कौण परखणहार। कौण सुरति कहु कौण बिचार ॥
कौण सुज्ञाता कौण गियान। कौण उनमनी कौण धियान ॥
कौण सहज कहु कौण समाध। कौण भगति कहु कौण अराध ॥
कौण जाप कहु कौण अभ्यास। कौण प्रेम कहु कौण पियास ॥
सेवा कौण कहौ गुरदेव। दादू पूछै अलष अभेव ॥

॥ साखी ॥

उत्तर–आपा मेटै हरि भजै, तन मन तजै बिकार। (२९-२)
निरबैरी सब जीव सौं, दादू यह मत सार ॥
आपा गर्ब गुमान तजि, मद मंछर हंकार। (२३-५)
गहै गरीबी बंदगी, सेवा सिरजनहार ॥

(५७)

प्रश्न–मैं नहिं जानूँ सिरजनहार। ज्यों है त्योंही कहौ करतार ॥
मस्तक कहाँ कहाँ कर पाँय। अबिगत नाथ कहौ समझाय ॥
कहँ मुख नैनाँ स्रवनाँ साईं। जानराय सब कहौ गोसाईं ॥
पेट पीठ कहाँ है काया। पड़दा खोलि कहौ गुर राया ॥
ज्यौं है त्यौं कहि अंतरजामी। दादू पूछै सतगुर स्वामी ॥

॥ साखी ॥

उत्तर–दादू सबै दिसा सौं सारिखा, सबै दिसा मुख बैन।
सबै दिसा स्रवनहु सुणै, सबै दिसा कर नैन ॥ [४-२१४]
सबै दिसा पग सीस है, सबै दिसा मन चैन।
सबै दिसा सनमुख रहै, सबै दिसा अंग ऐन ॥ [४-२१५]

(५८)

प्रश्न—अलख देव गुर देहु बताय। कहाँ रहौ त्रिभुवन पति राय॥
धरती गगन बसहु कविलास। तीन लोक में कहाँ निवास॥
जल थल पावक पवना पूर। चंद सूर निकटि के दूर॥
मंदर कौण कौण घरबार। आसण कौण कहौ करतार॥
अलख देव गति लखी न जाइ। दादू पूछै कहि समझाइ॥

॥ साखी ॥

उत्तर—(दादू) मुझ ही माहैं मैं रहूँ, मैं मेरा घरबार।
मुझ ही माहैं मैं बसूँ, आप कहै करतार (४-२१०)
(दादू) मैं ही मेरा अरस मैं, मैं ही मेरा थान।
मैं ही मेरी ठौर मैं, आप कहै रहमान॥ (४-२११)
[दादू] मैं ही मेरे आसरे, मैं मेरे आधार।
मेरे तकिये मैं रहूँ, कहै सिरजनहार॥ (४-२१२)
(दादू) मैं ही मेरी जाति मैं, मैं ही मेरा अंग।
मैं ही मेरा जीव मैं, आप कहै परसंग॥ (४-२१३)

(५९)

राम रस मीठा रे, कोइ पीवै साधु सुजाण।
सदा रस पीवै प्रेम सौं, सो अबिनासी प्राण॥ टेक॥
इहि रस मुनि लागे सबै, ब्रह्मा बिसुन महेस।
सुर नर साधू संत जन, सो रस पीवै सेस॥ १॥
सिधि साधिक जोगी जती, सती सबै सुखदेव।
पीवत अंत न आवई, ऐसा अलख अभेव॥ २॥
इहि रस राते नामदेव, पीपा अरु रैदास।
पिवत कबीरा ना थक्या, अजहूँ प्रेम पियास॥ ३॥
यहु रस मीठा जिन पिया, सो रस ही माहिं समाइ।
मीठे मीठा मिलि रह्या, दादू अनत न जाइ॥ ४॥

(६०)

मेरा मन मतिवाला मधु पीवे, पीवे बारम्बारो रे।
हरि रस रातो राम के, सदा रहै इकतारो रे ॥ टेक ॥
भाव भगति भाठी भई, काया कसणी सारो रे।
पोता मेरे प्रेम का, सदा अखंडित धारो रे ॥ १ ॥
ब्रह्म अगनि जोबन जरै, चेतनि चितहि उजासो रे।
सुमति कलाली सारवे, कोइ पीवै बिरला दासो रे ॥ २ ॥
आपा धन सब सौंपिया, तब रस पाया सारो रे।
प्रीति पियाले पीवहीं, छिन छिन बारंबारो रे ॥ ३ ॥
आपा पर नहि जाणिया, भूलो माया जालो रे।
दादू हरि रस जे पिवै, ता कौं कदे न लागै कालो रे ॥ ४ ॥

(६१)

रस के रसिया लीन भये। सकल सिरोमणि तहाँ गये ॥टेक॥
राम रसाइण अमृत माते। अबिचल भये नरक नहिं जाते ॥१॥
राम रसाइण भरि भरि पीवै। सदा सजीवनि जुग जुग जीवै ॥२॥
राम रसाइण त्रिभुवन सार। राम रसिक सब उतरे पार ॥३॥
दादू अमली बहुरि न आये। सुख सागर ता माहि समाये ॥४॥

(६२)

भेष न रीझै मेरा निज भरतार। ता थैं कीजे प्रीति बिचार ॥
दुराचारणि रचि भेष बनावे। सील साच नहिं पिव क्यूँ[१] भावै ॥
कंत न भावै करै सिंगार। डिंभपणैं रीझै संसार ॥
जो पै पतिब्रता ह्वै है नारी। सो धन भावै पिवहिं पियारी ॥
पीव पहिचानै आन न कोई। दादू सोई सुहागनि होई ॥

(६३)

सब हम नारी एक भरतार। सब कोई तन करै सिंगार ॥टेक॥
घरि घरि अपणे सेज सँवारै। कंत पियारे पंथ निहारै ॥१॥
आरति अपणे पिव कौं ध्यावै। मिलै नाह कब अंग लगावै ॥२॥

---

(१) पं० चं० प्र० की पुस्तक और एक लिपि में "क्यूँ" की जगह "कौं" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।

अति आतुर ये खोजत डोलैं । बानि परी बियोगनि बोलैं ॥३॥
सब हम नारी दादू दीन । देइ सुहाग काहू सँग लीन ॥४॥

(६४)

सोई सुहागनि साच सिंगार । तन मन लाइ भजै भरतार ॥
भाव भगति प्रेम ल्यौ लावै । नारी सोई सार सुख पावै ॥
सहज सँतोष सील जब आया । तब नारी नाह अमोलिक पाया ॥
तन मन जोबन सौंपि सब दीन्हा । तब कंत रिझाइ आप बसि कीन्हा॥
दादू बहुरि बियोग न होई । पिव सूँ प्रीति सुहागनि सोई ॥

(६५)

तब हम एक भये रे भाई । मोहन मिलि साची मति आई ॥
पारस परसि भये सुखदाई । तब दुतिया दुरमति दूरि गमाई ॥
मलयागिरी मरम मिलि पाया । तब बंस बरण कुल भरम गँवाया ॥
हरि जल नीर निकटि जब आया । तब बूँद बूँद मिलि सहज समाया ॥
नाना भेद भरम सब भागा । तब दादू एक रंगै रंग लागा ॥

(६६)

अलह राम छूटा भ्रम मोरा ।
हिन्दू तुरक भेद कुछ नाहीं, देखौं दरसन तोरा ॥ टेक ॥
सोई प्राण प्यंड पुनि सोई, सोई लोही मासा ।
सोई नैन नासिका सोई, सहजैं[1] कीन्ह तमासा ॥ १ ॥
स्रवणो सबद बाजता सुणिये, जिभ्या मीठा लागै ।
सोई भूख सबन कूँ ब्यापै, एक जुगुति सोइ जागै ॥ २ ॥
सोई संध बंध पुनि सोई, सोई सुख सोइ पीरा ।
सोई हस्त पाँव पुनि सोई, सोई एक सरीरा ॥ ३ ॥
यहु सब खेल खालिक हरि तेरा, तैं ही एक करि लीन्हा ।
दादू जुगुति जानि करि ऐसी, तब यहु प्राण पतीना ॥ ४ ॥

(६७)

भाई रे ऐसा पंथ हमारा ।
द्वै पष रहित पंथ गहि पूरा, अबरण एक अधारा ॥ टेक ॥

---

(१) दो लिपियों में "सहज" की जगह "माँहिं" है ।

बाद बिबाद काहू सौं नाहीं, माहिं जगत थैं न्यारा।
समदृष्टी सुभाइ सहज में, आपहि आप बिचारा ॥ १ ॥
मैं तैं मेरी यहु मति नाहीं, निरबैरी निरबिकारा।
पूरण सबै देखि आपा पर, निरालंभ निरधारा ॥ २ ॥
काहू के सँगि मोह न ममिता, संगी सिरजनहारा।
मनहीं मन सूँ समझि सयाना, आनँद एक अपारा ॥ ३ ॥
काम कलपना कदे न कीजै, पूरण ब्रह्म पियारा।
इहि पंथ पहुँचि पार गहि दादू, सो तत सहजि सँभारा ॥ ४ ॥

(६८)

ऐसो खेल बन्यौ मेरी माई। कैसे कहौं कछु जान्यौ न जाई ॥
सुर नर मुनि जन अचिरज आई। राम चरण को भेद न पाई ॥
मंदर माहैं सुरति समाई। कोऊ है सो देहु दिखाई ॥
मनहिं बिचार करौ ल्यौ लाई। दीवा समाना जोति कहाँ छिपाई ॥
देह निरंतर सुन्नि ल्यौ लाई। तहँ कौण रमै कौण सूता रे भाई ॥
दादू न जाणै ये चतुराई। सोइ गुर मेरा जिन सुधि पाई ॥

(६९)

भाई रे घर ही में घर पाया।
सहजि समाइ रह्यौ ता माहीं, सतगुर खोज बताया ॥टेक॥
ता घर काज सबै फिरि आया, आपै आप लखाया।
खोलि कपाट महल के दीन्हे, थिर अस्थान दिखाया ॥ १ ॥
भय औ भेद भरम सब भागा, साच सोई मन लाया।
प्यंड परे जहाँ जिव जावै, ता में सहज समाया ॥ २ ॥
निहचल सदा चलै नहिं कबहूँ, देख्या सब में सोई।
ताही सूँ मेरा मन लागा, और न दूजा कोई ॥ ३ ॥
आदि अन्त सोई घर पाया, इब मन अनत न जाई।
दादू एक रंगै रँग लागा, ता में रह्या समाई ॥ ४ ॥

(७०)

इत है नीर नहावन जोग। अनतहिं भर्म भूला रे लोग ॥
तिहि तटि न्हाये निर्मल होइ। वस्तु अगोचर लखे रे सोइ ॥
सुघट घाट अरु तिरिबौ तीर। बैठै तहाँ जगत गुर पीर ॥
दादू न जाणै तिन का भेव। आप लखावे अन्तरि देव ॥

(७१)

ऐसा ज्ञान कथौ मन[1] ज्ञानी। इहि घर होइ सहज सुख जानी ॥
गंग जमुन तहँ नीर नहाइ। सुषमन नारी रंग लगाइ ॥
आप तेज तन रह्यो समाइ। मैं बलि ताकी देखौं अघाइ ॥
बास निरंतर सो समझाइ। बिन नैनहुँ देखि तहँ जाइ ॥
दादू रे यहु अगम अपार। सो धन मेरे अधर अधार ॥

(७२)

इब तौ ऐसी बनि आई। राम चरण बिन रह्यो न जाई ॥
साईं कूँ मिलिबे के कारण। त्रिकुटी संगम नीर नहाई ॥
चरण कँवल की तहँ ल्यौ लागै। जतन जतन करि प्रीति बनाई ॥
जे रस भीना छावरि[2] जावै। सुन्दरि सहजैं संगि समाई ॥
अनहद बाजे बाजण लागे। जिभ्या हीणे कीरति गाई ॥
कहा कहौं कुछ बरणि न जाई। अबिगति अंतरि जोति जगाई ॥
दादू उन कौ मरम न जाणै। आप सुरंगे बेन बजाई ॥

(७३)

नीके राम कहत है बपुरा।
घर माहें घर निर्मल राखै, पंचौं धोवै काया कपरा ॥टेक॥
सहज समरपण सुमिरण सेवा, तिरबेणी तट संजम सपरा।
सुन्दरि सन्मुख जागण लागी, तहँ मोहन मेरा मन पकरा ॥१॥
बिन रसना मोहन गुण गावै, नाना बाणी अनभै अपरा।
दादू अनहद ऐसैं कहिये, भगति तत्त यहु मारग सकरा[3] ॥२॥

---

(१) एक लिपि और एक पुस्तक में 'मन" की जगह "नर" है। (२) न्यौछावर। (३) तंग।

(७४)

अवधू कामधेनु गहि राखी ।
बसि कीन्ही तब अमृत सरवै, आगैं चारि[1] न नाखी ॥टेक॥
पोखंता पहली उठि गरजै, पीछैं हाथि न आवै ।
भूखी भलैं दूध नित दूणाँ, यौं या धेन दुहावै ॥ १ ॥
ज्यौं ज्यौं षीण पड़ै त्यौं दूझै, मुकती मेल्या मारै ।
घाटा रोकि घेरि घर आणै, बाँधी कारज सारै ॥ २ ॥
सहजैं बाँधी कदै न छूटै, करम बंधन छुटि जाई ।
काटै करम सहज सूँ बाँधै, सहजैं रहै समाई ॥ ३ ॥
छिन छिन माहिं मनोरथ पूरै, दिन दिन होइ अनंदा ।
दादू सोई देखताँ पावै, कलि अजरावर कंदा ॥ ४ ॥

(७५)

जब घट परगट राम मिले ।
आतम मंगलचार चहूँ दिसि । जनम सुफल करि जीति चले ॥
भगती मुकति अभै करि राखे, सकल सरोमणि आप किये ॥
निरगुण राम निरंजन आपै, अजरावर उर लाइ लिये ॥
अपणे अंग संग करि राखे, निरभै नाँव निसाण बजावा ॥
अबिगत नाथ अमर अबिनासी, परम पुरिष निज सो पावा ॥
सोई बड़ भागी सदा सुहागी, परगट प्रीतम संगि भये ॥
दादू भाग बड़े बरबरि[2] करि, सो अजरावर जीति गये ॥

(७६)

रमैया यहु दुख सालै मोहिं ।
सेज सुहागनि प्रीति प्रेम रस, दरसन नाहीं तोहि ॥टेक॥
अंग प्रसंग एक रस नाहीं, सदा समीप न पावै ।
ज्यों रस में रस बहुरि न निकसै, ऐसैं होइ न आवै ॥ १ ॥
आतम लीन नहीं निस बासुर, भगति अखंडित सेवा ।
सनमुष सदा परस्पर नाहीं, ता थैं दुख मोहिं देवा ॥ २ ॥

---

(१) चारा । (२) बराबर ।

मगन गलित महा रस माता, तूँ है तब लग पीजै।
दादू जब लग अंत न आवै, तब लग देखण दीजै॥ ३॥

(७७)

गुरमुख पाइये रे, ऐसा ज्ञान बिचार।
समझि समझि समझ्या नहीं, लागा रंग अपार॥ टेक॥
जाणि जाणि जाण्या नहीं, ऐसी उपजै आइ।
बूझि बूझि बूझ्या नहीं, ढोरी[1] लाग्या जाइ॥ १॥
ले ले ले लीया नहीं, हौंस रही मन माहिं।
राखि राखि राख्या नहीं, मैं रस पीया नाहिं॥ २॥
पाइ पाइ पाया नहीं, तेजैं तेज समाइ।
करि करि कुछ कीया नहीं, आतम अंगि लगाइ॥ ३॥
खेलि खेलि खेल्या नहीं, सन्मुख सिरजनहार।
देखि देखि देख्या नहीं, दादू सेवग सार॥ ४॥

(७८)

बाबा गुरमुख ज्ञाना रे, गुरमुख ध्याना रे॥ टेक॥
गुरमुख दाता गुरमुख राता, गुरमुख गवना[2] रे।
गुरमुख भवन[3] गुरमुख छवना[4], गुरमुख रवना[5] रे॥ १॥
गुरमुख पूरा गुरमुख सूरा, गुरमुख बाणी रे।
गुरमुख देणाँ गुरमुख लेणाँ, गुरमुख जाणी रे॥ २॥
गुरमुख गहिबा गुरमुख रहिबा, गुरमुख न्यारा रे।
गुरमुख सारा गुरमुख तारा, गुरमुख पारा रे॥ ३॥
गुरमुख राया गुरमुख पाया, गुरमुख मेला रे।
गुरमुख तेजं गुरमुख सेजं, दादू खेला रे॥ ४॥

(७९)

मैं मेरे में हेरा, मधि माहैं पिव नेरा॥ टेक॥
जहँ अगम अनूप अवासा, तहँ महा पुरिष का बासा।
तहँ जानैगा जन कोई, हरि माहिं समाना सोई॥ १॥

---

(१) चौंप। (२) चाल। (३) घर। (४) छप्पर। (५) रमण।

अखंड जोति जहँ जागै, तहँ राम नाम ल्यौ लागै ।
तहँ राम रहे भरपूरा, हरि संगि रहै नहिं दूरा ॥ २ ॥
तिरबेणी तटि तीरा, तहँ अमर अमोलिक हीरा ।
उस हीरे सूँ मन लागा, तब भरम गया भौ भागा ॥ ३ ॥
दादू देख हरि पावा, हरि सहजैं संग लखावा ।
पूरण परम निधाना, निज निरखत हौं भगवाना ॥ ४ ॥

(८०)

मेरे मन लागा सकल करा, हम निस दिन हिरदै सो धरा ॥टेक॥
हम हिरदै माहैं हेरा, पिव परगट पाया नेरा ।
सो नेरे ही निज लीजै, तब सहजैं अमृत पीजै ॥ १ ॥
जब मन ही सूँ मन लागा, तब जोति सरूपी जागा ।
जब जोति सरूपी पाया, तब अंतर माहिं समाया ॥ २ ॥
जब चित्तहिं चित्त समाना, हम हरि बिन और न जाना ।
जाना जीवनि सोई, इब हरि बिन और न कोई ॥ ३ ॥
जब आतम एकै बासा, पर आतम माहिं प्रकासा ।
परकासा पीव पियारा, सो दादू मीत हमारा ॥ ४ ॥

॥ राग माली गौड़ी ॥

(८१)

गोब्यंदे नाँउ तेरा जीवन मेरा, तारण भौ पारा ।
आगे इहि नाँइ लागे, संतनि आधारा ॥टेक॥
कर बिचार तत सार, पूरण धन पाया ।
अखिल नाँउ अगम ठाँउ, भाग हमारे आया ॥ १ ॥
भगति मूल मुकति मूल, भौजल निसतरणा ।
भरम करम भंजना मैं, कलिविष सब हरणा ॥ २ ॥
सकल सिधि नवौ निधि, पूरण सब कामा ।
राम रूप तत अनूप, दादू निज नामा ॥ ३ ॥

(८२)

गोब्यंदे कैसैं तिरिये ।
नाव नाहीं खेव नाहीं, राम बिमुख मरिये ॥टेक॥
ज्ञान नाहीं ध्यान नाहीं, लै समाधि नाहीं ।
बिरहा बैराग नाहीं, पाँचौं गुण माहीं ॥ १ ॥
प्रेम नाहीं प्रीति नाहीं, नाँउ नाहीं तेरा ।
भाव नाहीं भगति नाहीं, काइर जिव मेरा ॥ २ ॥
घाट नाहीं बाट नाहीं, कैसे पग धरिये ।
वार नाहीं पार नाहीं, दादू बहु डरिये ॥ ३ ॥

(८३)

पिव आव हमारे रे ।
मिलि प्राण पियारे रे, बलि जाउँ तुम्हारे रे ॥टेक॥
सुनि सखी सयानी रे, मैं सेव न जानी रे । हौं भई दिवानी रे ॥
सुनि सखी सहेली रे, क्यौं रहूँ अकेली रे । हौं खरी दुहेली रे ॥
हौं करूँ पुकारा रे, सुन सिरजनहारा रे । दादू दास तुम्हारा रे ॥

(८४)

बाला सेज हमारी रे, तूँ आव हौं वारी रे ।
हौं दासी तुम्हारी रे ॥ टेक ॥
तेरा पंथ निहारू रे, सुन्दर सेज सँवारूँ रे । जियरा तुम पर वारूँ रे ॥
तेरा अँगना पेखौं रे, तेरा मुखड़ा देखौं रे । तब जीवन लेखौं रे ॥
मिलि सुखड़ा दीजै रे, यह लाहड़ा[1] लीजै रे । तुम देखें जीजै रे ॥
तेरे प्रेम की माती रे, तेरे रगड़े राती रे । दादू वारणै जाती रे ॥

(८५)

दरबार तुम्हारे दरदवंद पिव पीव पुकारै ।
दीदार दरूने दीजिये, सुनि खसम हमारे ॥टेक॥
तनहा[2] केतनि पीर है, सुनि तुँहीं निवारै ।
करम करीमा कीजिये, मिलि पीव पियारे ॥ १ ॥

---

(१) लाभ । (२) अकेला ।

सूल[१] सुलाकों[२] सौ सहूँ, तेग[३] तन मारै ।
मिलि साईं सुख दीजिये, तूँहीं तुँ सँभारै ॥ २ ॥
मैं सुहदा[४] तन सोखता[५], बिरहा दुख जारै ।
जिव तरसै दीदार कूँ, दादू न बिसारै ॥ ३ ॥

(८६)

सइयाँ तूँ है साहिब मेरा, मैं हूँ बंदा तेरा ॥ टेक ॥
बंदा बरदा[६] चेरा तेरा, हुकमी मैं बेचारा ।
मीराँ मिहरबान गोसाईं, तूँ सिरताज हमारा ॥ १ ॥
गुलाम तुम्हारा मुल्लाजादा[७], लौंडा घर का जाया ।
राजिक[८] रिजक[९] जीव तैं दीया, हुकम तुम्हारे आया ॥ २ ॥
सादिल बै[१०] हाजिर बंदा, हुकम तुम्हारे माहीं ।
जबहिं बुलाया तबहीं आया, मैं मैवासी नाहीं[११] ॥ ३ ॥
खसम हमारा सिरजनहारा, साहिब समरथ साईं ।
मीराँ मेरा मिहर दया करि, दादू तुम हीं ताईं ॥ ४ ॥

(८७)

मुझ थैं कुछ न भया रे, यहु यूँ हीं गया रे । पछितावा रह्या रे ॥
मैं सीस न दीया रे, भरि प्रेम न पीया रे । मैं क्या कीया रे ॥
हौं रंग न राता रे, रस प्रेम न माता रे । नहिं गलित गाता[१२] रे ॥
मैं पीव न पाया रे, किया मन का भाया रे । कुछ होइ न आया रे ॥
हाँ रहौं उदासा रे, मुझ तेरी आसा रे । कहे दादूदासा रे ॥

(८८)

मेरा मेरा छाडि गँवारा, सिर पर तेरे सिरजनहारा ।
अपने जीव बिचारत नाहीं, क्या ले गइला[१३] बंस तुम्हारा ॥टेक॥

---

(१) दर्द । (२) सूराख, जख्म । (३) तलवार । (४) मस्त फकीर, अवधूत । (५) बदन जला हुआ । (६) गुलाम, दास । (७) मुल्ला का जना । (८) अन्नदाता । (९) जीविका । (१०) जान दिल से बिका हुआ । (११) मुझे कोई दूसरा ठिकाना नहीं है । (१२) जिसका शरीर (बिरह से) गल नहीं गया । (१३) एक लिपि में गइला (=गया) की जगह गहिला (=मूर्ख) है ।

तब मेरा कत[1] करता नाहीं, आवत है हँकारा[2]।
काल चक्र सौं खरी परी रे, बिसरि गया घर बारा ॥ १ ॥
जाइ तहाँ का संयम कीजे, बिकट पंथ गिरधारा।
दादू रे तन अपना नाहीं, तौ कैसैं भया संसारा ॥ २ ॥

(८९)

दादूदास पुकारै रे, सिर काल तुम्हारे रे।
सर साँधे[3] मारै रे ॥ टेक ॥
जम काल निवारी रे, मन मनसा मारी रे।
यहु जनम न हारी रे ॥ १ ॥
सुख नींद न सोई रे, अपणा दुख रोई रे।
मन मूल न खोई रे ॥ २ ॥
सिरि भार न लीजी रे, जिसका तिस कूँ दीजी रे।
इब ढील न कीजी रे ॥ ३ ॥
यहु औसर तेरा रे, पंथी जागि सबेरा रे।
सब बाट बसेरा रे ॥ ४ ॥
सब तरवर छाया रे, धन जोबन माया रे।
यहु काची काया रे ॥ ५ ॥
इस भरम न भूली रे, बाजी देखि न फूली रे।
सुख सागर झूली रे ॥ ६ ॥
रस अमृत पीजी रे, बिष का नाँउ न लीजी रे।
कह्या सो कीजी रे ॥ ७ ॥
सब आतम जाणी रे, अपणा पीव पिछाणी रे।
यहु दादू बाणी रे ॥ ८ ॥

(९०)

पूजौं पहिली गणपति राइ, पड़ि हौं पाँऊँ चरणौं धाइ।
आगे होइ करि तीर लगावै, सहजैं अपणे बैन सुनाइ ॥टेक ॥

(१) मेरा कृत अर्थात् मेरा किया हुआ। (२) पुकार, आवाज। (३) तीर साध कर।

कहौं कथा कुछ कही न जाइ, इक तिल में ले सबै समाइ ।
गुण हुँ गहीर धीर तन देही, ऐसा समरथ सबै सुहाइ ॥१॥
जिसि दिसि देखूँ वोही है रे, आप रह्या गिर तरवर छाइ ।
दादू रे आगे क्या होवै, प्रीति पिया कर जोड़ि लगाइ ॥२॥

(९१)

नीको धन हरि करि मैं जान्यौं, मेरे अषई[1] ओई ।
आगे पीछे सोई है रे, और न दूजा कोई ॥ टेक ॥
कबहुँ न छाडौं संग पिया को, हरि के दरसन मोही ।
भाग हमारे जे हौं पाऊँ, सरनै आयौं तोही ॥ १ ॥
आनँद भयौ सखी जिय मेरे, चरण कमल कूँ जोई ।
दादू हरि कौ बावरो रे, बहुरि बियोग न होई ॥ २ ॥

(९२*)

बाबा मरदे मरदाँ गोइ, ए दिल पाक करदः दोइ ॥ टेक ॥
तर्क दुनियाँ दूर कर दिल, फ़र्ज फ़ारिग होइ ।
पैवसत परवरदिगार सूँ, आकिलाँ सिर सोइ ॥ १ ॥
मनि मुरदः हिर्स फ़ानी, नफ़्स रा पैमाल ।
बदी रा बरतर्फ करदः, नाँव नेकी ख्याल ॥ २ ॥
ज़िन्दगानी मुरदः बाशद, कुंज क़ादिर कार ।
तालिबाँ रा हक्क़ हासिल, पासबानी यार ॥ ३ ॥
मर्दि मर्दां सालिकाँ, सरि आशिक़ाँ सुलतान ।
हज़ूरी हुशियार दादू, इहै गो मैदान ॥ ४ ॥

---

(१) सर्वस्व । *शब्द ९२—टेक—मर्दों में मर्द उसी को कहना चाहिये जिसने दुई (द्वैत भाव) को निकाल कर अपने मन को शुद्ध कर लिया है ।

कड़ी १—सिद्धान्त बुद्धिमानों का यह है कि संसारी परपंच को दिल से हटाकर और कर्मों का लेखा चुका कर मालिक में लग जाना ।

कड़ी २—और आपा को मार कर, तृष्ना को हटाकर, मन का मर्दन कर, बदी को बहाकर, नेकी पर ध्यान रखना ।

कड़ी ३—और स्वार्थ से मर कर परमार्थ में जीना, ऐसे प्रेमी खोजियों का प्रीतम भाग बढ़ाता और उनकी आप रखवाली करता है ।

(९३)

ये सब चरित तुम्हारे मोहनाँ, मोहे सब ब्रह्मंड खंडा।
मोहे पवन पाणी परमेसुर, सब मुनि मोहे रबि चंदा ॥टेक॥
साइर सप्त मोहे धरणी धरा, अष्ट कुली पर्बत मेर मोहे।
तीन लोक मोहे जगजीवन, सकल भवन तेरी सेव सोहे ॥१॥
सिव बिरञ्च नारद मुनि मोहे, मोहे सुर सब सकल देवा।
माहे इंद्र फुनिग[1] फुनि मोहे, मुनि मोहे तेरी करत सेवा ॥२॥
अगम अगोचर अपार अपरम्परा, को यहु तेरा चरित न जाने।
ये सोभा तुमकौं सोहै सुन्दर, बलि बलि जाऊँ दादू न जाने ॥३॥

(९४)

ऐसा रे गुरे ज्ञान लखाया। आवै जाइ सो दृष्टि न आया ॥टेक॥
मन थिर करौंगा नाद भरौंगा। राम रमौंगा रसमाता ॥१॥
अधर रहौंगा करम दहौंगा। एक भजौंगा भगवंता ॥२॥
अलख लखौंगा अकथ कथौंगा। मही[2] मथौंगा गोब्यंदा ॥३॥
अगह गहौंगा अकह कहौंगा। अलह लहौंगा खोजंता ॥४॥
अचर चरौंगा अजर जरौंगा। अतिर तिरौंगा आनंदा ॥५॥
यहु तन तारौं बिषै निवारौं। आप उबारौं साधंता ॥६॥
आऊँ न जाऊँ उनमनि लाऊँ। सहज समाऊँ गुणवंता ॥७॥
नूर पिछाणौं तेजहि जाणौं। दादू जोतिहि देखंता ॥८॥

(९५)

बंदे हाज़िराँ हजूर वे, अलह आले नूर वे।
आशिक़ाँ रह सिदक़ स्याबत, तालिबाँ भरपूर वे[3] ॥ टेक ॥
औजूद में मौजूद है, पाक परवरदिगार वे।
देखले दीदार कूँ, गैब गोता मारि वे ॥ १ ॥

कड़ी ४— सतगुर ही मर्दों में मर्द और भक्त जन के सिरताज हैं, वे हर दम भगवंत के समीप गेंद खेलते हैं और सदा सावधान हैं।

(१) साँप। (२) मट्ठा। -पं० चं० प्र० की पुस्तक में "मही" की जगह "एक ही" है।
(३) भक्तों का पंथ सत्य और स्थिर है और उनका प्रीतम सर्वसमरथ है।

मौजूद मालिक तख्त ख़ालिक़, आशिक़ाँ रह ऐन[१] वे ।
गुज़र कर दिल मग्ज़ भीतर, अजब है यहु सैन वे ॥ २ ॥
अर्श ऊपर आप बैठा, दोस्त दाना यार वे ।
खोज कर दिल क़बज़ करले, दरूने दीदार वे ॥ ३ ॥
हुशियार हाज़िर चुस्त करदम, मीराँ मिहरबान वे ।
देखिले दरहाल दादू, आप है दीवान वे ॥ ४ ॥

(८६)

निर्मल तत निर्मल तत, निर्मल तत ऐसा ।
निर्गुण निज निधि निरंजन, जैसा है तैसा ॥ टेक ॥
उत्पति आकार नाहीं, जीव नाहीं काया ।
काल नाहीं कर्म नाहीं, रहिता राम राया ॥ १ ॥
सीत नाहीं घाम नाहीं, धूप नाहीं छाया ।
बाव[२] नाहीं बरन नाहीं, मोह नाहीं माया ॥ २ ॥
धरणी आकास अगम, चंद सूर नाहीं ।
रजनी निस दिवस नाहीं, पवना नहिं जाहीं ॥ ३ ॥
किरतम घट कला नाहीं, सकल रहित सोई ।
दादू निज अगम निगम, दूजा नहिं कोई ॥ ४ ॥

॥ राग कल्यान ॥

(८७)

मन मेरे कछु भी चेत गँवार ।
पीछे फिर पछितावैगा रे, आवै न दूजी बार ॥टेक॥
काहे रे मन भूलो फिरत है, काया सोच विचार ।
जिन पंथूँ चलना है तुझ कूँ, सोई पंथ संवारि ॥ १ ॥
आगैं बाट जु बिषम है मन रे, जैसी खाँडे की धार ।
दादू दास तूँ साईं सौं सूत करि, कूड़े काम निवार ॥ २ ॥

---

(१) भक्तों की राह नैन नगर हो कर चलती है। (२) एक लिपि और एक पुस्तक में "बान" है।

(९८)

जग सौं कहा हमारा । जब देख्या नूर तुम्हारा ॥ टेक ॥
परम तेज घर मेरा । सुख सागर माहिं बसेरा ॥ १ ॥
झिलिमिलि अति आनंदा । पाया परमानंदा ॥ २ ॥
जोति अपार अनंता । खेलैं फाग बसंता ॥ ३ ॥
आदि अंति असथाना । दादू सो पहिचाना ॥ ४ ॥

॥ राग कान्हड़ा ॥

(९९)

दे दरसन देखन तेरा, तौ जिय जक[1] पावै मेरा ॥ टेक ॥
पिय तूँ मेरी बेदन जानै, हौं कहा दुराऊँ[2] छानै[3] ।
मेरा तुम देखें मन मानै ॥ १ ॥
पिय करक कलेजे माहीं, सो क्योंहीं निकसै नाहीं ।
पिय पकरि हमारी बाँहीं ॥ २ ॥
पिय रोम रोम दुख सालै, इन पीरूँ पिंजर जालै[4] ।
जिय जाता क्यूँहीं बालै ॥ ३ ॥
पिय सेज अकेली मेरी, मुझ आरति मिलणै तेरी ।
धन दादू वारी फेरी ॥ ४ ॥

(१००)

आव सलोने देखन दे रे । बलि बलि जाउँ बलिहारी तेरे ॥टेक॥
आव पिया तूँ सेज हमारी । निसदिन देखौं बाट तुम्हारी ॥१॥
सब गुण तेरे औगुण मेरे । पीव हमारी आहि न ले रे ॥२॥
सब गुणवंता साहिब मेरा । लाड गहेला दादू केरा ॥३॥

(१०१)

आव पियारे मीत हमारे । निस दिन देखौं पाँव तुम्हारे ॥टेक॥
सेज हमारी पीव सँवारी । दासि तुम्हारी सो धन वारी ॥ १ ॥
जे तुझ पाऊँ अंगि लगाऊँ । क्यूँ समझाऊँ वारण जाऊँ ॥ २ ॥
पंथ निहारू बाट सँवारू । दादू तारू तन मन वारू ॥ ३ ॥

---

(१) चैन । (२) छिपाऊँ । (३) छिपा । (४) इस दर्द में बदन जला जाता है ।

(१०२)

आव वे सजणाँ आव, सिर पर धरि पाँव।
जानीं मैंडा जिंद असाडे।
तूँ रावें दा राव वे सजणाँ आव ॥ टेक ॥
इत्थाँ उत्थाँ जित्थाँ कित्थाँ, हौं जीवाँ तो नाल वे।
मीयाँ मैंडा आव असाडे, तूँ लालों सिर लाल वे सजणाँ आव ॥१॥
तन भी डेवाँ मन भी डेवाँ, डेवाँ प्यंड पराण वे।
सच्चा साँईं मिलि इथाँईं। जिन्द कराँ कुरबाण वे सजणाँ आव ॥२॥
तूँ पाकौं सिर पाक वे सजणाँ तूँ खूबौं सिर खूब।
दादू भावे सजणाँ आवे। तूँ मीठा महबूब वे सजणाँ आव ॥३॥

(१०३)

दयाल अपने चरनन मेरो, चित लगाहु नीकैं ही करी ॥टेक॥
नखसिख सुरति सरीर, तूँ नाँव रहौं भरी ॥ १ ॥
मैं अजाण मतिहीण, जम की पासी[1] थैं रहत हौं डरी ॥ २ ॥
सबै दोष दादू के दूर करि, तुमही रहो हरी ॥ ३ ॥

(१०४)

मनमति हीन धरै मूरिख मन।
कछु समझत नाहीं ऐसैं जाइ जरै ॥ टेक ॥
नाँव बिसारि और चित राखै, कूड़े काज करै।
सेवा हरि की मनहुँ न आनै, मूरिख बहुरि मरै ॥ १ ॥
नाँव संगम करि लीजे प्राणी, जम थैं कहा डरै।
दादू रे जे राम सँभालै, सागर तीर तिरै ॥ २ ॥

(१०५)

पीव तें अपने काज सँवारे।
कोई दुष्ट दीन कौं मारण, सोई गहि तैं मारे ॥ टेक ॥
मेर समान ताप तन व्यापै, सहजैं ही सो टारे।
संतन कौं सुखदाई माधो, बिन पावक फँध जारे ॥ १ ॥

---

(१) फांसी।

तुम थैं होइ सबै बिधि समरथ, आगम सबै बिचारे।
संत उबारि दुष्ट दुख दीन्हा, अंध कूप में डारे॥ २॥
ऐसा है सिर खसम हमारे, तुम जीते खल हारे।
दादू सौं ऐसैं निबहिये, प्रेम प्रीति पिव प्यारे॥ ३॥

(१०६)

काहू तेरा मरम न जाना रे, सब भये दीवाना रे॥ टेक॥
माया के रस राते माते, जगत भुलाना रे।
को काहू का कह्या न मानै, भये अयाना रे॥ १॥
माया मोहे मुदित मगन, खानखानाँ रे।
बिषिया रस अरस परस, साच ठाना रे॥ २॥
आदि अंत जीव जंत, क्रिया पयाना रे।
दादू सब भरम भूले, देखि दाना रे॥ ३॥

(१०७)

तूँ हीं तूँ गुरदेव हमारा। सब कुछ मेरे नाँव तुम्हारा॥टेक॥
तुम हीं पूजा तुम हीं सेवा। तुम हीं पाती तुम हीं देवा॥१॥
जोग जज्ञ तूँ साधन जापं। तुम हीं मेरे आपै आपं॥२॥
तप तीरथ तूँ ब्रत असनाना। तुम हीं ज्ञाना तुम हीं ध्याना॥३॥
बेद भेद तूँ पाठ पुराना। दादू के तुम प्यंड पुराना॥४॥

(१०८)

तूँ हीं तूँ आधार हमारे। सेवग सुत हम राम तुम्हारे॥टेक॥
माइ बाप तूँ साहिब मेरा। भगति-हीन मैं सेवग तेरा॥१॥
मात पिता तूँ बंधव भाई। तुम हीं मेरे सजन सहाई॥२॥
तुम हीं तातं तुम हीं मातं। तुम हीं जातं तुम ही नातं॥३॥
कुल कुटंब तूँ सब परिवारा। दादू का तूँ तारणहारा॥४॥

(१०९)

नूर नैन भरि देखण दीजे। अमी महा रस भरि भरि पीजे॥टेक॥
अमृत धारा वार न पारा। निर्मल सारा तेज तुम्हारा॥१॥

अजर जरंता अमी झरंता । तार अनंता बहु गुणवंता ॥२॥
झिलि मिलि साईं जोति गुसाईं । दादू माहीं नूर रहाईं ॥३॥

(११०)

ऐन एक सो मीठा लागै । जोति सरूपी ठाढ़ा आगै ॥ टेक ॥
झिलिमिलि करणा अजरा जरणा । नीझर झरणा तहँ मन धरणा ॥
निज निरधारं निर्मल सारं । तेज अपारं प्राण अधारं ॥
अगहा गहणाँ अकहा कहणाँ । अलहा लहणाँ तहाँ मिलि रहणाँ ॥
निरसँध नूरं सकल भरपूरं । सदा हजूरं दादू सूरं ॥

(१११)

तौ काहे की परवाह हमारे । राते माते नाँव तुम्हारे ॥टेक॥
झिलिमिलि झिलिमिलि तेज तुम्हारा । परगट खेलै प्राण हमारा ॥
नूर तुम्हारा नैनों माहीं । तन मन लागा छूटै नाहीं ॥
सुख का सागर वार न पारा । अमी महा रस पीवणहारा ॥
प्रेम मगन मतवाला माता । रङ्गि तुम्हारे जन दादू राता ॥

॥ राग अड़ाना ॥

(११२)

भाई रे ऐसा सतगुर कहिये । भगति मुकति फल लहिये ॥टेक॥
अबिचल अमर अबिनासी । अठ सिधि नौ निधि दासी ॥१॥
ऐसा सतगुर राया । चारि पदारथ पाया ॥२॥
अमी महा रस माता । अमर अभै पद दाता ॥३॥
सतगुर त्रिभुवन तारै । दादू पार उतारै ॥४॥

(११३)

भाई रे भानि घड़ै गुर मेरा । मैं सेवग उस केरा ॥टेक॥
कंचन करिले काया । घड़ि घड़ि घाट निपाया[१] ॥१॥
मुख दरपण माहिं दिखावै । पिव परगट आणि मिलावै ॥२॥

---

(१) सुलझाया, शुद्ध किया—पं० चं० प्र० ।

सतगुर साचा धोवै । तौ बहुरि न मैला होवै ॥३॥
तन मन फेरि सँवारै । दादू कर गहि तारै ॥४॥

(११४)

भाई रे तेन्हौं रूड़ौ[1] थाये[2] । जे गुरमुख मारग जाये ॥टेक॥
कुसंगति परिहरिये । सत संगति अनुसरिये ॥ १ ॥
काम क्रोध नहिं आणै । बाणी ब्रह्म बखाणै ॥ २ ॥
बिषिया थैं मन वारै । ते आपणपौ तारै ॥ ३ ॥
बिष मूकी[3] अमृत लीधौ । दादू रूड़ौ कीधौ ॥ ४ ॥

(११५)

बाबा मन अपराधी मेरा । कह्या न मानै तेरा ॥ टेक ॥
माया मोह मद माता । कनक कामिनी राता ॥ १ ॥
काम क्रोध अहंकारा । भावै बिषे बिकारा ॥ २ ॥
काल मीच नहिं सूझै । आतम राम न बूझै ॥ ३ ॥
समरथ सिरजन हारा । दादू करै पुकारा ॥ ४ ॥

(११६)

भाई रे यूँ बिनसै संसारा । काम क्रोध अहंकारा ॥ टेक ॥
लोभ मोह मैं मेरा । मद मंछर बहुतेरा ॥ १ ॥
आपा पर अभिमाना । केता गरब गुमाना ॥ २ ॥
तीन तिमिर नहिं जाहीं । पंचौं के गुण माहीं ॥ ३ ॥
आतम राम न जाना । दादू जगत दिवाना ॥ ४ ॥

(११७)

भाई रे तब का कथसि गियाना । जब दूसर नाहीं आना ॥टेक॥
जब तत्त हिं तत्त मिलाना । जहँ की तहँ ले साना ॥ १ ॥
जहँ का तहाँ मिलावा । ज्यूँ था त्यूँ होइ आवा ॥ २ ॥
संधै संधि मिलाई । जहाँ तहाँ थिति पाई ॥ ३ ॥
सब अँग सब हीं ठाहीं । दादू दूसर नाहीं ॥ ४ ॥

---

(१) उत्तम । (२) होता है । (३) छोड़ कर ।

॥ राग केदारा ॥

(११८)[1]

मारा नाथ जी, तारो नाम लेवाड़ रे।
राम रतन हृदया मों राखे।
मारा वाहला जी, विषया थी वारे ॥ टेक ॥
वाहला वाणी ने मन माहें मारे। चिंतवन तारो चित्त राखे ॥
स्रवण नेत्र आ इंद्री ना गुण। मारा माहेला मल ते नाखे ॥
वाहला जीवाड़े तो राम रमाड़े। मनें जीव्याँ नो फल ये आपे ॥
तारा नाम बिना हूँ ज्याँ ज्याँ बंध्यो। जन दादू ना बधन कापे ॥

(११९)

अरे मेरा सदा सँगाती रे राम, कारण तेरे ॥ टेक ॥
कंथा पहरू भसम लगाऊँ, बैरागिन ह्वै ढूँढ़ूँ रे राम ॥ १ ॥
गिरवर बासा रहूँ उदासा, चढ़ि सिर मेर पुकारू रे राम ॥ २ ॥
यहु तन जालूँ यहु मन गालूँ, करवत सीस चढ़ाऊँ रे राम ॥ ३ ॥
सीस उतारू तुम पर वारू, दादू बलि बलि जाइ र राम ॥ ४ ॥

(१२०)

अरे मेरा अमर उपावणहार रे। खालिक आसिक तेरा ॥टेक॥
तुम सौं राता तुम सौं माता। तुम सौं लागा रंग रे खालिक ॥
तुम सौं खेला तुम सौं मेला। तुम सौं प्रेम सनेह रे खालिक ॥
तुम सौं लेणा तुम सौं देणा। तुमहीं सौं रत होइ रे खालिक ॥
खालिक मेरा आसिक तेरा। दादू अनत न जाइ रे खालिक ॥

(१२१)

अरे मेरा समरथ साहिब रे अल्ला, नूर तुम्हारा ॥ टेक ॥
सब दिसि देवै सब दिसि लेवै। सब दिसि वार न पार रे अल्ला ॥

---

(१) अर्थ शब्द ११८—मेरे नाथ जी, मुझको अपना नाम लेने की बुद्धि दो जिस करके राम रत्न मैं हृदय में रक्खूँ। मेरे प्यारे जी, बिषयों से मुझे बचाये रक्खो ॥ टेक ॥ प्यारे, मेरी बाणी और मन में मेरा चित्त तेरा ही चिंतवन रक्खै। सुनना देखना तो इंन्द्रियों का गुण है, ते (तेरा चिंतवन) मेरे अदर (मन) का मैल दूर करै ॥ १ ॥ प्यारे, जो तू मुझे जिलाये तो राम ही के साथ खेलूँ, मुझे जीने का फल यही दे। तेरे नाम बिना मैं जहाँ जहाँ बाँधा गया तहाँ दादू जैसे जन के (तेरा चिंतवन) बंधन काटे ॥ २ ॥—पं० चं० प्र०।

सब दिसि वक्ता सब दिसि सुरता । सब दिसि देखणहार रे अल्ला ॥
सब दिसि करता सब दिसि हरता । सब दिसि तारणहार रे अल्ला ॥
तूँ है तैसा कहिये ऐसा । दादू आनँद होइ रे अल्ला ॥

(१२२)१

हालु असाँ जो लाल रे, तोखे सब मालूम रे ॥टेक॥
मंझें खामा मंझें बराँ अला, मंझें लागी बाहि रे ।
मंझें मूँ रे मचु थियो अला, कहिं दरि करयाँ दाहँ रे ॥ १ ॥
बिरह कसाई मूँ घरि अला, मंझें बरे बाहि रे ।
सीखूँ करे कबाब जियँ अला, इयँ दादू जे हियाँव रे ॥ २ ॥

(१२३)

पीव जी सेतीं नेह नवेला । अति मीठा मोहिं भावै रे ॥
निस दिन देखौं बाट तुम्हारी । कब मेरे घरि आवै रे ॥
आइ बणी है साहिब सेतीं । तिस बिन तिल क्यौं जावै रे ॥
दासी कौं दरसन हरि दीजै । अब क्यों आप छिपावै रे ॥
तिल तिल देखौं साहिब मेरा । त्यौं त्यौं आनँद अंगि न मावै रे ॥
दादू ऊपरि दया करी । कब नैनहुं नैन मिलावै रे ॥

(१२४)१

पीव घरि आवै रे, बेदन मारी जाणी रे ।
बिरह सँताप कोण पर कीजै, कहूँ छूँ दुख नी कहाणी रे ॥टेक॥

---

(१) अर्थ सिन्धी शब्द नं० १२२—हमारी जो दशा है हे प्यारे तुम सब जानते हो ॥ टेक ॥ हाय [अला] मैं अंतर में [मंझ] जल रहा हूँ [खामाँ] मैं अंतर में बल रहा हूँ [वराँ], मेरे अंतर में आग सुलग रही है । मेरे [मूँ] अंतर में लवर [मचु] उठ रही है [थियो], किस के द्वारे पर पुकार [दाहँ] करूँ ॥ १ ॥ बिरह रूपी कसाई मेरे घर में धसा है, मेरे अंतर में आग लगी है । जैसे [जियँ] कबाब को सीख़चे पर भूनते हैं तैसे [इयँ] दादू के कलेजे [हियाँव] की दशा है ।

(१) अर्थ गुजराती शब्द १२४—मेरी पीड़ा को जान कर पिया मेरे घर आवै तो उससे अपने दुख की कहानी कहूँ और किससे अपनी बिरह बिथा कहूँ ॥ टेक ॥ हे मेरे अंतर्जामी स्वामी तुझ बिन मैं मुरझा रही हूँ । मेरे घर क्यों नहीं आता रात बीती जाती है ॥ १ ॥ तेरा आसरा देखते देखते बिरहन थक गई, आँखों का पानी सूख गया, वह तुझ बिन दीन दुखी हो रही है, और तू उसका साथी तन रहा है ॥ २ ॥

अंतरजामी नाथ मारो, तुज बिण हूँ सीदाणी रे।
मंदिर मारे केम न आवै, रजनी जाइ बिहाणी रे ॥ १ ॥
तारी बाट हूँ जोइ थाकी, नेण निखूट्या पाणी रे।
दादू तुज बिण दीन दुखी रे, तूँ साथी रह्यो छे ताणी रे ॥ २ ॥

(१२५)१

कब मिलसी पीव गृह छाती, हूँ औराँ संग मिलाती ॥टेक॥
तिसज लागी तिसही केरी, जनम जनम नो साथी।
मीत हमारा आव पियारा, ताहरा रंग नी राती ॥ १ ॥
पीव बिना मने नींद न आवे, गुण ताहरा लै गाती।
दादू ऊपर दया मया करि, ताहरे वारणें जाती ॥ २ ॥
तलफि मरौं कै झूरि मरौं रे, कै हौं विरही रोइ मरौं रे।
टेरि कह्या मैं मरण गह्या रे, दादू दुखिया दीन भया रे ॥ ३ ॥

(१२६)२

माहरा रे वाहला ने काजे, रिदै जोवा ने हूँ ध्यान धरूं।
आकुल थाये प्राण माहरा, कोने कही पर करूँ ॥ टेक ॥
सँभार्‍यो आवे रे वाहला, वेहला एहौं जोइ ठरूं।
साथी जो साथै थइनि, पेली तीरे पार तरूँ ॥ १ ॥

---

(१) अर्थ गुजराती शब्द १२५—पिया कब घर मिलेंगे कि औरों से भेंटना छोड़ कर उनको गले लगाऊँ ॥ टेक ॥ उसी की प्यास लग रही है जो मेरा जन्म जन्म का सँगाती है, हे मेरे प्यारे मीत आओ मैं तेरे ही रंग में रंगी हूँ ॥ १ ॥ हे पिया तेरे बिन मुझे नींद नहीं आती तेरे ही गुन गाती हूँ, मुझ पर प्यार से दया कर मैं तुझ पर बल बल [बारणे] जाती हूँ ॥ २ ॥ (पं० चं० प्र० के पाठ में "बारणे" = "दरवाज़ा" लिखा है जो यहाँ ठीक नहीं बैठता)।

(२) अर्थ गुजराती शब्द १२६—अपने प्रीतम के दर्शन के लिगे हृदय में उसका ध्यान धरती हूँ, मेरा प्राण व्याकुल हो रहा है सो उस व्याकुलता को किसे कह कर दूर [पर] करूँ ॥ टेक ॥ प्रीतम याद आता है [सँभार्‍यो] उसको जल्दी देख कर शांत हूँ, और अपने संगी का संग गहिकर पल्ली पार हो जाऊँ ॥ १ ॥ बिना [पाखे] प्रीतम के दिन कठिनता से कटता है घड़ी बरस के समान हो रही है उसे कैसे बिताऊँ हरि का गुण गाता हुआ पूरे स्वामी ही को ब्याहूँ ॥ २ ॥ [पं० च० प्र० ने "घड़ी बरसाँ, सौं केम भरूँ" के अर्थ यों लिखे हैं—घड़ी-घड़ी करके बरसैं कैसे बिताऊँ]।

पीव पाखे दिन दुहेला जाये, घड़ी बरसाँ सौं केम भरूँ।
दादू रे जन हरि गुण गाताँ, पूरण स्वामी ते वरूँ॥ २ ॥

(१२७)

मरिये मीत बिछोहे, जियरा जाइ अँदोहे[1] ॥ टेक ॥
ज्यौं जल बिछुरैं मीना, तलफि तलफि जिव दीन्हा।
यौं हरि हम सौं कीन्हा ॥ १ ॥
चात्रिग मरै पियासा, निस दिन रहै उदासा।
जीवै किहिं बेसासा ॥ २ ॥
जल बिन कँवल कुमिलावै, प्यासा नीर न पावै।
क्यौंकर त्रिषा बुझावै ॥ ३ ॥
मिलि जिनि बिछुरो कोई, बिछुरें बहु दुख होई।
क्यौं करि जीवै जन सोई ॥ ४ ॥
मरणा मीत सुहेला, बिछुरन खरा दुहेला।
दादू पीव सौं मेला ॥ ५ ॥

(१२८)

पीव हौं कहा करौं रे, पाँइ परौं कै प्राण हरौं रे।
अब हौं मरणै नाहिं डरौं रे ॥ टेक ॥
गालि मरौं के जालि मरौं रे, कै हौं करवत सीस धरौं रे ॥१॥
घाइ[2] मरौं के खाइ मरौं रे, कै हौं कतहूँ जाइ मरौं रे ॥२॥
तलफि मरौं कै झूरि मरौं रे, क हौं बिरही रोइ मरौं रे ॥३॥
टेरि कह्या मैं मरण गह्या रे, दादू दुखिया दीन भया रे ॥४॥

(१२९)[3]

वाहलाहूँ जानूँ जे रँग भरि रमिये, मारो नाथ निमिष नहिं मेलूँ रे।
अंतरजामी नाह न आवे, ते दिन आव्यो छेलो रे ॥ टेक ॥

---

(१) कष्ट। (२) चोट। (३) अर्थ गुजराती शब्द १२९—प्यारे मैं चाहती हूँ कि तुम से भरपेट खेलूँ, अपने स्वामी को छिन भर भी न छोड़ूँ। जिस दिन अंतरजाम पति न आवे उस दिन को मेरा अंत जानो अर्थात् प्रान तज दूँगी ॥ टेक ॥

वाहला सेज हमारी ऐकलड़ी रे, तहँ तुझ ने केम न पामूँ रे ।
आ दत्त अमारो पूरबलो रे, तेतो आव्यो सामो रे ॥१॥
वाहला मारा रिदया भीतरि केम न आवे, मने चरण बिलंबन दीजे रे ।
दादू तौ अपराधी तारो, नाथ उधारी लीजें रे ॥२॥

(१३०)१

तूँ छे मारो राम गुसाईं, पालवे तारे बाँधी रे ।
तुझ बिना हूँ आँतरे रवल्यो, कीधी कमाई लीधी रे ॥ टेक ॥
जीऊँ जे तिल हरी बिना रे, देहड़ी दुखैं दाधो रे ।
एणैं आतारैं काँइ न जाणूँ, माथै टाकर खाधी रे ॥ १ ॥
छुटको मारो केहि परि थाशे, सक्यो न राम अराधी रे ।
दादू ऊपर दया मया करि, हूँ तारो अपराधी रे ॥ २ ॥

(१३१)२

तूँही तूँ तन माहरे गुसाईं, तूँ बिना तूँ केनें कहौं रे ।
तूँ त्याँ तूँही थई रह्यो रे, सरन तुम्हारी जाइ रहौं रे ॥ टेक ॥
तन मन माहैं जोइये त्याँ तूँ, तुझ दीठाँ हूँ सुख लहौं रे ।
तूँ त्याँ जे तिल तजी रहौं रे, तेम तेम त्याँ हूँ दुख सहौं रे ॥१॥

[इस कड़ी का अर्थ पं० चन्द्रिका प्रसाद ने यों लगाया है—"अंतर्जामी पीव तौ आया नहीं वह आखिरी दिन आ गया"] प्यारे मेरी सेज सूनी है वहाँ तुमको क्यों नहीं पाती—यह मेरे पिछले कर्मों का फल है जो सामने आया ॥ १ ॥ प्यारे मेरे हृदय में क्यों नहीं आता मुझे अपने चरणों का सहारा दे [पं० चं० प्र० ने "बिलंबन" - अवलंब या सहारा के बदले "विलंब न" = देर न लगाइये लिखा है । यदि "दीजे" की जगह "कीजे" होता तो यह अधिक बैठता] दादू तुम्हारा गुनहगार है सो हे स्वामी तुमहीं उद्धार करो ॥ २ ॥

(१) अर्थ गुजराती शब्द १३०—हे राम तू मेरा मालिक है और मैं तेरे पल्ले बँधा हूँ तुझ बिन मैं ने इधर उधर भटका खाया और अपनी करनी का का फल पाया ॥ टेक ॥ जै घड़ी मैं हरि बिन जीता हूँ मेरा शरीर कष्ट से जलता है [पं० चं० प्र० के पाठ में "जे तिल" की जगह "जेटला" = जितना है] इस जन्म में मैंने कुछ न जाना और सिर पर चोट खाई ॥ १ ॥ मैं राम की आराधना न कर सका मेरा छुटकारा कैसे होगा [पं० चं० प्र० के पाठ में "केहि परि" की जगह "क्यारे" = कब है] दादू तेरा गुनहगार है उस पर दया मया कर ॥ २ ॥

(२) अर्थ गुजराती शब्द १३१—हे स्वामी तूँ ही मेरे तन में है तेरे सिवाय तूँ किसे कहूँ । तूँ जहाँ है वहीं है तेरो शरण में जाकर रहूँगा ॥ टेक ॥

तुम बिन माहरो कोई नहीं रे, हूँ तो ताहरा बिन वहौं रे।
दादू रे जन हरि गुण गाताँ, मैं मेल्यो माहरौ मैं हूँ रे ॥२॥

(१३२)

हमारे तुमहीं हौ रखपाल।
तुम बिन और नहीं कोइ मेरे, भौ दुख मेटणहार ॥टेक॥
बैरी पंच निमष नहिं न्यारे, रोकि रहे जम काल।
हा जगदीस दास दुख पावै, स्वामी करो सँभाल ॥ १ ॥
तुम बिन राम दहैं ये दुंदर, दसौं दिसा सब साल।
देखत दीन दुखी क्यों कीजे, तुम हौ दीनदयाल ॥ २ ॥
निर्भय नाँव हेत हरि दीजे, दरसन परसन लाल।
दादू दीन लीन करि लीजै, मेटहु सबै जँजाल ॥ ३ ॥

(१३३)

ये मन माधौ बरजि बरजि।
अति गति बिषिया सौं रत, उठत जु गरजि गरजि ॥टेक॥
बिषै बिलास अधिक अति आतुर, बिलसत संक न मानै।
खाइ हलाहल मगन माया में, बिष अमृत करि जानै ॥ १ ॥
पंचन के सँग बहत चहूँ दिसि, उलटि न कबहूँ आवै।
जहँ जहँ काल जाइ तहाँ तहँ, मृगजल ज्यों मन धावै ॥ २ ॥
साध कहैं गुर ज्ञान न मानै, भव भजन न तुम्हारा।
दादू के तुम सजन सहाई, कछु न बसाइ हमारा ॥ ३ ॥

(१३४)

हाँ हमारे जियरा राम गुण गाइ, येहो बचन बिचारी मानि ॥टेक॥
केती कहूँ मन कारणे, तूँ छाड़ि रे अभिमान।
कहि समझाऊँ बेर बेर, तुझ अजहुँ न आवै ज्ञान ॥ १ ॥

[पं० चं० प्र० ने "सर्व व्यापक" का अर्थ दिया है] तन मन में देखूँ तो वहाँ तूँ है तुझे देख कर मैं सुख पाता हूँ। जै घड़ी मैं तुझसे अलग रहूँ उतना ही मुझे दुख व्यापता है ॥ १ ॥ [पं० च० प्र० का अर्थ कि "तूँ तहाँ है इतना कहने में जो फासला पड़ता है उतना ही उतना मुझ को दुख सहना पड़ता है" अनूठा है] तेरे सिवाय मेरा कोई नहीं है मैं तेरे बिना बहा जाता हूँ। दादू साहिब कहते हैं कि यह हरि गुण गाते हुए भक्त अपना आपा तज देता है ॥ २ ॥

ऐसा सँग कहँ पाइये, गुण गावत आवै तान।
चरनौं सौं चित राखिये, निस दिन हरि को ध्यान ॥ २ ॥
वै भी लेखा देहिंगे, आप कहावैं खान।
जन दादू रे गुण गाइये, पूरण है निरवाण ॥ ३ ॥

(१३५)

बटाऊ रे चलना आजि कि काल्हि।
समझि न देखै कहा सुख सोवै, रे मन राम सँभालि ॥ टेक ॥
जैसैं तरवर बिरष बसेरा, पंखी बैठे आइ।
ऐसैं यहु सब हाट पसारा, आप आप कौं जाइ ॥ १ ॥
कोइ नहिं तेरा सजन सँगाती, जिनि खोवै मन मूल।
यहु संसार देखि जिनि भूले, सब ही सेंबल फूल ॥ २ ॥
तन नहिं तेरा धन नहिं तेरा, कहा रह्यौ इहिं लागि।
दादू हरि बिन क्यों सुख सोवै, काहे न देखै जागि ॥ ३ ॥

(१३६)

जात कत मद कौ मातौ रे।
तन धन जोबन देखि गरबानो, माया रातौ रे ॥ टेक ॥
अपनौ हीं रूप नैन भरि देखै, कामिन कौ सँग भावै रे।
बारंबार बिषै रत मानै, मरिबौ चीति न आवै रे ॥ १ ॥
मैं बड़ आगैं और न आवै, करत केत अभिमाना रे।
मेरी मेरी करि करि भूल्यौ, माया मोह भुलाना रे ॥ २ ॥
मैं मैं करत जनम सब खोयो, काल सिरहानै आयौ रे।
दादू देखु मूढ़ नर प्राणी, हरि बिन जनम गमायौ रे ॥ ३ ॥

(१३७)

जागत कौं कदे न मूसै कोई।
जागत जानि जतन करि राखै, चोर न लागू होई ॥ टेक ॥
सोवत साह बस्तु नहिं पावै, चोर मुसै घर घेरा।
आसि पासि पहरो कोउ नाहीं, बस्तैं कीन्ह निबेरा ॥ १ ॥

पीछैं कहु क्या जागें होई, बस्तु हाथ थैं जाई।
बीती रैनि बहुरि नहिं आवै, तब क्या करिहै भाई ॥ २ ॥
पहिलै हीं पहरें जे जागै, बस्तु कछू नहिं छीजै।
दादू जुगति जानि करि ऐसी, करना है सो कीजै ॥ ३ ॥

(१३८)

सजनी रजनी घटती जाइ।
पल पल छीजै अवधि दिन आवै, अपनौं लाल मनाइ ॥ टेक ॥
अति गति नींद कहा सुख सोवै, यहु औसर चलि जाइ।
यहु तन बिछरैं बहुरि कहँ पावै, पीछैं ही पछिताइ ॥ १ ॥
प्राणपति जागै सुंदरि क्यौं सोवै, उठि आतुर गहि पाँइ।
कोमल बचन करुणा करि आगैं, नख सिख रहु लपटाइ ॥ २ ॥
सखी सुहाग सेज सुख पावै, प्रीतम प्रेम बढ़ाइ।
दादू भाग बड़े पिव पावै, सकल सिरोमणि राइ ॥ ३ ॥

(१३९)

कोइ जानै रे मरम माधइया केरौ।
कैसैं रहै करै का सजनी प्राण मेरौ ॥ टेक ॥
कौण बिनोद करत री सजनी, कौणनि संग बसेरौ।
संत साध गति आये उनके, करत जु प्रेम घनेरौ ॥ १ ॥
कहाँ निवास बास कहँ, सजनी गवन तेरौ।
घट घट माहैं रहै निरंतर, ये दादू नेरौ ॥ २ ॥

(१४०)

मग बैरागी राम कौ, संगि रहै सुख होइ हो ॥ टेक ॥
हरि कारण मन जोगिया, क्योंही मिलै मुझ सोइ हो।
निरखण का मोहिं चाव है, क्यों ही आप दिखावै मोहिं हो ॥ १ ॥
हिरदै में हरि आव तूँ, मुख देखौं मन धोइ हो।
तन मन में तूँही बसै, दया न आवै तोहि हो ॥ २ ॥

निरखण का मोहिं चाव है, ये दुख मेरा खोइ हो।
दादू तुम्हारा दास है, नैन देखन कौं रोइ हो ॥ ३ ॥

(१४१)[1]

धरणीधर वाह्या धूता रे, अंग परस नहिं आपै रे।
कह्यौ अमारौ काँई न मानै, मन भावै ते थापै रे ॥ टेक ॥
वाही वाही ने सर्बस लीधो, अबला काँइ न जाणै रे।
अलगौ रहै एणी परि तेड़ै, आपनड़े घरि आणे रे ॥ १ ॥
रमी रमी ने राम रजावी, केन्हैं अंत न दीधो रे।
गोप्य गुह्य ते कोई न जाणै, एहो अचरज कीधो रे ॥ २ ॥
माता बालक रुदन करता, वाही वाही ने राखै रे।
जेवो छे तेवो आपणपो, दादू ते नहिं दाखै रे ॥ ३ ॥

(१४२)

सिरजनहार थैं सब होइ।
उतपति परलै करै आपै, दूसर नाहीं कोइ ॥ टेक ॥
आप होइ कुलाल करता, बूँद थैं सब लोइ।
आप करि अगोच[2] बैठा, दुनीं[3] मन कौं मोहि ॥ १ ॥
आप थैं ऊपाइ बाजी, निरखि देखै सोइ।
बाजीगर कौं यहु भेद आवै, सहजि सौंज[4] समोइ ॥ २ ॥
जे कुछ किया सु करै आपै, येह उपजै मोहि।
दादू रे हरि नाँव सेती, मैल कुसमल धोइ ॥ ३ ॥

---

(१) अर्थ गुजराती शब्द १४१—परमेश्वर ने हम को बहकाया और धोखा दिया, हमको न अपना अंग छूने देता और न हमारा कुछ कहा मानता है जो जी में आवै सो करता है ॥ टेक ॥ फुसला फुसला कर हमारा सब कुछ ले लिया, मुझ निर्बल को कुछ नहीं समझता, अलग थलग रह कर मुझे अपनी ओर बुलाता है और अपने घर को ले जाता है ॥ १ ॥ राम खेल खेल कर रिझाता हैं पर किसी को भेद नहीं देता, वह आप गुप्त और छिपा है जिसे कोई नहीं जानता, उसी ने ऐसा अचरज किया है ॥ २ ॥ हम को उस ने उसी तरह फुसला फुसला कर रक्खा है जैसे माँ अपने रोते हुए बच्चे को रखती है फिर भी वह जैसा है हमारा ही है इस लिये दादू उसके कौतुकों को न ज़ाहिर करेगा ॥ ३ ॥

(२) अगोचर=जिसे इंद्रियों से नहीं जान सकते। (३) संसार। (४) सेवा, आचार।

(१४३)

देहु रे मंझे देव पायौ, बस्तु अगोच लखायौ ॥ टेक ॥
अति अनूप जोति पति, सोई अंतरि आयौ ।
प्यंड ब्रह्मंड सम तुलि दिखायौ ॥ १ ॥
सदा प्रकास निवास निरंतर, सब घट माहिं समायौ ।
नैन निरखि नेरौ, हिरदै हेत लायौ ॥ २ ॥
पूरब भाग सुहाग सेज सुख, सो हरि लैन पठायौ ।
देव कौ दादू पार न पावै, अहो पैं उनहीं चितायौ ॥ ३ ॥

॥ राग मारू ॥

(१४४)

मनाँ भजि राम नाम लीजे ।
साध संगति सुमिरि सुमिरि, रसना रस पीजे ॥ टेक ॥
साधू जन सुमिरण करि, केते जपि जागे ।
अगम निगम अमर किये, काल कोइ न लागे ॥ १ ॥
नीच ऊँच चिंतन करि, सरणागति लीये ।
भगति मुकति अपणी गति, ऐसैं जन कीये ॥ २ ॥
केते तिरि तीर लागे, बंधन भव छूटे ।
कलिमल विष जुग जुग के, राम नाम खूटे[1] ॥ ३ ॥
भरम करम सब निवारि, जीवन जपि सोई ।
दादू दुख दूर-करण, दूजा नहिं कोई ॥ ४ ॥

(१४५)

मनाँ जपि राम नाम कहिये ।
राम नाम मन बिसराम, संगी सो गहिये ॥ टेक ॥
जागि जागि सोवै कहा, काल कंध तेरे ।
बारंबार करि पुकार, आवत दिन नेरे ॥ १ ॥

---

(१) घटाये, चुकाये।

सोवत सोवत जनम बीते, अजहूँ न जीव जागे ।
राम सँभालि नींद निवारि, जनम जुरा लागे ॥ २ ॥
आसि पासि भरम बँध्यो, नारी गृह मेरा ।
अंति काल छाडि चल्यो, कोई नहिं तेरा ॥ ३ ॥
तजि काम क्रोध मोह माया, राम राम कहणा ।
जब लग जीव प्राण प्यंड, दादू गहि सरणा ॥ ४ ॥

(१४६)

क्यौं बिसरै मेरा पीव पियारा । जीव की जीवन प्राण हमारा ॥टेक॥
क्यौंकर जीवै मीन जल बिछुरैं, तुम बिन प्राण सनेही ।
च्यंतामणि जब कर थैं छूटै, तब दुख पावै देही ॥ १ ॥
माता बालक दूध न देवै, सो कैसैं करि पीवै ।
निर्धन का धन अनत भुलाना, सो कैसैं करि जीवै ॥ २ ॥
बरखहु राम सदा सुख अमृत, नीझर निर्मल धारा ।
प्रेम पियाला भरि भरि दीजै, दादू दास तुम्हारा ॥ ३ ॥

(१४७)[१]

कोई कहियो रे मारा नाथ ने, नारी नैण निहारे बाट रे ॥टेक॥
दीन दुखिया सुन्दरी, करुणा बचन कहे रे ।
तुम बिन नाह बिरहणी व्याकुल, किम करि नाथ रहे रे ॥ १ ॥
भूधर बिन भावै नहिं कोई, हरि बिन और न जाणै ।
देह ग्रेह हूँ तेने आपौं, जे कोइ गोविंद आणै रे ॥ २ ॥
जगपति ने जोवा ने काजे, आतुर थई रही रे ।
दादू ने दिखाडो स्वामी, व्याकुल होइ गई रे ॥ ३ ॥

---

(१) अर्थ गुजराती शब्द १४७—कोई मेरे स्वामी से कहो कि तुम्हारी स्त्री तुम्हारा रास्ता देख रही है ॥ टेक ॥ बेचारी दुखिया स्त्री दीन बचन कहती है कि तुम्हारे बिना मैं बिरहिन बेचैन हूँ तुम स्वामी कैसे दूर रहते हो ॥ १ ॥ सिवाय परमेश्वर के मुझे कोई नहीं भाता और हरि बिना मेरे इस मरम को कोई नहीं जानता । जो कोई गोविन्द को ले आवे उस (बिचवही) को मैं अपना तन और धन (गृह = घर) अर्पन कर दूँ ॥ २ ॥ [पं० चं० प्र० ने इसका अर्थ यों लिखा है—"अपना देहरूपी घर मैं गोविन्द को अर्पण करूँ यदि कोई गोविंद को लै आवै"] जगदीश के दर्शनों के लिये मैं बेचैन हो रही हूँ, दादू साहिब कहते हैं कि स्वामी को दिखलावो मैं व्याकुल हूँ ॥ ३ ॥

(१४८)१

अमे बिरहणिया राम तुम्हारड़ियाँ।
तुम बिन नाथ अनाथ, काँइ बिसारड़ियाँ ॥ टेक ॥
अमने अंग अनल परजाले, नाथ निकट नहिं आवै रे।
दरसन कारण बिरहणि ब्याकुल, और न कोई भावै रे ॥ १ ॥
आप अपरछन अमने देखे, आपणपौ न दिखाड़ै रे।
प्राणी पिंजर लेइ रह्यौ रे, आड़ा अन्तर पाड़ै रे ॥ २ ॥
देव देव करि दरसन माँगै, अंतरजामी आपै रे।
दादू बिरहणि बन बन ढूँढै, ये दुख काँइ न कापै रे ॥ ३ ॥

(१४९)

कबहूँ ऐसा बिरह उपावै रे। पिव बिन देखें जिव जावै रे ॥
बिपति हमारी सुनौ सहेली। पिव बिन चैन न आवै रे ॥
ज्यौं जल मीन भीन तन तलफै। पिव बिन बज्र बिहावै रे ॥
ऐसी प्रीति प्रेम की लागै। ज्यौं पंखी पीव सुनावै रे ॥
त्यौं मन मेरा रहै निस बासुर। कोइ पीव कूँ आणि मिलावै रे ॥
तौ मन मेरा धीरज धरई। कोइ आगम आणि जणावै रे ॥
तौ सुख जीव दादू का पावै। पल पिवजी आप दिखावै रे ॥

(१५०)

पंथीड़ा बूझै बिरहणी, कहिनैं पीव की बात।
कब घर आवै कब मिलै, जोऊँ दिन अरु राति, पंथीड़ा ॥टेक॥
कहँ मेरा प्रीतम कहँ बसै, कहाँ रहै करि बास।
कहँ ढूँढौं कहँ पाइये, कहाँ रहै किस पास, पंथीड़ा ॥१॥

---

(१) अर्थ गुजराती शब्द १४८—हे राम हम तुम्हारी बिरहिन हैं, हे नाथ तुम्हारे बिना हम अनाथ हो रही हैं हमको क्यों भूल गये ॥ टेक ॥ नाथ पास नहीं आता इस लिए मेरे शरीर में बिरह अग्नि फुक रही है; मैं बिरहिन नाथ के दर्शनों को बेचैन हूँ मुझे और कोई नहीं सुहाता ॥ १ ॥ आप तो छिपा हुआ हम को देखता है और खुद नहीं दिखलाई देता, जीवदेह धारन करने से बीच में परदा डाले हुए है ॥ २ ॥ जो कोई प्रभू प्रभू पुकार कर दर्शन माँगता है तो उसको अंतरजामी दर्शन देता है; बिरहिन बन बन ढूँढती है इस दुख को क्यों नहीं काटता ॥ ३ ॥

कौण देस कहँ जाइये, कीजै कौण उपाइ।
कौण अंग कैसें रहै, कहा करै समझाइ, पंथीड़ा ॥२॥
परम सनेही प्राण का, सो कत देहु दिखाइ।
जीवनि मेरे जीव की, सो मुझ आणि मिलाइ, पंथीड़ा ॥३॥
नैन न आवै नींदड़ी, निस दिन तलफत जाइ।
दादू आतुर बिरहणी, क्योंकरि रैनि बिहाइ, पंथीड़ा ॥४॥

(१५१)

पंथीड़ा पंथ पिछाणी रे पीव का, गहि बिरहे की बाट।
जीवत मिरतक ह्वै चलै, लंघै औघट घाट, पंथीड़ा ॥ टेक ॥
सतगुर सिर पर राखिये, निर्मल ज्ञान बिचार।
प्रेम भगति करि प्रीति सौं, सनमुख सिरजनहार, पंथीड़ा ॥१॥
पर आतम सौं आतमा, ज्यौं जल जलहि समाइ।
मन ही सौं मन लाइये, लै के मारग जाइ, पंथीड़ा ॥२॥
तालाबेली ऊपजे, आतुर पीड़ पुकार।
सुमिर सनेही आपणा, निस दिन बारंबार, पंथीड़ा ॥३॥
देखि देखि पग राखिये, मारग खांडे धार।
मनसा बाचा कर्मना, दादू लंघै पार, पंथीड़ा ॥४॥

(१५२)

साध कहैं उपदेस बिरहणी।
तन भूलै तब पाइये, निकट भया परदेस, बिरहणी ॥ टेक ॥
तुमहीं माहैं ते बसैं, तहाँ रहे करि बास।
तहँ ढूंढ़ै पिव पाइये, जीवनि जीव के पास, बिरहणी ॥ १ ॥
परम देस तहँ जाइये, आतम लीन उपाइ।
एक अंग ऐसें रहै, ज्यौं जल जलहि समाइ, बिरहणी ॥ २ ॥
सदा सँगाती आपणा, कबहूँ दूरि न जाइ।
प्राण सनेही पाइये, तन मन लेहु लगाइ, बिरहणी ॥ ३ ॥

जागे जगपति देखिये, परगट मिलिहैं आइ।
दादू सन्मुख ह्वै रहै, आनँद अंगि न माइ, विरहणी ॥ ४ ॥

(१५३)

गोबिंदा गाइबा दे रे गाइबा दे, अडड़ीं आणि निवार[1] रे।
अन दिन[2] अंतरि आनंद कीजे, भगति प्रेम रस सार रे ॥टेक॥
अनभै आतम अभै एक रस, निर्भय काँइ न कीजे रे।
अमी महा रस अमृत आपै[3], अम्हे रसिक रस पीजे रे ॥ १ ॥
अबिचल अमर अखै अबिनासी, ते रस काँइ न दीजे रे।
आतम राम अधार अम्हारो, जनम सुफल करि लीजे रे ॥ २ ॥
देव दयाल कृपाल दमोदर, प्रेम बिना क्यूँ रहिये रे।
दादू रँग भरि राम रमाड़ो[4], भगत बछल तूँ कहिये रे ॥ ३ ॥

(१५४)

गोबिंदा जोइबा दे रे जोइबा दे, जे बरजैं ते वारि रे[5]।
आदि पुरिष तूँ अछै अम्हारो, कंत तुम्हारी नारी रे ॥ टेक ॥
अंगै संगै रंगै रमिये, देवा[6] दूरि न कीजे रे।
रस माहैं रस इम थइ[7] रहिये, ये सुख अमने दीजे रे ॥ १ ॥
सेजड़िये सुख रँग भरि रमिये, प्रेम भगति रस लीजे रे।
एकमेक रस केलि करंता, अमे अबला इम जीजे रे ॥ २ ॥
समरथ स्वामी अंतरजामी, बार बार काँइ बाहै[8] रे।
आदैं अंतैं तेज तुम्हारो, दादू देखै गाये[9] रे ॥ ३ ॥

(१५५)८

तुम सरसी रंग रमाड़ि, आप अपरछन थई करी।
मूनैं मा भरमाड़ि ॥ टेक ॥

---

(१) परदा आकर उठा दे। (२) प्रति दिन। (३) दो। (४) आनन्द दो। (५) हे गोविन्द मुझ को देखने दे, अर्थात् दर्शन दे, जो बिघ्न डालें उनसे बचा कर दर्शन दे। (६) हे देव। (७) ऐसा होकर। (८) फेंकै। (९) गाता है।

(८) अर्थ शब्द १५५—हे परमेश्वर तुम सरीखा रंग का खिलाड़ी आप छिपा रह कर मुझको न भरमावै ॥ टेक ॥

मूनैं भोलवे काँइ थई बेगलो, आपणपौ दिखाड़ि ।
केम जीवौं हूँ एकली, बिरहणिया नारि ॥ १ ॥
मूँ ने बाहिश मा अलगौ थई, आतमा उधारि ।
दादू सौं रमिये सदा, ये ऐ परैं तारि ॥ २ ॥

(१५६)

जागि रे किस नींदड़ी सूता ।
रैणि बिहाणी सब गई दिन आइ पहूँता ॥टेक॥
सो क्यौं सोवै नींदड़ी, जिस मरणा होवै रे ।
जौरा बैरी जागणा, जीव तूँ क्यौं सोवै रे ॥ १ ॥
जाके सिर पर जम खड़ा, सर साँधै मारै रे ।
सो क्यौं सोवै नींदड़ी, कहि क्यौं न पुकारै रे ॥ २ ॥
दिन प्रति निस काल झंपै[1], जीव न जागै रे ।
दादू सूता नींदड़ी, उस अंगि न लागै रे ॥ ३ ॥

(१५७)

जागि रे सब रैणि बिहाणी । जाइ जनम अँजुली कौ पाणी ॥
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै । जे दिन जाइ सो बहुरि न आवै ॥
सूरज चंद कहैं समझाइ । दिन दिन आव घटती जाइ ॥
सरवर पाणी तरवर छाया । निस दिन काल गरासै काया ॥
हंस बटाऊ प्राण पयाना । दादू आतम राम न जाना ॥

(१५८)

आदि काल अंति काल, मधि काल भाई ।
जनम काल जुहा काल, काल सँग सदाई ॥ टेक ॥
जागत काल सोवत काल, काल झंपै आई ।
काल चलत काल फिरत, कबहूँ ले जाई ॥ १ ॥

मुझे लुभा कर क्यों जुदा हो गये अपना रूप दिखलाओ; मैं अकेली बिरहिन स्त्री क्योंकर जिऊँ ॥ १ ॥ हे जीव के उद्धार करता मुझे त्याग कर जुदा मत हो जाव; दादू के साथ सदा रमते रहो और उसको पार उतारो ॥ २ ॥

(१) देखे ।

आवत काल जात काल, काल कठिन खाई।
लेत काल देत काल, काल ग्रसै धाई ॥ २ ॥
कहत काल सुनत काल, करत काल सगाई।
काम काल क्रोध काल, काल जाल छाई ॥ ३ ॥
काल आगैं काल पीछैं, काल सँगि समाई।
काल रहित राम गहित, दादू ल्यौ लाई ॥ ४ ॥

(१५९)

तो कौं केता कह्या मन मेरे।
षिण इक माहैं जाइ अनेरे, प्राण उधारी ले रे ॥टेक॥
आगैं है मन खरी बिमासणि[1], लेखा माँगै दे रे।
काहे सोवै नींद भरी रे, कृत्त बिचारै तेरे ॥ १ ॥
ते परि कीजै मन बिचारे, राखै चरनहुँ नेरे।
रती इक जीवन मोहिं न सूझै, दादू चेति सबेरे ॥ २ ॥

(१६०)

मन वाहला रे कछू बिचारी खेल, पड़सी रे गढ़ भेल[2] ॥टेक॥
बहु भाँते दुख देइगा रे वाहला, ज्यौं तिल माँ लीजै तेल।
करणी ताहरी सोधिसी, होसी रे सिर हेल[3] ॥ १ ॥
इबहीं थैं करि लीजै रे वाहला, साईं सेती मेल।
दादू संग न छाडी पीव का, पाई है गुण की बेल[4] ॥ २ ॥

(१६१)

मन बावरे हो अनत जिनि जाइ।
तौ तूँ जीवै अमी रस पीवै, अमर फल काहे न खाइ ॥ टेक ॥
रहु चरण सरण सुख पावै, देखहु नैन अघाइ।
भाग तेरे पीव नेरे, थीर थान बताइ ॥ १ ॥
संग तेरे रहै घेरे, सहजैं अंग समाइ।
सरीर माहैं सोधि साईं, अनहद ध्यान लगाइ ॥ २ ॥

---

(१) कसौटी। (२) गाढ़े झमेले में। (३) बोझ। (४) लता अर्थात् काया।

पीव पासि आवै सुख पावै, तन की तपति बुझाइ ।
दादू रे जहँ नाद ऊपजै, पीव पासि दिखाइ ॥ ३ ॥

(१६२)

निरंजन अंजन कीन्हा रे, सब आतम लीन्हा रे ॥टेक॥
अंजन माया अंजन काया, अंजन छाया रे ।
अंजन राते अंजन माते, अंजन पाया रे ॥ १ ॥
अंजन मेरा अंजन तेरा, अंजन मेला रे ।
अंजन लीया अंजन दीया, अंजन खेला रे ॥ २ ॥
अंजन देवा अंजन सेवा, अंजन पूजा रे ।
अंजन ध्याना अंजन ज्ञाना, अंजन दूजा रे ॥ ३ ॥
अंजन बकता अंजन सुरता, अंजन भावै रे ।
अंजन राम निरंजन कीन्हा, दादू गावै रे ॥ ४ ॥

(१६३)

ऐन बैन चैन होवै, सुणताँ सुख लागै रे ।
तीन्यूँ गुण त्रिविध तिमर, भरम करम भागै रे ॥टेक॥
होइ प्रकास अति उजास, परम तत्त सूझै ।
परम सार निर्विकार, बिरला कोइ बूझै रे ॥ १ ॥
परम थान सुख निधान, परम सुन्नि खेलै ।
सहज भाइ सुख समाइ, जीव ब्रह्म मेलै रे ॥ २ ॥
अगम निगम होइ सुगम, दूतर[1] तिरि आवै ।
आदि पुरिष दरस परस, दादू सो पावै रे ॥ ३ ॥

(१६४)

कोई राम का राता रे, कोई प्रेम का माता रे ॥ टेक ॥
कोई मन कूँ मारै रे, कोई तन कूँ तारै[2] रे । कोई आप उबारै रे॥
कोई जोग जुगता रे, कोई मोष मुकता रे । कोई है भगवंता रे ॥
कोई सदगति सारा रे, कोई तारणहारा रे । कोई पीव का प्यारा रे॥
कोईपार का पाया रे, कोई मिलि करि आया रे । कोईमन का भाया रे॥

(१) दूतर=दुस्तर अर्थात् जिसके पार जाना अति कठिन है । (२) ताड़ना दे ।

कोई है बड़भागी रे, कोई सेज सुहागी रे। कोई है अनुरागी रे॥
कोई सब सुखदाता रे, कोई रूप बिधाता रे। कोई अमृत खाता रे॥
कोई नूर पिछाणै रे, कोई तेज कूँ जाणै रे। कोई जोति बखाणै रे॥
कोई साहिब जैसा रे, कोई साँईं तैसा रे। कोई दादू ऐसा रे॥

(१६५)

सद्‌गति साधवा रे, सन्मुख सिरजनहार।
भौजल आप तिरैं ते तारैं, प्राण उधारणहार ॥टेक॥
पूरण ब्रह्म राम रँग राते, निर्मल नाँव अधार।
सुख संतोष सदा सत संजम, मति गति वार न पार ॥ १ ॥
जुगि जुगि राते जुगि जुगि माते, जुगि जुगि संगति सार।
जुगि जुगि मेला जुगि जुगि जीवन, जुगि जुगि ज्ञान बिचार ॥ २ ॥
सकल सिरोमणि सब सुखदाता, दुर्लभ इहि संसार।
दादू हंस रहैं सुखसागर, आये परउपगार ॥ ३ ॥

(१६६)

अम्ह घरि पाहुणा ये, आव्या आतम राम ॥टेक॥
चहुँ दिसि मंगलचार, आनँद अति घणा ये।
बरत्या जैजैकार, बिरध बधावणा ये ॥ १ ॥
कनक कलस रस माहिं, सखी भरि ल्यावज्यौ ये।
आनँद अंगि न माइ, अम्हारै आविज्यौ ये ॥ २ ॥
भावै भगति अपार, सेवा कीजिये ये।
सन्मुख सिरजनहार, सदा सुख लीजिये ये ॥ ३ ॥
धन्य अम्हारा भाग, आव्या अम्ह भणी ये।
दादू सेज सुहाग, तूँ त्रिभुवन धणी ये ॥ ४ ॥

(१६७)

गावहु मंगलचार, आज बधावणा ये।
सुपनौ दख्यौ साच, पीव घरि आवणा ये ॥ टेक ॥
भाव कलस जल प्रेम का, सब सखियन के सीस।
गावत चलीं बधावणा, जै जै जै जगदीस ॥ १ ॥

पदम कोटि रबि झिलमिलै, अँगि अँगि तेज अनंत।
बिगसि बदन बिरहनि मिली, घरि आये हरि कंत ॥ २ ॥
सुंदरि सुरति सिंगार करि, सनमुख परसे पीव।
मो मंदिर मोहन आविया, वारूँ तन मन जीव ॥ ३ ॥
कवल निरंतर नरहरी, प्रगट भये भगवंत।
जहँ बिरहनि गुण बीनवै, खेलै फाग बसंत ॥ ४ ॥
बर आयौ बिरहनि मिली, अरस परस सब अंग।
दादू सुंदरि सुख भया, जुगि जुगि यहु रस रंग ॥ ५ ॥

॥ राग रामकली ॥

(१६८)

सबद समाना जे रहै, गुर बाइक बीधा।
उनहीं लागा एक सौं, सोई जन सीधा ॥ टेक ॥
ऐसी लागी मरम की, तन मन सब भूला।
जीवत मिरतक ह्वै रहै, गहि आतम मूला ॥ १ ॥
चेतनि चितहिं न बीसरै, महा रस मीठा।
सबद निरंजन गहि रह्या, उनि साहिब दीठा ॥ २ ॥
एक सबद जन ऊधरे, सुनि सहजै जागे।
अंतरि राते एक सौं, सरस न मुख[1] लागे ॥ ३ ॥
सबद समाना सन्मुख रहै, पर आतम आगे।
दादू सीझै देखताँ, अबिनासी लागे ॥ ४ ॥

(१६९)

अहो नर नीका है हरि नाम।
दूजा नहीं नाँउ बिन नीका, कहिले केवल राम ॥ टेक ॥
निरमल सदा एक अबिनासी, अजर अकल रस ऐसा।
दिढ़ गहि राखि मूल मन माहीं, निरखि देखि निज कैसा ॥ १ ॥

(१) छापे की एक पुस्तक में "सर सन्मुख" है और सब लिपियों और पुस्तकों में ऊपर के पाठ के अनुसार हैं।

यहु रस मीठा महा अमीरस, अमर अनूपम पीवै।
राता रहै प्रेम सूँ माता, ऐसैं जुगि जुगि जीवै ॥ २ ॥
दूजा नहीं और को ऐसा, गुर अंजन करि सूझै।
दादू मोटे भाग हमारे, दास बमेकी[1] बूझै ॥ ३ ॥

(१७०)

कब आवैगा कब आवैगा।
पिव परगट आप दिखावैगा, मिठड़ा मुझ कूँ भावैगा ॥ टेक ॥
कंठड़े लागि रहूँ रे, नैनों में वाहि धरूँ रे।
पिव तुझ बिन झूरि मरूँ रे ॥ १ ॥
पाँऊँ मस्तक मेरा रे, तन मन पिवजी तेरा रे।
हूँ राखूँ नैनौं नेरा रे ॥ २ ॥
हियड़े हेत लगाऊँ रे, अब के जे पीवै पाऊँ रे।
तौ बेरि बेरि बलि जाऊँ रे ॥ ३ ॥
सेजड़िये पिव आवे रे, तब आनँद अंगि न मावे रे।
जब दादू दरस दिखावे रे ॥ ४ ॥

(१७१)[2]

पिरी तूँ पाणु पसाइ रे, मूँ तनि लगी बाहि रे ॥ टेक ॥
पाँधी वें दो निकरी अला, असाँ साणु गाल्हाइ रे।
साँईं सिकाँ सद खे अला, गुझी गाल्हि सुणाइ रे ॥ १ ॥
पसाँ पाक दीदार खे अला, सिक असाँजी लाहि रे।
दादू मंझि कलूब में अला, तोरे वी ना काइ रे ॥ २ ॥

---

(१) बिबेकी।

(२) अर्थ सिंधी शब्द नं० १७१—हे प्रीतम तू आप [पाणु] अपना जलवा दिखला [पसाइ], मेरे शरीर में आग [बाहि] लगी है—॥ टेक ॥ हाय ! [अला] पथिक [पाँधो] निकल जायगा [वेंदो], तू हमसे बोल [गाल्हाई]। साँईं मैं तेरे वचन का [सद खे] अनुरागी हूँ [सिकाँ], मुझे गुप्त भेद सुना दे ॥ १ ॥ मैं तेरे पाक दीदार को देखूँ [पसाँ], हमारी [असाँ जी] तड़प [सिक] दूर कर [लाहि]। दादू के चित्त के अंतर तेरे सिवाव [तो रे] दूसरा [बी] कोई नहीं है ॥ २ ॥

(१७२)[१]

को मेड़ीदो सजणाँ, सुँहारी सुरति खे अला, लगा डीहँ घणाँ ॥टेक॥
पिरीयाँ संदी गाल्हड़ी अला, पाँधीअड़ा पुच्छाँ।
कडेहीं इंदो मूँ घरें अला, डींदो बाँह असाँ ॥ १ ॥
आहे सिक दीदार जी अला, पिरीं पूर पसाँ।
ईय दादू जे जियँदे अला, सजणाँ साँणु रहाँ ॥ २ ॥

(१७३)

हरि हाँ दिखावौ नैना।
सुंदर मूरति मोहना, बोलि सुनावौ बैना ॥ टेक ॥
प्रगट पुरातन खंडना, मही मान सुख मंडना ॥ १ ॥
अबिनासी अपरंपरा, दीन दयाल गगन धरा ॥ २ ॥
पारब्रह्म पर पूरणा, दरस देहु दुख दूरणा ॥ ३ ॥
कर किरपा करुणामई, तब दादू देखै तुम दई ॥ ४ ॥

(१७४)

राम सुख सेवग जानै रे, दूजा दुख करि मानै रे ॥ टेक ॥
और अगिन की झाला, फँध[२] रापे है जम काला।
सम काल कठिन सर पेखै, ये सिंह रूप सब देखै ॥ १ ॥
बिष सागर लहरि तरंगा, यहु ऐसा कूप भुवंगा।
भै भीत भयानक भारी, रिप करवत मीच बिचारी ॥ २ ॥
यहु ऐसा रूप छलावा, ठग पासी हारा आवा।
सब ऐसा देखि बिचारै, ये प्राणघात बटपारे ॥ ३ ॥
ऐसा जन सेवग सोई, मन और न भावै कोई।
हरि प्रेम मगन रँग राता, दादू राम रमै रसि माता ॥ ४ ॥

---

(१) अर्थ सिन्धी शब्द नं० १७२—सुंदर [सुहारी] सुरत को सजन से कौन मिलावेगा [को मेड़ीदो] बहुत दिन [डींह] बीत गये ॥ टेक ॥ प्रीतम [पिरीयाँ] की [संडी] बात [गाल्हड़ी] पथिक [पाँधी] से पूछूँ। वह हमारे घर [मूँ गरे] कब [कडेहीं] आवेगा [इंदो] और हम को अपनी बाँह देगा ॥१॥ दीदार की [जी] उमंग [सिक] है कि प्रीतम को अघा कर [पूर] देखूँ [पसाँ]। जनम भर [जियँदे]। यही कि दादू अपने सजन के साथ [साँणु] रहै ॥ २ ॥

(यह दोनों सिंधी शब्द हर लिपि और पुस्तक में निराली अशुद्धता के साथ छपे हैं)

(२) फंदा।

(१७५)

आप निरंजन यों कहै, कीरति करतार।
मैं जन सेवग द्वै नहीं, एकै अङ्ग सार ॥ टेक ॥
मम कारण सब परिहरै, आपा अभिमान।
सदा अखंडित उर धरै, बोलै भगवान ॥ १ ॥
अन्तर पट जीवै नहीं, तबहीं मरि जाइ।
बिछुरै तलफै मीन ज्यौं, जीवै जल आइ ॥ २ ॥
खीर नीर ज्यौं मिलि रहै, जल जलहि समान।
आतम पाणी लूण ज्यौं, दूजा नहिं आन ॥ ३ ॥
मैं जन सेवग द्वै नहीं, मेरा बिसराम।
मेरा जन मुझ सारिखा, दादू कहै राम ॥ ४ ॥

(१७६)

सरनि तुम्हारी केसवा, मैं अनंत सुख पाया।
भाग बड़े तूँ भेटिया, हौं चरनौं आया ॥ टेक ॥
मेरी तपति मिटी तुम देखताँ, सीतल भयौ भारी।
भव बंधन मुकता भया, जब मिले मुरारी ॥ १ ॥
भरम भेद सब भूलिया, चेतनि चित लाया।
पारस सूँ परचा भया, उन सहजि लखाया ॥ २ ॥
मेरा चंचल चित निहचल भया, इब अनत न जाई।
मगन भयो सर बेधिया, रस पिया अघाई ॥ ३ ॥
सन्मुख ह्वै तैं सुख दिया, यहु दया तुम्हारी।
दादू दरसन पावई, पिव प्राण अधारी ॥ ४ ॥

(१७७)

गोबिंद राखौ अपनी ओट।
काम किरोध भये बटपारे, तकि मारैं उर चोट ॥ टेक ॥
बैरी पंच सबल सँगि मेरे, मारग रोकि रहे।
काल अहेड़ी बधिक ह्वै लागे, ज्यूँ जिव बाज गहे ॥ १ ॥

ज्ञान ध्यान हिरदे हरि लीना, सँग ही घेरि रहे।
समझि न परई बाप रमइया, तुम बिन सूल सहे ॥ २ ॥
सरणि तुम्हारी राखौ गोबिंद, इन का संग न दीजै।
इन कै संग बहुत दुख पायो, दादू कौं गहि लीजै ॥ ३ ॥

(१७८)

राम कृपा करि होहु दयाला । सरसन देहु करो प्रतिपाला ॥
बालक दूध न देई माता । तौ वै क्यूँ करि जिवै बिधाता ॥
गुण औगुण हरि कुछ न बिचारै । अंतरि हेत प्रीति करि पालै ॥
अपनो जानि करै प्रतिपाला । नैन निकटि उर धरै गोपाला ॥
दादू कहै नहीं बस मेरा । तूँ माता मैं बालक तेरा ॥

(१७९)

भगति माँगौं बाप भगति माँगौं । मूनैं ताहरा नाँव नो[1] प्रेम लागौं ॥
सिवपुर ब्रह्मपुर सरब शूँ[2] कीजिये । अमर थावा[3] नहीं लोक माँगौं॥
आपि[4] अवलंबन[5] ताहरा अंग नो । भगति सजीवनी रंगि राचौं ॥
देहनैं[6] ग्रेह नो बास बैकुंठ तणौं[7] । इन्द्र आसण नहीं मुकति जाचौं ॥
भगति वाहली[8] खरी आप अविचल हरी। निरमलो नाँव रस पान भावै॥
सिधि नैं रिधि नैं, राज रूड़ो नहीं । देव पद माहरै काजि न आवै ॥
आतमा अंतर सदा निरंतर । ताहरी बापजी भगति दीजै ॥
कहे दादू हिवें कोड़ि दत्त आपे । तुम बिना ते अम्हे नहीं लीजै[9] ॥

(१८०)[1]

एह्वो एक तूँ रामजी, नाँव रूड़ो ।
ताहरा नाँव बिना, बीजो सबै कूड़ो ॥ टेक ॥

---

(१) को। (२) क्या। (३) होना। (४) दे। (५) सहारा। (६) और। (७) का। (८) प्यारी। (९) दादू साहिब कहते हैं कि यदि अब कोई मुझे करोड़ों की संपत्ति भी दे तो तुम्हें छोड़ कर न लूँ।

(१) अर्थ गुजराती शब्द १८०— हे रामजी एक तूही ऐसा (एह्वो) है अर्थात् तुझ सरीखा दूसरा नहीं है, तेरा नाम उत्तम (रूड़ो) है; तेरे नाम के अतिरिक्त दूसरा (बीजो) सब मिथ्या (कूड़ो) है ॥ टेक ॥

तुम बिना और कोई कलि माँ नहीं, सुमिरताँ संत नैं साद आपै ।
करम कीधाँ कोटि छोड़वै बाधौ, नाँव लेताँ षिणतही ये कापै ॥
संत नैं साँकड़ो दुष्ट पीड़ा करै, वाहरैं वाहलौ बेगि आवै ।
पाप नाँ पुंज पहाँ कर लीधौं, भाजिया भय भरम जोनि न आवै ॥
साध नैं दुहेलौं तहाँ तूँ आकुलौं, माहरौं माहरौं करी नैं धाये ।
दुष्ट नैं मारिबा संत नैं तारिबा, प्रगट थावा तिहाँ आप जाये ॥
नाम लेताँ षिण नाथ तैं एकलैं, कोटिनाँ कर्मनाँ छेद कीधाँ ।
कहै दादू हिवैं तुम बिना को नहीं, साखि बोलैं जे सरण लीधाँ ॥

(१८१)

हरि नाम देहु निरंजन तेरा ।
हरि हरखि जपै जिव मेरा ॥ टेक ॥
भाव भगति हेत हरि दीजे, प्रेम उमँगि मन आवै ।
कोमल बचन दीनता दीजै, राम रसायण भावै ॥ १ ॥
बिरह बैराग प्रीति मोहिं दीजै, हिरदै साच सति भाखौं ।
चित चरणों चिंतामणि दीजै, अंतरि दिढ़ करि राखौं ॥ २ ॥
सहज संतोष सील सब दीजै, मन निहचल तुम लागै ।
चेतनि चिंतनि सदा निवासी, संगि तुम्हारे जागै ॥ ३ ॥
ज्ञान ध्यान मोहन मोहिं दीजै, सुरति सदा सँगि तेरे ।
दीनदयाल दादू कूँ दीजै, परम जोति घटि मेरे ॥ ४ ॥

तुम्हारे सिवाय कोई कलियुग में नहीं है जिसका स्मरण संत को स्वाद दे (साद आपै); किये हुए करोड़ों कर्मों के बंधन तेरे नाम लेते ही छिन में छूट और कट जाते हैं (कापै) ॥ १ ॥ जब दुष्ट जन संतों को कड़ी (साँकड़ो) पीड़ा देते हैं तब उनकी सहायता को (बाहर) प्रीतम तुर्त आता है; ऐसे संत जिन्होंने पाप की ढेरी को दूर (पहराँ) और भय और भरम को नष्ट और अपने को पुनर्जन्म से परे कर लिया है (योनि न आवै) ॥ २ ॥ जहाँ साध को गाढ़ आन पड़ती है तहाँ तू व्याकुल होकर "मेरा मेरा" पुकारता आप दौड़ता है और साक्षात् प्रगट होकर दुष्ट को मारता और संत को तारता है ॥ ३ ॥ हे नाथ तू नाम लेते ही अकेला करोड़ों कर्मों का नाश करता है; [दादू] अब (हिवै) तेरे बिना कोई नहीं है और इस की साखी तेरे शरणागत जन देते हैं ॥ ४ ॥

(१८२)

जै जै जै जगदीस तूँ, तूँ समरथ साँईं।
सकल भवन भाने घड़ै[१], दूजा को नाहीं ॥ टेक ॥
काल मीच करुणा करै, जम किंकर माया।
महा जोध बलवंत बली, भय कंपै राया ॥ १ ॥
जुरा मरण तुम थैं डरै, मन कौं भय भारी।
काम दलन करुणा मई, तूँ देव मुरारी ॥ २ ॥
सब कंपै करतार थैं, भव बंधन पासा।
अरि रिप[२] भंजन भय गता, सब बिघन बिनासा ॥ ३ ॥
सिर ऊपर साँईं खड़ा, सोई हम माहीं।
दादू सेवग राम का, निरभय न डराई ॥ ४ ॥

(१८३)

हरि के चरण पकरि मन मेरा। यहु अबिनासी घर तेरा ॥टेक॥
जब चरण कवल रज पावै, तब काल ब्याल[३] बौरावै।
तब त्रिबिधि ताप तन नासै, तब सुख की रासि बिलासै ॥ १ ॥
जब चरण कवल चित लागै, तब माथैं मीच न जागै।
तब जनम जुरा सब खीना, तब पद पावण उर लीना ॥ २ ॥
जब चरण कवल रस पीवै, तब माया न ब्यापै जीवै।
तब भरम करम भौ भाजै, तब तीन्यों लोक बिराजै ॥ ३ ॥
जब चरण कमल रुचि तेरी, तब चारि पदारथ चेरी।
तब दादू और न बाँछै[४], जब मन लागै साचै ॥ ४ ॥

(१८४)

संतो और कहो क्या कहिये।
हम तुम सीख इहै सतगुर की, निकटि राम के रहिये ॥ टेक ॥
हम तुम माहिं बसै सो स्वामी, साचे सूँ सच लहिये।
दरसन परसन जुग जुग कीजै, काहे कूँ दुख सहिये ॥ १ ॥

(१) तोड़ै और गढ़ै। (२) अंतर और बाहर के शत्रु। (३) साँप। (४) माँगै।

हम तुम संगि निकट रहैं नेरैं, हरि केवल करि गहिये।
चरण कवल छाडि करि ऐसे, अनत काहे कौं बहिये ॥ २ ॥
हम तुम तारण तेज घन सुंदर, नीके सौं निरबहिये।
दादू देखु और दुख सब हीं, ता में तन क्यों दहिये ॥ ३ ॥

(१८५)

मन रे बहुरि न ऐसैं होई।
पीछैं फिर पछितावैगा रे, नींद भरे जिनि सोई ॥ टेक ॥
आगम सारै संचु करीले[1], तौ सुख होवै तोही।
प्रीति करी पिव पाइये, चरणौं राखै मोहीं ॥ १ ॥
संसार सागर विषम अति भारी, जिन राखै मन मोहि।
दादू रे जन राम नाम सौं, कुसमल देही धोइ ॥ २ ॥

(१८६)

साथी सावधान ह्वै रहिये।
पलक माहिं परमेसुर जानै, कहा होइ का कहिये ॥ टेक ॥
(बाबा) बाट घाट कुछ समझि न आवै, दूरि गवन हम जानाँ।
परदेसी पंथ चलै अकेला, औघट घाट पयाना ॥ १ ॥
(बाबा) संग न साथी कोइ नहिं तेरा, यहु सब हाट पसारा।
तरुवर पंखी सबै सिधाये, तेरा कौण गँवारा ॥ २ ॥
(बाबा) सबै बटाऊ पंथि सिराने, इस्थिर नाहीं कोई।
अंतिकाल को आगैं पीछैं, बिछुरत बार न होई ॥ ३ ॥
(बाबा) काची काया कौण भरोसा, रैणि गई क्या सोवै।
दादू संबल[2] सुकिरत लीजे, सावधान किन होवै ॥ ४ ॥

(१८७)

मेरा मेरा काहे कौं कीजे, जे कुछ संग न आवै।
अनिति[3] करी नैं धन धरिला रे, तेउ तौ रीता[4] जावै ॥टेक॥

(१) संचय करले। (२) सम्हल कर। (३) अनीति। (४) खाली।

माया बंधन अंध न चेतै, मेर[१] माहिं लपटाया ।
ते जाणै हौं येह बिलासौं[२], अनत बियाधें[३] खाया ॥ १ ॥
आप सवारथ येह बिलूधा[४] रे, आगम मरम न जाणै ।
जम कर माथैं बाण धरीला[५], ते तौ मन नहिं आणै ॥ २ ॥
मन बिचारि सारी ते लीजै, तिल माहैं तन पड़िबा[६] ।
दादू रे तहँ तन ताड़ीजै[७], जेणें मारग चढ़िबा ॥ ३ ॥

(१८८)

सन्मुख भइला रे तब दुख गइला रे, ते मेरे प्राण अधारी ।
निराकार निरंजन देवा रे, लेवा तेह बिचारी ॥ टेक ॥
अपरम्पार परम निज सोई, अलख तोरा बिस्तारं ।
अंकुर बीजे सहजि समाना रे, ऐसा समरथ सारं ॥ १ ॥
जे तैं कीन्हा किन्हि इक चीन्हा रे, भइला ते परिमाणं ।
अबिगति तोरी बिगति न जाणौं, मैं मूरिख अयानं ॥ २ ॥
सहजैं तोरा ये मन मोरा, साधन सौं रँग आई ।
दादू तोरी गति नहिं जाणै, निरबाहो कर लाई ॥ ३ ॥

(१८९)

हरि मारग मस्तक दीजिये, तब निकट परम पद लीजिये ॥ टेक ॥
इस मारग माहैं मरणा, तिल[८] पीछैं पाँव न धरणा ।
अब आगैं होइ सो होई, पीछैं सोच न करणां कोई ॥ १ ॥
ज्यौं सूरा रण जूझै, तब आपा पर नहिं बूझै ।
सिर साहिब काज सँवारे, घण घावाँ आपा डारै ॥ २ ॥
सती सत गहि साचा बोलै, मन निहचल कदे न डोलै ।
वा कै सोच पोच जिय न आवै, जग देखत आप जलावै ॥ ३ ॥
इस सिर सौं साटा कीजै, तब अबिनासी पद लीजै ।
ता का तब सिर स्याबित होवै, जब दादू आपा खोवै ॥ ४ ॥

---

(१) अहं । (२) वह समझता है कि मैं इस को बिलसूँगा । (३) दो लिपियों में 'बिरोध'' है । (४) लालच में पड़ा । (५) जम अपने हाथ में तेरे सिर पर तीर साधे हुए है । (६) छिन में शरीर पात होगा । (७) चलाइये । (८) छिन भर ।

(१९०)

झूठा कलिजुग कह्या न जाइ, अमृत कौं विष कहै बणाइ ॥टेक॥
धन कौं निरधन निरधन कौं धन, नीति अनीति पुकारै।
निरमल मैला मैला निरमल, साध चोर करि मारै ॥ १ ॥
कंचन काच काच कौं कंचन, हीरा कंकर भाखै।
माणिक मणियाँ मणियाँ माणिक, साच झूठ करि नाखै ॥ २ ॥
पारस पत्थर पत्थर पारस, कामधेनु पसु गावै।
चंदन काठ काठ कौं चंदन, ऐसी बहुत बनावै ॥ ३ ॥
रस कौं अणरस अणरस कौं रस, मीठा खारा होई।
दादू कलिजुग ऐसा बरतै, साचा बिरला कोई ॥ ४ ॥

(१९१)

दादू मोहिं भरोसा मोटा।
तारण तिरण सोई सँग मेरे, कहा करै कलि खोटा ॥ टेक ॥
दौं लागी दरिया थैं न्यारी, दरिया मंझि न जाई।
मच्छ कच्छ रहैं जल जेते, तिन कूँ काल न खाई ॥ १ ॥
जब सूवै प्यंजर घर पाया, बाज रह्या बन माहीं।
जिनका समरथ राखणहारा, तिनकूँ को डर नाहीं ॥ २ ॥
साचै झूठ न पूजै कबहूँ, सत्ति न लागै काई।
दादू साचा सहजि समाना, फिरि वै झूठ बिलाई ॥ ३ ॥

(१९२)

साईं कौं साच पियारा।
साचै साच सुहावै देखौ, साचा सिरजनहारा ॥ टेक ॥
ज्यूँ घण घावाँ सार घड़ीजै, झूठ सबै झड़ि जाई।
घण के घाऊँ सार रहेगा, झूठ न माहिं समाई ॥ १ ॥
कनक कसौटी अगिनि मुख दीजै, कंप[1] सबै जलि जाई।
यौं तौ कसणी साच सहैगा, झूठ सहै नहिं भाई ॥ २ ॥

---

(१) सोने की मैल।

ज्यूँ घृत कूँ ले ताता कीजै, ताइ ताइ तत कीन्हा।
तत्तैं तत्त रहैगा भाई, झूठ सबै जलि पीना ॥ ३ ॥
यौं तौ कसणी साच सहैगा, साचा कसि कसि लेवै।
दादू दरसन साचा पावै, झूठे दरस न देवै ॥ ४ ॥

(१९३)

बातैं बादि जाहिंगी भइये, तुम जिनि जानौ बातनि पइये ॥ टेक ॥
जब लग अपना आप न जाणै, तब लग कथनी काची।
आपा जाणि साईं कूँ जाणै, तब कथनी सब साची ॥ १ ॥
करणी बिना कंत नहिं पावै, कहे सुने का होई।
जैसी कहै करै जे तैसी, पावैगा जन सोई ॥ २ ॥
बातनिहीं जे निरमल होवै, तौ काहे कूँ कसि लीजै।
सोना अगिनि दहै दस बारा, तब यहु प्राण पतीजै ॥ ३ ॥
यौं हम जाणा मन पतियाना, करणी कठिन अपारा।
दादू तन का आपा जारै, तौं तिरत न लागै बारा ॥ ४ ॥

(१९४)

पंडित राम मिलै सो कीजै,
पढ़ि पढ़ि बेद पुराण बखाने, सोई तत कहि दीजै ॥ टेक ॥
आतम रोगी बिषम बियाधी, सोई करि औषधि सारा।
परसत प्राणी होइ परम सुख, छूटै सब संसारा ॥ १ ॥
ये गुण इन्द्री अगिनि अपारा, तासनि जलै सरीरा।
तन मन सीतल होइ सदा सुख, सो जल नावौ नीरा ॥ २ ॥
सोई मारग हमहिं बतावौ, जिहिं पँथि पहुँचैं पारा।
भूलि न परै उलटि नहिं आवै, सो कुछ करहु विचारा ॥ ३ ॥
गुर उपदेस देहु कर दीपक, तिमर मिटै सब सूझै।
दादू सोई पंडित ग्याता, राम मिलन की बूझै ॥ ४ ॥

(१९५)

हरि राम बिना सब भरमि गये, कोई जन तेरा साच गहै ॥ टेक ॥

पीवै नीर तृषा तन भाजै, ज्ञान गुरू बिन कोइ न लहै।
परगट पूरा समझि न आवै, ता थैं सो जल दूरि रहै॥ १॥
हरष सोक दोउ समि करि राखै, एक एक के सँगि न बहै।
अनतहि जाइ तहाँ दुख पावै, आपहि आपा आप दहै॥ २॥
आपा पर भरम सब छाड़ै, तीनि लोक परि ताहि धरै।
सो जन सही साच कौं परसै, अमर मिलै नहिं कबहुँ मरै॥ ३॥
पारब्रह्म सौं प्रीति निरंतर, राम रसाइण भरि पीवै।
सदा अनंद सुखी साचे सौं, कहै दादू सो जन जीवै॥ ४॥

(१९६)

जग अंधा नैन न सूझै, जिन सिरजे ताहि न बूझै॥ टेक॥
पाहण की पूजा करै, करि आतम घाता।
निरमल नैन न आवई, दोजग[1] दिसि जाता॥ १॥
पूजै देव दिहाड़िया[2], महामाई मानै।
परगट देव निरंजना, ता की सेव न जानै॥ २॥
भैरौं भूत सब भरम के, पसु प्राणी ध्यावै।
सिरजनहारा सबनि का, ता कूँ नहिं पावै॥ ३॥
आप सुवारथ मेदिनी[3], का का नहिं करई।
दादू साचे राम बिन, मरि मरि दुख भरई॥ ४॥

(१९७)

साचा राम न जाणै रे, सब झूठ बखाणै रे॥टेक॥
झूठे देवा झूठी सेवा, झूठा करै पसारा।
झूठी पूजा झूठी पाती, झूठा पूजणहारा॥ १॥
झूठा पाक करै रे प्राणी, झूठा भोग लगावै।
झूठा आड़ा पड़दा देवै, झूठा थाल बजावै॥ २॥
झूठे बकता झूठे सुरता, झूठी कथा सुणावै।
झूठा कलिजुग सब को मानै, झूठा भरम दिढ़ावै॥ ३॥

---

(१) नर्क। (२) देहरा। (३) संसार।

थावर जंगम जल थल महियल[1], घटि घटि तेज समाना ।
दादू आतम राम हमारा, आदि पुरिष पहिचाना ॥ ४ ॥

(१९८)

मैं पंथि एक अपार के, मन और न भावै ।
सोई पंथि पावै पीव का, जिस आप लखावै ॥ टेक ॥
को पंथि हिंदू तुरक के, को काहू राता ।
को पंथि सोफी सेवड़े, को सन्यासी माता ॥ १ ॥
को पंथि जोगी जंगमा, को सक्ति पंथि धावै ।
को पंथि कमड़े कापड़ी, को बहुत मनावै ॥ २ ॥
को पंथि काहू के चलै, मैं और न जानौं ।
दादू जिन जग सिरजिया, ताही कौं मानौं ॥ ३ ॥

(१९९)

आज हमारे राम जी, साध घरि आये ।
मंगलचार चहुँ दिसि भये, आनंद बधाये ॥ टेक ॥
चौक पुराऊँ मोतियाँ, घसि चंदन लाऊँ ।
पंच पदारथ पोइ करि, यहु माल चढ़ाऊँ ॥ १ ॥
तन मन धन करौं वारणैं, परदखिना[2] दीजै ।
सीस हमारा जीव ले, नौछावर कीजै ॥ २ ॥
भाव भगति करि प्रीति सौं, प्रेम रस पीजै ।
सेवा बंदन आरती, यहु लाहा[3] लीजै ॥ ३ ॥
भाग हमारा हे सखी, सुख सागर पाया ।
दादू का दरसन किया, मिले त्रिभुवन राया ॥ ४ ॥

(२००)

निरंजन नाँव के रस माते, कोइ पूरे प्राणी राते ॥ टेक ॥
सदा सनेही राम के, सोई जन साचे ।
तुम बिन और न जानहीं, रँग तेरे ही राचे ॥ १ ॥

---

(१) पृथ्वी संबंधी । (२) फेरी । (३) लाभ ।

आन न भावे एक तूँ, सति साधू सोई।
प्रेम पियासे पीव के, ऐसा जन कोई॥ २॥
तुम हीं जीवनि उरि रहे, आनँद अनुरागी।
प्रेम मगन पिव प्रीतड़ी, लै तुम सूँ लागी॥ ३॥
जे जन तेरे रँग रँगे, दूजा रँग नाहीं।
जनम सुफल करि लीजिये, दादू उन माहीं॥ ४॥

(२०१)

चलु रे मन जहँ अमृत बनाँ। निरमल नीके संत जनाँ॥ टेक॥
निरगुण नाँव फल अगम अपार। संतन जीवनि प्राण-अधार॥
सीतल छाया सुखी सरीर। चरण सरोवर निरमल नीर॥
सुफल सदा फल बारह मास। नाना बाणी धुनि परकास॥
जहाँ बास बसि अमर अनेक। तहँ चलि दादू इहै बिबेक॥

(२०२)

चलो मन माहरा जहँ मित्र अम्हारा।
जहँ जामण मरण नहिं जाणिये नहिं जाणिये॥ टेक॥
जहँ मोह न माया मेरा न तेरा। आवा गमन नहीं जम फेरा॥
प्यंड पड़ै नहिं प्राण न छूटै। काल न लागै आव न खूटै[1]॥
अमरलोक तहँ अखिल[2] सरीरा। ब्याधि बिकार न ब्यापै पीरा॥
राम राज कोइ भिड़ै न भाजै। इसथिर रहणा बैठा छाजै[3]॥
अलख निरंजन और न कोई। मित्र हमारा दादू सोई॥

(२०३)

बेली आनँद प्रेम समाइ।
सहजैं मगन राम रस सींचै, दिन दिन बधता जाइ॥ टेक॥
सतगुर सहजैं बाही[4] बेली, सहजि गगन घर छाया।
जहजैं सहजैं कूँ पल मेल्है, जाणै अवधू राया॥ १॥

---

(१) घटै। (२) अमर। (३) शोभा दे। (४) सींची।

आतम बेली सहजैं फूलै, सदा फूल फल होई।
काया बाड़ी सहजैं निपजै, जाणै बिरला कोई ॥ २ ॥
मन हठ बेली सूकण लागी, सहजैं जुगि जुगि जीवै।
दादू बेलि अमर फल लागै, सहजि सदा रस पीवै ॥ ३ ॥

(२०४)

संतो राम बाण मोहिं लागे।
मारत मिरग मरम तब पायौ, सब संगी मिलि जागे ॥ टेक ॥
चित चेतनि च्यंतामणि चीन्हे, उलटि अपूठा आया।
मंदिर पैसि बहुरि नहिं निकसै, परम तत्त घर पाया ॥ १ ॥
आवै न जाइ जाइ नहिं आवै, तिहि रसि मनवाँ माता।
पान करत परमानँद पायौ, थकित भयौ चलि जाता ॥ २ ॥
भयौ अपंग पंक[1] नहिं लागै, निरमल संगि सहाई।
पूरण ब्रह्म अखिल अबिनासी, तिहि तजि अनत न जाई ॥ ३ ॥
सो सर[2] लागि प्रेम परकासा, प्रगटी प्रीतम बाणी।
दादू दीन दयालहि जाणै, सुख में सुरति समाणी ॥ ४ ॥

(२०५)

मधि नैन निरखौं सदा, सो सहज सरूप।
देखत ही मन मोहिया, सो तत्त अनूप ॥ टेक ॥
तिरबेणी तट पाइया, मूरति अबिनासी।
जुग जुग मेरा भावता, सोई सुख रासी ॥ १ ॥
तारुणी तटि देखिहौं, तहाँ असथाना।
सेवग स्वामी सँगि रहै, बैठे भगवाना ॥ २ ॥
निरभय थान सुहात सो, तहँ सेवग स्वामी।
अनेक जतन करि पाइया, मैं अंतरजामी ॥ ३ ॥
तेज तार परमिति नहीं, ऐसा उजियारा।
दादू पार न पावई, सो सरूप सँभारा ॥ ४ ॥

(१) कीचड़। (२) बान।

(२०६)

निकटि निरंजन देखिहौं, छिन दूरि न जाई।
बाहिर भीतर एक सा, सब रह्या समाई ॥ टेक ॥
सतगुर भेद बताइया, तब पूरा पाया।
नैनन हीं निरखौं सदा, घरि सहजैं आया ॥ १ ॥
पूरे सौं परचा भया, पूरी मति जागी।
जीव जानि जीवनि मिल्यो, ऐसे बड़ भागी ॥ २ ॥
रोम रोम में रमि रह्या, सो जीवनि मेरा।
जीव पीव न्यारा नहीं, सब संगि बसेरा ॥ ३ ॥
सुन्दर सो सहजैं रहै, घट अंतरजामी।
दादू सोई देखिहौं, सारौं सँगि स्वामी ॥ ४ ॥

(२०७)

सहज सहेलड़ी हे, तूँ निरमल नैन निहारि।
रूप अरूप निरगुण आगुण में, त्रिभुवन देव मुरारि ॥ टेक ॥
बारम्बार निरखि जगजीवन, इहि घरि हरि अबिनासी।
सुन्दरि जाइ सेज सुख बिलसै, पूरण परम निवासी ॥ १ ॥
सहजैं संगि परसि जगजीवन, आसणि अमर अकेला।
सुन्दरि जाइ सेज सुख सोवै, ब्रह्म जीव का मेला ॥ २ ॥
मिलि आनंद प्रीति करि पावन, अगम निगम जहँ राजा।
जाइ तहाँ परसि पावन कौं, सुन्दरि सारै काजा ॥ ३ ॥
मंगलचार चहूँ दिसि रोपै, जब सुन्दरि पिव पावै।
परम जोति पूरे सौं मिलि करि, दादू रँग लगावै ॥ ४ ॥

(२०८)

तहँ आपै आप निरंजना, तहँ निस बासर नहिं संजमा ॥ टेक ॥
तहँ धरती अम्बर नाहीं, तहँ धूप न दीसै छाहीं।
तहँ पवन न चालै पाणी, तहँ आपै एक बिनानी ॥ १ ॥

तहँ चन्द न ऊगै सूरा, मुख काल न बाजै तूरा।
तहँ सुख दुख का गमि नाहीं, वो तौ अगम अगोचर माहीं ॥२॥
तहँ काल काया नहिं लागै, तहँ को सोवै को जागै।
तहँ पाप पुण्य नहिं कोई, तहँ अलख निरंजन सोई ॥३॥
तहँ सहजि रहै सो स्वामी, सब घटि अंतरजामी।
सकल निरंतर बासा, रटि दादू संगम पासा ॥४॥

(२०९)

अवधू बोलि निरंजन बाणी, तहँ एकै अनहद जाणी ॥टेक॥
तहँ बसुधा[1] का बल नाहीं, तहँ गगन घाम नहिं छाँहीं।
तहँ चंद सूर नहिं जाई, तहँ काल काया नहिं भाई ॥१॥
तहँ रैणि दिवस नहिं छाया, तहँ बाव बरण नहिं माया।
तहँ उदय अस्त नहिं होई, तहँ मरै न जीवै कोई ॥२॥
तहँ नाहीं पाठ पुराना, तहँ अगम निगम नहिं जाना।
तहँ बिद्या बाद नहिं ज्ञाना, नहिं तहाँ जोग अरु ध्याना ॥३॥
तहँ निराकार निज ऐसा, तहँ जान्या जाइ न तैसा।
तहँ सब गुण रहिता गहिये, तहँ दादू अनहद कहिये ॥४॥

(२१०)

बाबा को ऐसा जन जोगी।
अंजन छाड़ै रहै निरंजन, सहज सदा रस भोगी ॥ टेक ॥
छाया माया रहै बिबरजित, प्यंड ब्रह्मंड नियारे।
चंद सूर थै अगम अगोचर, सो गहि तत्त बिचारे ॥ १ ॥
पाप पुण्य लिपै नहिं कबहूँ, दोइ पख रहिता सोई।
धरनि अकास ताहि थैं ऊपरि, तहाँ जाइ रत होई ॥ २ ॥
जीवण मरण न बाँछै[2] कबहूँ, आवागवन न फेरा।
पाणी पवन परस नहिं लागै, तिहि सँगि करै बसेरा ॥ ३ ॥
गुण आकार जहाँ गमि नाहीं, आपै आप अकेला।
दादू जाइ तहाँ जन जोगी, परम पुरिष सौं मेला ॥ ४ ॥

(१) पृथ्वी। (२) माँगै।

(२११)

जोगी जानि जानि जन जन जीवै ।
बिनहीं मनसा मनहिं बिचारै, बिन रसना रस पीवै ॥ टेक ॥
बिनहीं लोचन निरखि नैन बिन, स्रवण रहित सुनि सोई ।
ऐसैं आतम रहै एक रस, तौ दूसर नाँव न होई ॥ १ ॥
बिनहीं मारग चलै चरण बिन, निहचल बैठा जाई ।
बिनहीं काया मिलै परस्पर, ज्यौं जल जलहि समाई ॥ २ ॥
बिनहीं ठाहर आसण पूरै, बिन कर बेनु बजावै ।
बिनहीं पाँऊँ नाचै निस दिन, बिन जिभ्या गुण गावै ॥ ३ ॥
सब गुण रहिता सकल बियापी, बिन इंद्री रस भोगी ।
दादू ऐसा गुरू हमारा, आप निरंजन जोगी ॥ ४ ॥

(२१२)

इहै परम गुर जोगं, अमी महा रस भोगं ॥ टेक ॥
मन पवना थिर साधं, अविगत नाथ अराधं । तहं सबद अनाहद नादं ॥
पंच सखी परमोधं, अगम ज्ञान गुर बोधं । तहं नाथ निरंजन सोधं ॥
सतगुर माहिं बतावा, निराधार घर छावा । तहँ जोति सरूपी पावा ॥
सहजैं सदा प्रकासं, पूरण ब्रह्म बिलासं । तहँ सेवग दादू दासं ॥

(२१३)

मूनैं[1] येह अचंम्भौ थाये[2] ।
कीड़ी[3] ये हस्तो बिडारचो, तेन्हैं बैठी खाये ॥टेक॥
जाण[4] हुतौ ते बठौ हारे, अजाण[5] तेन्हैं ता वाहे[6] ।
पाँगुलौ उजावा लाग्यौ[7], तेन्हैं कर को साहै[8] ॥ १ ॥

---

(१) मूनैं = मुझे । (२) थाये = होता है । (३) कीड़ी = चींटी अर्थात् सुरत या जीवात्मा जो यहाँ अति दुर्बल हो रही है परन्तु सतगुरु प्रताप से पुष्ट हो कर हस्ती रूपी मन को मार लेती है—(पंडित चंद्रिका प्रसाद ने कीड़ी का अभिप्राय "मन्सा" लिखा है जो ठीक नहीं हो सकता क्योंकि मनसा तो मन की जाई इच्छा है वह उसे क्या मारेगो !) । (४) चतुरा अर्थात् मन । (५) भोली सुरत । (६) वहका लिया । (७) ऐसा मन जो चंचलता छोड़ कर पंगुल होगया वही ऊँचे पर पहुँचा । (८) उसके हाथ [कर] को कौन रोकै [साहै] ।

नान्हौ[1] हुतौ ते मोटो थयौ, गगन मँडल नहिं माये।
मोटेरौ बिस्तार भणीजै, तेतौ केन्हे जाये[2] ॥ २ ॥
ते जाणै जे निरखी जोवै[3], खोजी ने बलि माहैं।
दादू तेन्हौं मरम न जाणैं, जे जिभ्या बिहूणौ गाये[4] ॥ ३ ॥

॥ राग आसावरी ॥

(२१४)

तूँहीं मेरे रसना तूँहीं मेरे बैना। तूँहीं मेरे स्रवना तूँहीं मेरे नैना ॥
तूँहीं मेरे आतम कँवल मँझारी। तूँहीं मेरे मनसा तुम्ह परिवारी ॥
तूँहीं मेरे मनहीं तूँहीं मेरे साँसा। तूँहीं मेरे सुरतें प्राण निवासा ॥
तूँहीं मेरे नखसिख सकल सरीरा। तूँहीं मेरे जियरे ज्यौं जल नीरा ॥
तुम्ह बिन मेरे और कोइ नाहीं। तूँहीं मेरी जीवनि दादू माहीं ॥

(२१५)

तुम्हरे नाँइ लागि हरि जीवनि मेरा।
मेरे साधन सकल नाँव निज तेरा ॥ टेक ॥
दान पुन्न तप तीरथ मेरे, केवल नाँव तुम्हारा।
ये सब मेरे सेवा पूजा, ऐसा बरत हमारा ॥ १ ॥
ये सब मेरे बेद पुराणा, सुचि संजम है सोई।
ज्ञान ध्यान येई सब मेरे, और न दूजा कोई ॥ २ ॥
काम क्रोध काया बसि करणा, ये सब मेरे नामा।
मुकता गुपता परगट कहिये, मेरे केवल रामा ॥ ३ ॥
तारण तिरण नाँव निज तेरा, तुम्ह हीं एक अधारा।
दादू अंग एक रस लागा, नाँव गहै भौ पारा ॥ ४ ॥

---

(१) वह नन्हीं सुरत जो गुरु बल ले कर आत्मा से महात्मा पद को प्रात हुई यहाँ तक कि अब त्रिकुटी में भी नहीं अटती। (२) अब मन को अकुलाहट हुई कि सुरत की उन्नति को रोकना चाहिये जिसमें वह और आगे न बढ़े। (३) निरख परख कर देखता है। (४) मनमुख जीव वह मर्म नहीं जानते जिसका बिना जीभ के उच्चारन होता है।

(२१६)

हरि केवल एक अधारा, सोइ तारण तिरण हमारा ॥ टेक ॥
ना मैं पंडित पढ़ि गुणि जाणौं, ना कुछ ज्ञान बिचारा ।
ना मैं आगमी जोतिग जाँणौं, ना मुझ रूप सिंगारा ॥ १ ॥
ना तप मेरे इंद्री निग्रह, ना कुछ तीरथ फिरणा ।
देवल पूजा मेरे नाहीं, ध्यान कछू नहिं धरणा ॥ २ ॥
जोग जुगति कछू नहिं मेरे, ना मैं साधन जाणौं ।
औषधि मूली मेरे नाहीं, ना मैं देस बखानौं[1] ॥ ३ ॥
मैं तो और कछू नहिं जानौं, कहौ और क्या कीजै ।
दादू एक गलित गोबिंद सौं, इहि बिधि प्राण पतीजै ॥ ४ ॥

(२१७)

पीव घरि आवनौं ये, अहो मोहिं भावनौं ते ॥ टेक ॥
मोहन नीकौ री हरी, देखौंगी अंखियाँ भरी ।
राखौं हौं उर धरी प्रीति खरी, मोहन मेरो री माई ।
रहौं हौं चरणौं धाई, आनँद बधाई, हरि के गुण गाई ॥ १ ॥
दादू रे चरण गहिये, जाइ नैं तिहाँ तौ रहिये ॥
तन मन सुख लहिये, बीनती कहिये ॥ २ ॥

(२१८)

अहा माई मेरौ राम बैरागी, तजि जिनि जाइ ॥टेक॥
राम बिनोद करत उर अंतरि, मिलिहौं बैरागनि धाइ ॥ १ ॥
जोगनि ह्वै करि फिरौंगी बिदेसा, राम नाम ल्यौ लाइ ॥ २ ॥
दादू को स्वामी है रे उदासी, रहिहौं नैन दोइ लाइ ॥ ३ ॥

(२१९)

रे मन गोबिंद गाइ रे गाइ, जनम अबिरथा जाइ रे जाइ ॥ टेक ॥
ऐसा जनम न बारंबारा, ता थैं जपि ले राम पियारा ॥ १ ॥
यहु तन ऐसा बहुरि न पावै, ता थैं गोबिंद काहे न गावै ॥ २ ॥

---

(१) न मेरा देश में बखान अर्थात् महिमा है ।

बहुरि न पावै मनिषा देही, ता थैं करि ले राम सनेही ॥ ३ ॥
अब कै दादू किया निहाला । गाइ निरंजन दीनदयाला ॥ ४ ॥

(२२०)

मन रे सोवत रैनि बिहानी, तैं अजहूँ जात न जानी ॥ टेक ॥
बीती रैनि बहुरि नहिं आवै, जीव जागि जिनि सोवै ।
चार्‌यूँ दिसा चोर घर लागे, जागि देख क्या होवै ॥ १ ॥
भोर भये पछितावन लागौ, माहिं महल कुछ नाहीं ।
जब जाइ काल काया करि लागे, तब सोधै घर नाहीं ॥ २ ॥
जागि जतन करि राखौ सोई, तब तन तत्त न जाई ।
चेतनि पहरै[1] चेतत नाहीं, कहि दादू समझाई ॥ ३ ॥

(२२१)

देखत ही दिन आइ गये । पलटि केस सब सेत भये ॥ टेक ॥
आई जुरा मीच अरु मरणा । आया काल अबै क्या करना ॥
स्रवणौं सुरति गई नैन न सूझै । सुधि बुधि नाठी[2] कह्या न बूझै ॥
मुख तें सबद बिकल भइ बाणी । जनम गया सब रैनि बिहाणी ॥
प्राण पुरिस पछितावण लागा । दादू औसर काहे न जागा ॥

(२२२)

हरि बिन हाँ हो कहूँ सचु नाहीं । देखत जाइ बिषै फल खाहीं ॥
रस रसना के मीन मन भीरा[3] । जल थैं जाइ यौं दहै सरीरा ॥
गज के ज्ञान मगन मदि माता । अंकुस डोरि गहै फंद गाता ॥
मरकट मूठी माहिं मन लागा । दुख की रासि भ्रमै भ्रम भागा ॥
दादू देख हरी सुखदाता । ता कौं छाड़ि कहाँ मन राता ॥

(२२३)

साईं बिना संतोष न पावै । भावै घर तजि बन बन धावै ॥
भावै पढ़ि गुनि बेद उचारै । आगम नीगम सबै बिचारै ॥
भावै नव खँड सब फिरि आवै । अजहूँ आगैं काहे न जावै ॥

---

(१) समय । (२) नष्ट हुई । (३) साथ, पच्छ ।

भावै सब तजि रहै अकेला। भाई बंध ना काहू मेला॥
दादू देखै साँईं सोई। साच बिना संतोष न होई॥

(२२४)

मन माया रातौ भूले।
मेरी मेरी करि करि बौरे, कहा मुगध नर फूले॥ टेक॥
माया कारणि मूल गँवावै, समझि देखि मन मेरा।
अंत काल जब आइ पहूँता, कोई नहीं तब तेरा॥ १॥
मेरी मेरी करि नर जाणै, मन मेरी करि रहिया।
तब यहु मेरी कामि न आवै, प्राण पुरिस जब गहिया॥ २॥
राव रंक सब राजा राणा, सबहिन कौं बौरावै।
छत्रपति भूपति तिनहूँ के सँगि, चलती बेर न आवै॥ ३॥
चेति बिचारि जानि जिय अपने, माया संगि न जाई।
दादू हरि भज समझि सयाना, रहौ राम ल्यौ लाई॥ ४॥

(२२५)

रहसी एक उपावणहारा, और चलसी सब संसारा॥ टेक॥
चलसी गगन धरणि सब चलसी, चलसी पवन अरु पाणी।
चलसी चंद सूर पुनि चलसी, चलसी सब उपाणी॥ १॥
चलसी दिवस रैणि भी चलसी, चलसी जुग जमवारा।
चलसी काल ब्याल पुनि चलसी, सलसी सबै पसारा॥ २॥
चलसी सरग नरक भी चलसी, चलसी भूचणहारा[१]।
चलसी सुक्ख दुक्ख भी चलसी, चलसी करम बिचारा॥ ३॥
चलसी चंचल निहचल रहसी, चलसी जे कुछ कीन्हा।
दादू देखु रहै अबिनासी, और सबै घट षीना[२]॥ ४॥

(२२६)

इहि कलि हम मरणे कूँ आये। मरण मीत उन संगि पठाये॥
जब थैं यहु हम मरण बिचारा। तब थैं आगम पंथ सँवारा॥

(१) चाहने वाला। (२) क्षीण, नष्ट।

मरण देखि हम गर्ब न कीन्हा । मरण पठाये सो हम लीन्हा ॥
मरणा मीठा लागै मोहीं । इहि मरणे मीठा सुख होई ॥
मरणे पहिली मरै जे कोई । दादू सो अजरावर होई ॥

(२२७)

रे मन मरणे कहा डराई । आगैं पीछैं मरणा रे भाई ॥टेक॥
जे कुछ आवै थिर न रहाई । देखत सबै चल्या जग जाई ॥
पीर पैगम्बर किया पयाना । सेख मसाइख सबै समाना ॥
ब्रह्मा बिसुन महेस महाबलि । मोटे मुनि जन गये सबै चलि ॥
निहचल सदा सोई मन लाइ । दादू हरखि राम गुण गाइ ॥

(२२८)

ऐसा तत्त अनूपम भाई, मरै न जीवै काल न खाई ॥ टेक ॥
पावकि जरै न मार्‌यो मरई, काट्यौ कटै न टार्‌यौ टरई ॥ १ ॥
आखिर खिरै नहिं लागै काई, सीत घाम जल डूबि न जाई ॥ २ ॥
माटी मिलै न गगन बिलाई, अघट एक रस रह्या समाई ॥ ३ ॥
ऐसा तत्त अनूपम कहिये, सो गहि दादू काहे न रहिये ॥ ४ ॥

(२२९)

मन रे सेवि निरंजनराई, ता कौं सेवो रे चित लाई ॥ टेक ॥
आदि अंतैं सोई उपावै, परलै लेइ छिपाई ।
बिन थंभा जिन गगन रहाया, सो रह्या सबनि में समाई ॥ १ ॥
पाताल माहैं जे आराधै, बासिग[१] रे गुण गाई ।
सहस मुख जिभ्या द्वै ता कै, सो भी पार न पाई ॥ २ ॥
सुर नर जा कौं पार न पावै, कोटि मुनी जन ध्याई ।
दादू रे तन ता कौं है रे, जा कौं सकल लोक आराही[२] ॥ ३ ॥

॥ जीव उपदेश ॥

(२३०)

निरंजन जोगी जानि ले चेला । सकल बियापी रहै अकेला ॥
खपर न झोली डंड अधारी । मठी ना माया लेहु बिचारी ॥

(१) बासुकि नाग । (२) आराधता या पूजता है ।

सींगी मुद्रा बिभूति न कंथा। जटा जाप आसण नहिं पंथा ॥
तीरथ बरत न बनखंड बासा। माँगि न खाइ नहीं जग आसा ॥
अमर गुरू अबिनासी जोगी। दादू चेला महारस भोगी ॥

(२३१)

जोगिया बैरागी बाबा, रहै अकेला उनमनि लागा ॥ टेक ॥
आतमा जोगी धीरज कंथा, निहचल आसण आगम पंथा ॥१॥
सहजैं मुद्रा अलख अधारी, अनहद सींगी रहणि हमारी ॥२॥
काया बनखँड पाँचौं चेला, ज्ञान गुफा में रहै अकेला ॥३॥
दादू दरसन कारनि जागै, निरंजन नगरी भिष्या माँगै ॥४॥

(२३२)

बाबा कहु दूजा क्यौं कहिये, ता थैं इहि संसय दुख सहिये ॥टेक॥
यहु मति ऐसी पसुवा जैसी, काहे चेतत नाहीं।
अपना अंग आप नहिं जानै, देखै दर्पण माहीं ॥ १ ॥
इहि मति मीच मरण के ताईं, कूप सिंघ तहँ आया।
डूबि मुवा मन मरम न जान्या, देखि आपनी छाया ॥ २ ॥
मद के माते समझत नाहीं, मैगल[1] की मति आई।
आपै आप आप दुख दीन्हा, देखि आपणी झाँई ॥ ३ ॥
मन समझै तौ दूजा नाहीं, बिन समझैं दुख पावै।
दादू ज्ञान गुरू का नाहीं, समझि कहाँ थैं आवै ॥ ४ ॥

(२३३)

बाबा नाहीं दूजा कोई,
एक अनेक नाँउ तुम्हारे, मो पैं और न होई ॥ टेक ॥
अलख इलाही एक तूँ, तूँ हीं राम रहीम।
तूँ हीं मालिक मोहना, केसों नाँउ करीम ॥ १ ॥
साँईं सिरजनहार तूँ, तूँ पावन तूँ पाक।
तूँ काइम करतार तूँ, तूँ हरि हाजिर आप ॥ २ ॥

---

(१) मस्त हाथी।

रमिता राजिक एक तूँ, तूँ सारँग सुबहान ।
कादिर करता एक तूँ, तूँ साहिब सुलतान ॥ ३ ॥
अविगत अल्लह एक तूँ, गनी[1] गुसाईं एक ।
अजब अनूपम आप है, दादू नाँउ अनेक ॥ ४ ॥

(२३४)

जीवत मारे मुए जिलाये । बोलत गूँगे गूँग बुलाये ॥ टेक ॥
जागत निस भरि सेई सुलाये । सोवत रैनी सोई जगाये ॥१॥
सुझत नैनहुँ लोय[2] न लीये । अंध बिचारे ता मुखि दीये ॥२॥
चलते भारी ते बिठलाये । अपंग बिचारे सोई चलाये ॥३॥
ऐसा अद्भुत हम कुछ पाया । दादू सतगुर कहि समझाया ॥४॥

(२३५)

क्योंकरि यहु जग रच्यौ गुसाईं । तेरे कौन बिनोद बन्यौ मन माहीं॥
कै तुम्ह आया परगट करणा । कै यहु रचि ले जीव उधरणा ॥
कै यहु तुम्ह कौं सेवग जानै । कै यहु रचि ले मन के मानै ॥
कै यहु तुम्ह कौं सेवग भावै । कै यहु रचि लै खेल दिखावै ॥
कै यहु तुम्ह कौं खेल पियारा । कै यहु भावै कीन्ह पसारा ॥
यहु सब दादू अकथ कहानी । कहि समझावो सारँग प्रानो[3] ॥

———

॥ साखी ज्वाब की ॥

परमारथ कौं सब किया, आप सवारथ नाहिं ।
परमेसुर परमारथी, कै साधू कल माहिं ॥ (१५-५०)
खालिक खेलै खेल करि, बूझै बिरला कोइ ।
ले करि सुखिया ना भया, देकरि सुखिया होइ ॥ (२१-४१)

(२३६)

हरे हरे सकल भवन भरे, जुगि जुगि सब करे ।
जुगि जुगि सब धरै, अकल सकल जरै हरे हरे ॥ टेक ॥

---

(१) धनी । (२) लोक में । (३) एक लिपि और एक पुस्तक के पाठ में "पानो" है ।

सकल भवन छाजै, सकल भुवन राजै, सकल कहै।
धरती अंबर गहै, चंद सूर सुधि लहै, पवन प्रगट बहै ॥ १ ॥
घट घट आप देवै, घट घट आप लेवै, मंडित माया।
जहाँ तहाँ आप राया, जहाँ तहाँ आप छाया, अगम अगम पाया। २।
रस माहैं रस राता, रस माहैं रस माता, अमृत पीया।
नूर माहैं नूर लीया, तेज माहैं तेज कीया, दादू दरस दीया ॥ ३ ॥

(२३७)

पीव पीव आदि अंत पीव।
परसि परसि अंग संग, पीव तहाँ जीव ॥ टेक ॥
मन पवन भवन गवन, प्राण कँवल माहिं।
निधि निवास बिधि बिलास, राति दिवस नाहिं ॥ १ ॥
साँस बास आस पास, आत्म अँगि लगाइ।
ऐन बैन निरखि नैन, गाइ गाइ रिझाइ ॥ २ ॥
आदि तेज अंति तेज, सहजि सहजि आइ।
आदि नूर अंति नूर, दादू बलि बलि जाइ ॥ ३ ॥

(२३८)

नूर नूर अव्वल आखिर नूर,
दाइम काइम, काइम दाइम, हाजिर है भरपूर ॥ टेक ॥
असमान नूर जिमीं नूर, पाक परवरदिगार।
आब नूर, बाद नूर, खूब खूबाँ यार ॥ १ ॥
जाहिर बातिन, हाजिर नाजिर, दाना तूँ दीवान।
अजब अजाइब नूर दीदम, दादू है हैरान ॥ २ ॥

(२३९)

मैं अमली मतिवाला माता। प्रेम मगन मेरा मन राता ॥
अमी महारस भरि भरि पीवै। मन मतिवाला जोगी जीवै ॥
रहै निरंतर गगन मँझारी। प्रेम पियाला सहजि खुमारी ॥
आसणि अवधू अमृतधारा। जुग जुग जीवै पीवनहारा ॥

दादू अमली इहि रस माते । राम रसाइन पीवत छाके ॥

(२४०)[1]

सुख दुख संसा दूरि किया । तब हम केवल राम लिया ॥
सुख दुख दोऊ भरम बिचारा । इन सौं बध्या है जग सारा ॥
मेरी मेरा सुख के ताईं । जाइ जनम नर चेतै नाहीं ॥
सुख के ताईं झूठा बोलै । बाँधे बंधन कबहुँ न खोलै ॥
दादू सुख दुख संगि न जाई । प्रेम प्रीति पिव सौं ल्यो लाई ॥

(२४१)

का सौं कहूँ हो अगम हरि बाता । गगन धरणि दिवस नहिं राता ॥
संग न साथी गुरू न चेला । आसन पास यूँ रहै अकेला ॥
बेद न भेद न करत बिचारा । अबरण बरण सबनि थैं न्यारा ॥
प्राण न प्यंड रूप नहिं रेखा । सोइ तत सार नैन बिन देखा ॥
जोग न भोग मोह नहिं माया । दादू देखु काल नहिं काया ॥

(२४२)

मेरा गुर ऐसा ज्ञान बतावै ।
काल न लागै संसा भागै, ज्यूँ है त्यूँ समझावै ॥ टेक ॥
अमर गुरू के आसन रहिये, परम जोति तहँ लहिये ।
परम तेज सो दिढ़ करि गहिये, गहिये लहिये रहिये ॥ १ ॥
मन पवना गहि आतम खेला, सहज सुन्नि घर मेला ।
अगम अगोचर आप अकेला, अकेला मेला खेला ॥ २ ॥
धरती अंबर चंद न सूरा, सकल निरंतर पूरा ।
सबद अनाहद बाजहि तूरा, तूरा पूरा सूरा ॥ ३ ॥
अबिचल अमर अभय पद दाता, तहाँ निरंजन राता ।
ज्ञान गुरू ले दादू माता, माता राता दाता ॥ ४ ॥

(२४३)

मेरा गुरु आप अकेला खेलै ।
आपै देवै आपै लेवै, आपै द्वै कर मेलै ॥ टेक ॥

(१) यह शब्द एक लिपि और एक पुस्तक में नहीं है ।

आपै आप उपावै माया, पंच तत्त करि काया।
जीव जनम ले जग में आया, आया काया माया ॥ १ ॥
धरती अंबर महल उपाया, सब जग धंधै लाया।
आपै अलख निरंजन राया, राया लाया उपाया ॥ २ ॥
चंद सूर दोइ दीपक कीन्हा, राति दिवस करि लीन्हा।
राजिक रिजक सबनि कौं दीन्हा, दीन्हा लीन्हा कीन्हा ॥ ३ ॥
परम गुरू सो प्राण हमारा, सब सुख देवै सारा।
दादू खेलै अनत अपारा, अपारा सारा हमारा ॥ ४ ॥

(२४४)

थकित भयौ मन कह्यौ न जाई। सहजि समाधि रह्यौ ल्यौ लाई ॥टेक॥
जे कुछ कहिये सोचि बिचारा। ज्ञान अगोचर अगम अपारा ॥१॥
साइर बूँद कैसैं करि तोलै[1]। आप अबोल कहा कहि बोलै ॥२॥
अनल पंख परे परि दूरि। ऐसैं राम रह्या भरपूरि ॥३॥
इब मन मेरा ऐसैं रे भाई। दादू कहिबा कहण न जाई ॥४॥

(२४५)

अविगत की गति कोइ न लहै। सब अपना उनमान कहै ॥ टेक ॥
केते ब्रह्मा बेद बिचारैं, केते पंडित पाठ पढ़ैं।
केते अनभै आतम खोजैं, केते सुर नर नाँव रटैं ॥ १ ॥
केते ईसुर आसणि बैठे, केते जोगी ध्यान धरैं।
केते मुनियर मन कूँ मारैं, केते ज्ञानी ज्ञान करैं ॥ २ ॥
केते पीर केते पैगंबर, केते पढ़ैं कुराना।
केते काजी केते मुल्ला, केते सेख सयाना ॥ ३ ॥
केते पारिख अंत न पावैं, वार पार कुछ नाहीं।
दादू कीमति कोइ न जानै, केते आवैं जाहीं ॥ ४ ॥

(२४६)

ये हौं बूझि रही पिव जैसा, तैसा कोइ न कहै रे।
अगम अगाध अपार अगोचर, सुधि बुधि कोइ न लहै रे ॥टेक॥

(१) बूँद समुद्र की तौल क्या कर सकती है।

वार पार कोइ अंत न पावै, आदि अंत मधि नाहीं रे।
खरे सयाने भये दिवाने, कैसा कहाँ रहावै रे॥१॥
ब्रह्मा बिसुन महेसुर बूझै, केता कोई बतावै रे।
सेख मसाइख पीर पैगंबर, है कोइ अगह गहै रे॥२॥
अंबर धरती सूर ससि बूझै, बाव बरण सब साधै रे।
दादू चकित है हैराना, को है करम दहै रे॥३॥

(२४७)

॥ राग सींधड़ी ॥

हंस सरोवर तहँ रमैं, सूभर हरि जल नीर।
प्राणी आप पखालिये, निर्मल सदा हो सरीर॥ टेक॥
मुकताहल मन मानिया, चूगै हंस सुजान।
मद्धि निरंतर झूलिये, मधुर बिमल रस पान॥ १॥
भँवर कँवल रस बासना, रातौ राम पीवंत।
अरस परस आनँद करै, तहँ मन सदा होइ जीवंत॥ २॥
मीन मगन माहैं रहै, मुदित सरोवर माहिं।
सुख सागर क्रीला[1] करै, पूरण परमिति नाहिं॥ ३॥
निरभय तहँ भय को नहीं, बिलसै बारंबार।
दादू दरसन कीजिये, सनमुख सिरजनहार॥ ४॥

(२४८)

सुख सागर में झूलिबौ, कुसमल झड़ै हो अपार।
निर्मल प्राणी होइबौ, मिलिबौ सिरजनहार॥ टेक॥
तिहि संजमि पावन सदा, पंक न लागै प्रान।
कँवल बिगासै तिहिं तणौं, उपजै ब्रह्म गियान॥ १॥
अगम निगम तहँ गमि करै, तत्तैं तत्त मिलान।
आसणि गुर कै आइबौ, मुकतैं महल समान॥ २॥
प्राणी परिपूजा करै, पूरे प्रेम बिलास।
सहजैं सुंदर सेविये, लागी लै कविलास॥ ३॥

(१) क्रीड़ा।

रैणि दिवस दीसै नहीं, सहजैं पुंज प्रकास।
दादू दरसन देखिये, इहि रस रातौ हो दास ॥ ४ ॥

(२४९)

अविनासी संगि आतमा, रमै हो रैणि दिन राम।
एक निरंतर ते भजै, हरि हरि प्राणी नाम ॥ टेक ॥
सदा अखंडित पुरि बसै, सो मन जाणी ले।
सकल निरंतर पूरि सब, आतम रातौ ते ॥ १ ॥
निराधार निज बैसणौ, जिहि तति आसण पूरि।
गुर सिष आनँद ऊपजे, सनमुख सदा हजूरि ॥ २ ॥
निहचल ते चालै नहीं, प्राणी ते परिमाण।
साथी साथैं ते रहैं, जाणैं जाण सुजाण ॥ ३ ॥
ते निरगुण आगुण धरी, माहैं कौतिगहार।
देह अछत अलगौ रहै, दादू सेवि अपार ॥ ४ ॥

(२५०)

पारब्रह्म भजि प्राणिया, अविगत एक अपार।
अविनासी गुर सेविये, सहजैं प्राण अधार ॥ टेक ॥
ते पुर प्राणी तेहनौ, अविचल सदा रहंत।
आदि पुरिस ते आपणौ, पूरण परम अनंत ॥ १ ॥
अविगत आसण कीजिये, आपैं आप निधान।
निरालंब भजि तेहनौ, आनँद आतम राम ॥ २ ॥
निरगुण निहचल थिर रहै, निराकार निज सोइ।
ते सति प्राणी सेविये, लै समाधि रति होइ ॥ ३ ॥
अमर आप रमिता रमै, घटि घटि सिरजनहार।
गुण अतीत भजि प्राणिया, दादू येहु बिचार ॥ ४ ॥

(२५१)

क्यौं भाजै सेवग तेरा, ऐसा सिरि साहिब मेरा ॥ टेक ॥
जाके धरती गगन अकासा, जाके चंद सूर कविलासा।
जाके तेज पवन जल साजा, जाके पंच तत्त के बाजा ॥ १ ॥

जाके अठार भार बनमाला, गिरि पर्बत दीनदयाला ।
जाके साइर अनँत तरंगा, जाके चौरासी लख संगा ॥ २ ॥
जाके ऐसे लोक अनंता, रचि राखे विधि बहु भंता ।
जाके ऐसा खेल पसारा, सब देखै कौतिगहारा ॥ ३ ॥
जाके काल मीच डर नाहीं, सो बरति रह्या सब माहीं ।
मनि भावै खेलै खेला, ऐसा है आप अकेला ॥ ४ ॥
जाके ब्रह्मा ईसुर बंदा, सब मुनिजन लागे अंगा ।
जाके साध सिद्ध सब माहीं, परिपूरण परिमित नाहीं ॥ ५ ॥
सोइ भानै घड़ै सँवारै, जुग केते कबहुँ न हारै ।
ऐसा हरि साहिब पूरा, सब जीवन आतम मूरा ॥ ६ ॥
सो सबहिन की सुधि जानै, जो जैसा तैसी बानै ।
सर्बंगी राम सयाना, हरि करै सो होइ निदाना ॥ ७ ॥
जे हरिजन सेवग भाजै, तौ ऐसा साहिब लाजै ।
अब मरण माँडि हरि आगै, तौ दादू बाण न लागै ॥ ८ ॥

(२५२)

हरि भजताँ किमि भाजिये, भाजें भल नाहीं ।
भागें भल क्यूँ पाइये, पछितावै माहीं ॥ टेक ॥
सूरौ सो सहजैं भिड़ै, सार उर झेलै ।
रण रोकै भाजै नहीं, ते मान[1] न मेलै ॥ १ ॥
सती सत्त साचा गहै, मरणै न डराई ।
प्राण तजै जग देखताँ, पियड़ो[2] उर लाई ॥ २ ॥
प्राण पतंगा यौं तजै, वो अंग न मोड़ै ।
जोबन मारै जोति सूँ, नैना भल जोड़ै ॥ ३ ॥
सेवग सो स्वामी भजै, तन मन तजि आसा ।
दादू दरसन ते लहै, सुख संगम पासा ॥ ४ ॥

(१) एक पुस्तक में "बान" है—"मेलै" का अर्थ त्यागै है इसलिए "मान" ही का पाठ ठीक जान पड़ता है । (२) पति ।

(२५३)

सुणि तूँ मना रे, मूरिख मूढ़ विचार ॥ टेक ॥
आवै लहरि विहावणी, दवै देह अपार ॥ १ ॥
करिबौ है तिमि कीजिये रे, सुमिरि सो आधार ॥ २ ॥
चरण बिहूणो चालिबौ रे, संभारी ले सार ॥ ३ ॥
दादू ते हजि[1] लीजिये रे, साचौ सिरजनहार ॥ ४ ॥

(२५४)

रे मन साथी माहरा, तूँ समझायौ कइ बारो[2] रे ।
रातौ रंग कसुंभ के, तैं बीसार्‍यो आधारो रे ॥ टेक ॥
सुपिना सुख के कारणे, फिरि पीछैं दुख होई रे ।
दीपक दृष्टि पतंग ज्यूँ, यूँ भर्मि जलै जिनि कोई रे ॥ १ ॥
जिभ्या स्वारथि आपणे, ज्यूँ मीन मरै तजि नीरो रे ।
माहैं जाल न जाणियौ, ता थैं उपनौ[3] दुक्ख सरीरो रे ॥ २ ॥
स्वादैंही संकुटि[4] पर्‍यौ, देखत हीं नर अंधो रे ।
मूरिख मूठी छाड़ि दे, होइ रहो निरबंधो रे ॥ ३ ॥
मानि सिखावणि माहरी, तूँ हरि भज मूल न हारी रे ।
सुख सागर सोइ सेविये, जन दादू राम सँभारी रे ॥ ४ ॥

॥ राग देवगंधार ॥

(२५५)

सरणि तुम्हारी आइ परे ।
जहाँ तहाँ हम सब फिरि आये, राखि राखि[5] हम दुखित खरे ॥
कसि कसि काया तप ब्रत करि करि, भ्रमत भ्रमत हम भूलि परे ।
कहुँ सीतल कहुँ तपति देह तन, कहुँ हम करवत[6] सीस धरे ॥
कहुँ बन तीरथ फिरि फिरि थाके, कहुँ गिरि परबत जाइ चढ़े ।
कहूँ सिखिर चढ़ि परे धरणि पर, कहुँ हति आपा प्राण हरे ॥

(१) भजि । (२) कई बार । (३) उत्पन्न हुआ । (४) कष्ट । (५) रक्षा कर । (६) आरा ।

अंध भये हम निकटि न सूझै, ता थैं तुम्ह तजि जाइ जरे ।
हाहा हरि अब दीन लीन करि, दादू बहु अपराध भरे ॥

(२५६)

बौरी तूँ बार बार बौरानी ।
सखी सुहाग न पावै ऐसैं, कैसैं भरमि भुलानी ॥ टेक ॥
चरनौं चेरी चित नहिं राख्यौ, पतिव्रत नाहिन जान्यौ ।
सुंदर सेज संगि नहिं जाने, पिव सूँ मन नहिं मान्यौ ॥१॥
तन मन सबै सरीर न सौंप्यौ, सीस नाइ नहिं ठाढ़ी ।
इकरस प्रीति रही नहिं कबहूँ, प्रेम उमँग नहिं बाढ़ी ॥२॥
प्रीतम अपनौ परम सनेही, नैंन निरखि न अघानी ।
निसबासुर आनि उर अंतर, परम पूजि नहिं जानी ॥३॥
पतिव्रत आगैं जिनि जिनि पाल्यो, संदरि तिनि सब छाजे ।
दादू पिव बिन और न जानै, ताहि सुहाग बिराजै ॥४॥

(२५७)

मन मूरिखा तैं यौंहीं जनम गँवायौ ।
साँईं केरी सेवा न कीन्ही, इहि कलि काहे कूँ आयौ ॥ टेक ॥
जिन बातन तेरो छूटिक नाहीं, सोई मन तेरे भायौ ।
कामी ह्वै बिषिया सँग लाग्यौ, रोम रोम लपटायौ ॥१॥
कुछ इक चेति बिचारी देखौ, कहा पाप जिय लायौ ।
दादूदास भजन करि लीजे, सुपने जग डहकायौ ॥२॥

॥ राग कान्हरा ॥

(२५८)

वाल्हा हूँ थारी, तूँ म्हारो नाथ । तुम सूँ पहली प्रीतड़ी पूरबलौ साथ ॥
वाल्हा मैं हूँ थारो ओलसियो[१] रे, राखिस[२] तूँनैं रिदा मँझारि ॥
हूँ पामूँ[३] पीव आपणों रे, त्रिभुवन दाता देव मुरारि ॥
वाल्हा मन म्हारे मन माहें राखिस, आतम एक निरंजन देव ॥

---

(१) इहसानमंद । (२) रक्खूँगा । (३) पाऊँ ।

चित माहैं चित सदा निरंतर, येणी पेरें[1] थारी सेव ॥
वाल्हा भाव भगति हरि भजन तिहारो। प्रेमैं पूरिसि कँवल बिगास॥
अभि अंतरि आनँद अबिनासी। दादू नी एवैं[2] पुरवी आस ॥

(२५९)

बार बार कहूँ रे घेला, राम नाम काँइ बिसारचौ रे।
जनम अमोलिक पामियो[3], एह्वो[4] रतन काँ[5] हारचौं रे ॥ टेक॥
बिषिया वाह्यौं[6] नें तहँ धायो, कीधूँ[7] नहिं म्हारूँ वारचूँ[8] रे।
माया धन जोई[9] नें भूल्यो, सर्बथ[10] येणें[11] हारचूँ रे ॥१॥
गर्भबास देह ह्वै पामी, आस्रम तेह सँभारचौ रे।
दादू रे जन राम भणीजै, नहिं तो जथा बिधि हारचौ[12] रे ॥२॥

॥ राग परज ॥

(२६०)

नूर रह्या भरपूर, अमी रस पीजिये।
रस माहैं रस होइ, लाहा लीजिये ॥ टेक॥
परगट तेज अनंत, पार नहिं पाइये।
झिलिमिलि झिलिमिलि होइ, तहाँ मन लाइये ॥ १ ॥
सहजैं सदा प्रकास, जोति जल पूरिया।
तहाँ रहै निजदास, सेवग सूरिया ॥ २ ॥
सुख-सागर वार न पार, हमारा बास है।
हंस रहैं ता माहिं, दादू दास है ॥ ३ ॥

॥ राग भाँणमली ॥

(२६१)

म्हारा वाल्हा रे थारे सरण रहीस।
बिनंतड़ी वाल्हानें कहताँ, अनंत सुक्ख लहीस ॥ टेक॥

---

(१) इस रीति से। (२) ऐसे। (३) पाया। (४) ऐसा। (५) काहे। (६) सींचा। (७) किया। (८) मने किया हुआ। (९) देख कर। (१०) सर्वस्व। (११) इस ने। (१२) गर्भ बास करके देह अब पाई उसी आश्रम को सम्हालो दादू कहते हैं कि हे जन राम को भजो नहीं तो सब प्रकार से हारे हो।

स्वामी तणौं[१] हूँ संग न मेलूँ[२], बीनंतडी[३] कहीस।
हूँ अबला तूँ बलिवंत राजा, थारा विना वहीस[४] ॥ १ ॥
संग रहूँ ताँ[५] सब सुख पामूँ, अंतर थई दहीस[६]।
दादू ऊपर दया करीनै, आवो आणी वेस[७] ॥ २ ॥

(२६२)

चरण देखाड़ तो परमाण।
स्वामी म्हारे नैणौं निरखूँ, माँगूँ येज[८] मान ॥टेक॥
जोवूँ[९] तुझ नें आसा मुझ नें, लागूँ येज ध्यान।
वाल्हो म्हारो भला रे रहिये, आवै केवल ज्ञान ॥ १ ॥
जेणी पेरें हूँ देखूँ तुझ नें, मुझ नें आलौं[१०] जाण[११]।
पीव तणीं हूँ पर नहिं जाणूँ,[१२] दादू रे अजाण ॥ २ ॥

(२६३)

ते हरि मलूँ[१३] म्हारो नाथ, जोवा नें[१४] म्हारो तन तपै।
केवी पेरें[१५] पामूँ साथ ॥ टेक ॥
ते कारणि हूँ आकुल व्याकुल, ऊभी[१६] करूँ बिलाप।
स्वामी म्हारो नैणौं निरखूँ, ते तणों[१७] मने ताप ॥ १ ॥
एक बार घर आवे वाल्हा, नव मेलूँ कर हाथ[१८]।
ये बिनती साँभल[१९] स्वामी, दादू थारो दास ॥ २ ॥

(२६४)

ते केम पामिये रे, दुर्लभ जे आधार।
ते बिना तारण को नहीं, केम उतरिये पार ॥ टेक ॥
केवी पेरें कीजे आपणो रे, तत्व ते छे सार।
मन मनोरथ पूरे म्हारा, तन नों ताप निवार ॥ १ ॥

---

(१) का। (२) छोड़ूँ। (३) बिनती। (४) बह जाऊँगी। (५) वहाँ। (६) जुदा होकर जल जाऊँगी। (७) आओ इस तरफ। (८) यही। (९) राह देखूँ। (१०) देव। (११) ज्ञान। (१२) मैं पीव ही की हूँ और को नहीं जानती। (१३) मिलूँ। (१४) दर्शन को। (१५) किस रीति से। (१६) खड़ी। (१७) तिसका। (१८) हाथ से हाथ न छोड़ूँ। (१९) सुन।

संभार्‌यो[1] आवे रे वाल्हा, वेलाये अवार[2]।
बिरहणी बिलाप करे, तेम[3] दादू मने बिचार ॥ २ ॥

॥ राग सारंग ॥

(२६५)

हो ऐसा ज्ञान ध्यान, गुर बिना क्यों पावे।
वार पार पार वार, दूतर[4] तिरि आवे हो ॥ टेक ॥
भवन गवन गवन भवन, मनहीं मन लावे।
रवन छवन छवन रवन, सतगुर समझावे हो ॥ १ ॥
खीर नीर नीर खीर, प्रेम भगति भावे।
प्राण कँवल बिगसि बिगसि, गोबिंद गुण गावे हो ॥ २ ॥
जोति जुगति बाट घाट, लै समाधि धावे।
परम नूर परम तेज, दादू दिखलावे हो ॥ ३ ॥

(२६६)

तौ निबहै जन सेवग तेरा, ऐसैं दया करि साहिब मेरा ॥ टेक ॥
ज्यूँ हम तोरैं त्यूँ तूँ जोरै, हम तोरैं पै तूँ नहिं तोरै ॥१॥
हम बिसरैं पै तूँ न बिसारै, हम बिगरैं पै तूँ न बिगारै ॥२॥
हम भूलैं तूँ आनि मिलावै, हम बिछुरैं तू अंगि लगावै ॥३॥
तुम भावै सो हम पै नाहीं, दादू दरसन देहु गुसाईं ॥४॥

(२६७)

माया संसार की सब झूठी।
माता पिता सब ऊभे[5] भाई, तिनहिं देखताँ लूटी ॥ टेक ॥
जब लग जीव काया में था रे, खिण बैठी खिण ऊठी।
हंस जु था सो खेलि गया रे, तब थैं संगति छूटी ॥ १ ॥
ये दिन पूगे[6] आव घटानी, तब निच्यंत होइ सूती।
दादूदास कहै ऐसि काया, जैसि गगरिया फूटी ॥ २ ॥

---

(१) सँभाल। (२) देर सवेर। (३) वैसे। (४) जो तैरने योग्य नहीं है; भारी। (५) खड़े। (६) पहुँचे।

(२६८)

ऐसैं गृह में क्यूँ न रहै, मनसा बाचा राम कहै ॥ टेक॥
संपति बिपति नहीं मैं मेरा, हरिष सोक दोइ नाहीं।
राग दोष रहित सुख दुख थैं, बैठा हरि पद माहीं ॥ १ ॥
तन धन माया मोह न बाँधै, बैरी मीत न कोई।
आपा पर समि रहै निरंतर, निज जन सेवग सोई ॥ २ ॥
सरवर कवल रहै जल जैसैं, दधि मथि घृत करि लीन्हा।
जैसैं बन में रहै बटाऊ, काहू हेत न कीन्हा ॥ ३ ॥
भाव भगति रहै रसि माता, प्रेम मगन गुन गावै।
जीवत मुकत होइ जन दादू, अमर अभै पद पावै ॥ ४ ॥

(२६९)

चल चल रे मन तहाँ जाइये।
चरण बिन चलिबौ, स्रवण बिन सुनिबौ, बिन कर बैन बजाइये ॥
तन नाहीं जहँ, मन नाहीं तहँ, प्राण नहीं तहँ आइये।
सबद नहीं जहँ, जीव नहीं तहँ, बिन रसना मुख गाइये ॥ १ ॥
पवन पावक नहीं, धरणि अंबर नहीं, उभै नहीं तहँ लाइये।
चंद नहीं जहँ, सूर नहीं तहँ, परम जोति सुख पाइये ॥ २ ॥
तेज पुंज सो सुख का सागर, झिलिमिलि नूर नहाइये।
तहँ चालि दादू अगम अगोचर, ता में सहज समाइये ॥ ३ ॥

॥ राग टोडी ॥

(२७०)

सो तत सहजैं सुखमण कहणा, साच पकड़ि मन जुगि जुगि रहणा॥
प्रेम प्रीति करि नीका राखै, बारंबार सहजि नर भाखै ॥१॥
मुखि हिरदै सो सहजि सँभारै, तिहिं तत रहणा कदे न बिसारै ॥२॥
अंतरि सोई नीका जाणै, निमिष न बिसरै ब्रह्म बखाणै ॥३॥
सोई सुजाण सुधा रस पीवै, दादू देखु जुगि जुगि जीवै ॥४॥

(२७१)

नाँउ रे नाँउ रे, सकल सिरोमणि नाँउ रे, मैं बलिहारी जाउँ रे ॥टेक॥
दूतर तारे पार उतारे, नरक निवारे नाँउ रे ॥ १ ॥
तारणहारा भौजल पारा, निर्मल सारा नाँउ रे ॥ २ ॥
नूर दिखावै तेज मिलावै, जोति जगावै नाँउ रे ॥ ३ ॥
सब सुख दाता अमृत राता, दादू माता नाँउ रे ॥ ४ ॥

(२७२)

राइ रे राइ रे सकल भुवनपति राइ रे, अमृत देहु अघाइ रे राइ ॥
परगट राता परगट माता, परगट नूर दिखाइ रे राइ ॥
इस्थिर ज्ञाना इस्थिर ध्याना, इस्थिर तेज मिलाइ रे राइ ॥
अबिचल मेला अबिचल खेला, अबिचल जोति समाइ रे राइ ॥
निहचल बैना निहचल नैना, दादू बलि बलि जाइ रे राइ ॥

(२७३)

हरि रस माते मगन भये।
सुमिरि सुमिरि भये मतवाले, जामण मरण सब भूलि गये ॥ टेक ॥
निर्मल भगति प्रेम रस पीवैं, आन न दूजा भाव धरैं।
सहजैं सदा राम रँगि राते, मुकति बैकुंठैं कहा करैं ॥ १ ॥
गाइ गाइ रस लीन भये हैं, कछू न माँगैं संत जनाँ।
और अनेक देहु दत आगैं, आन न भावै राम बिनाँ ॥ २ ॥
इकटग ध्यान रहैं ल्यौ लागे, छाकि परे हरि रस पीवैं।
दादू मगन रहैं रसि माते, ऐसैं हरि के जन जीवैं ॥ ३ ॥

(२७४)

ते मैं कीधला[1] रामजी, जे तैं वारचा[2] ते।
मारग मेल्हि[3] अमारग अणसरि[4], अकरम करम हरे[5] ॥ टेक ॥
साधू कौ सँग छाड़ीनैं, असंगति अणसरियौं।
सुकिरत मूकी[6] अविद्या साधी, बिषिया बिस्तरियौं ॥ १ ॥

(१) किया। (२) बरजा। (३) छोड़ कर। (४) अंगीकार किया। (५) कुकर्म लेकर सुकर्म छोड़े। (६) छोड़ कर।

आन[१] कह्यौ आन साँभलियौ,[२] नैणौं आन दीठौ।
अमृत कड़वो बिष हम लागो, खाताँ अति मीठो॥ २॥
राम रिदा थैं बिसारी, मैं माया मन दीधो।
पाँचे प्राणी[३] गुरमुखि बरज्या, ते दादू कीधो॥ ३॥

(२७५)

कहौ क्यौं जन जीवै साँइयाँ, दे चरण कँवल आधार हो।
डूबत है भौसागरा, कारी[४] करौ करतार हो॥ टेक॥
मीन मरै बिन पाणियाँ, तुम बिन येह बिचार हो।
जल बिन कैसैं जीवहीं, इब तौ किती इक बार हो॥ १॥
ज्यौं परै पतंगा जोति माँ, देखि देखि निज सार हो।
प्यासा बूँद न पावई, तब बनि बनि करै पुकार हो॥ २॥
निस दिन पीर पुकारही, तन की ताप निवारि हो।
दादू बिपति सुनावही, करि लोचन सनमुख चारि हो॥ ३॥

(२७६)

तूँ साँचा साहिब मेरा।
कर्म करीम कृपाल निहारो, मैं जन बंदा तेरा॥ टेक॥
तुम दीवान सबहिन की जानौ, दीनानाथ दयाल।
दिखाइ दीदार मौज[५] बंदे कौं, काइम करौ निहाल॥ १॥
मालिक सबै मुलिक के साँईं, समरथ सिरजनहारा।
खैर खुदाइ खलक में खेलत, दे दीदार तुम्हारा॥ २॥
मैं सिकस्ता[६] दरगह तेरी, हरि हजूर तूँ कहिये।
दादू द्वारे दीन पुकारै, काहे न दरसन लहिये॥ ३॥

(२७७)

कुछ चेति रे कहि क्या आया।
इन में बैठा फूलि करि, तैं देखी माया॥ टेक॥

---

(१) दूसरा, और। (२) सुना। (३) पंच दूत। (४) कार्य। (५) दया। (६) टूटा हुआ, खस्ता-हाल।

तूँ जिनि जानै तन धन मेरा, मूरिख देखि भुलाया।
आज कालि चलि जावै देही, ऐसी सुन्दर काया ॥ १ ॥
राम नाम निज लीजिये, मैं कहि समझाया।
दादू हरि की सेवा कीजै, सुन्दर साज मिलाया ॥ २ ॥

(२७८)

नेटि[1] रे माटी में मिलना।
मोड़ि मोड़ि देही काहे कौं चलना ॥ टेक ॥
काहे कौं अपना मन डुलावै, यहु तन अपना नीका धरना।
कोटि बरस तूँ काहे न जीवै, बिचारि देखि आगैं है मरना ॥१॥
काहे न अपनी बाट सँवारै, सँजमि रहना सुमिरण करणा।
गहिला दादू गर्ब न कीजै, यहु संसार पंच दिन भरणा ॥२॥

(२७९)

जाइ रे तन जाइ रे, जनम सुफल करि लेहु राम रमि।
सुमिरि सुमिरि गुन गाइ रे ॥ टेक ॥
नर नारायण सकल सिरोमणि, जनम अमोलिक आहि रे।
सो तन जाइ जगत नहिं जानै, सकहि त ठाहर लाइ रे ॥१॥
जुरा काल दिन जाइ गरासै, ता सौं कुछ न बसाइ रे।
छिन छिन छीजत जाइ मुगध नर, अंत काल दिन आइ रे ॥२॥
प्रेम भगति साध की संगति, नाँव निरंतर गाइ रे।
जे सिरि भागतो सौंज[2] सुफल करि, दादू बिलँब न लाइ रे ॥३॥

(२८०)

काहे रे बकि मूल गँवावै। राम के नाँइ भलैं सचु पावै ॥टेक॥
बाद बिबाद न कीजै लोई। बाद बिबाद न हरि रस होई ॥१॥
मैं तैं मेरी मानै नाहीं। मैं तैं मेटि मिलै हरि माहीं ॥२॥
हारि जीति सौं हरि रस जाई। समझि देखि मेरे मन भाई ॥३॥
मूल न छाड़ी दादू बौरे। जिनि भूलै तूँ बकिबे औरे ॥४॥

(१) निश्चय करके। (२) सेवा।

(२८१)

हुसियार हाकिम न्याव है, साईं के दीवान।
कुल का हसेब होइगा, समझि मूसलमान ॥ टेक ॥
नीयत नेकी सालिहाँ[१], रास्ताँ[२] ईमान।
इखलास अंदर आपणै, रखणा सुबहान ॥ १ ॥
हुक्म हाजिर होइ बाबा, मुसलम मिहरबान।
अकल सेती आप माँ, सोधि लेहु सुजान ॥ २ ॥
हक सौं हजूरी होणा, देखणा करि ज्ञान।
दोस्त दाना दीन का, मनना फुरमान ॥ ३ ॥
गुस्सा हैवानी दूरि कर, छाड़ि दे अभिमान।
दुई दरोगाँ[३] नाहिं खुसियाँ, दादू लेहु पिछान ॥ ४ ॥

(२८२)

निर्पख रहणा राम राम कहणा। काम क्रोध में देह न दहणा ॥
जेणैं मारग संसार जाइला। तेणैं प्राणी आप बहाइला ॥
जे जे करणी जगत करीला। सो करणी संत दूरि धरीला ॥
जेणैं पंथैं लोक राता। तेणैं पंथैं साध न जाता ॥
राम राम दादू ऐसैं कहिये। राम रमत रामहिं मिलि रहिये ॥

(२८३)

हम पाया हम पाया रे भाई। भेष बनाइ ऐसी मनि आई ॥
भीतर का यहु भेद न जानै। कहै सुहागनि क्यूँ मन मानै ॥
अंतर पीव सौं परचा नाहीं। भई सुहागनि लोगन माहीं ॥
साँईं सुपिनै कबहुँ न आवै। कहिबा ऐसैं महल बुलावै ॥
इन बातन मोहिं अचिरज आवै। पटम[४] कियें पिव कैसैं पावै ॥
दादू सुहागनि ऐसैं कोई। आपा मेटि राम रत होई ॥

(२८४)

ऐसैं बाबा राम रमीजै, आतम सौं अंतर नहिं कीजै ॥ टेक ॥

---

(१) सज्जन। (२) सत्यवादी। (३) झूठ। (४) पाखंड।

जैसैं आतम आपा लेखै, जीव जंत ऐसैं करि पेखै ॥ १ ॥
एक राम ऐसैं करि जानै, आपा पर अंतर नहिं आनै ॥ २ ॥
सब घटि आतम एक बिचारै, राम सनेही प्राण हमारै ॥ ३ ॥
दादू साची राम सगाई, ऐसा भाव हमारे भाई ॥ ४ ॥

(२८५)

माधइयो माधइयौ मीठौ री माइ । माहवौ माहवौ भेटियौ आइ ॥
कान्हइयो कान्हइयौ करताँ जाइ । केसवौ केसवौ केसवौ धाइ ॥
भूधरौ भूधरौ भूधरौ भाइ । रामइयौ रामइयौ रह्यौ समाइ ॥
नरहरि नरहरि नरहरि राइ । गोबिंदौ गोबिंदौ दादू गाइ ॥

(२८६)

एकहि एकैं भया अनंद, एकहि एकैं भागे दंद ॥टेक॥
एकहि एकैं एक समान, एकहि एकैं पद निर्बान ॥ १ ॥
एकहि एकैं त्रिभुवन सार, एकहि एकैं अगम अपार ॥ २ ॥
एकहि एकैं निर्भै होइ, एकहि एकैं काल न कोइ ॥ ३ ॥
एकहि एकैं घट परकास, एकहि एक निरंजन बास ॥ ४ ॥
एकहि एकैं आपहि आप, एकहि एकैं माइ न बाप ॥ ५ ॥
एकहि एकैं सहज सरूप, एकहि एकैं भये अनूप ॥ ६ ॥
एकहि एकैं अनत न जाइ, एकहि एकैं रह्या समाइ ॥ ७ ॥
एकहि एकैं भये लैलीन, एकहि एकैं दादू दीन ॥ ८ ॥

(२८७)

आदि है आदि अनादि मेरा । संसार सागर भगति भेरा[१] ।
आदि है अंति है अंति है आदि है, बिड़द तेरा ॥ टेक ॥
काल है भाल है भाल है काल है, राखि ले राखि ले प्राण घेरा ॥
जीव का जनम का, जनम का जीव का । आपही आप ले भानि भेरा[२] ॥
भर्म का कर्म का कर्म का भर्म का । आइबा जाइबा मेटि फेरा ॥
तारिले पारिले पारिले तारिले । जीव सौं सीव है निकटि नेरा ॥

(१) बेड़ा, नाव । (२) झगड़ा तोड़ दे ।

आतमा राम है, राम है आतमा। जोति है जुगति सौं करौ मेला ॥
तेज है सेज है, सेज है तेज है। एक रस दादू खेल खेला ॥

(२८८)

सुन्दर रामराया परम ज्ञान परम ध्यान, परम प्राण आया ॥टेक॥
अकल सकल अति अनूप, छाया नहिं माया।
निराकार निराधार, वार पार न पाया ॥ १ ॥
गंभीर धीर निधि सरीर, निर्गुण निराकारा।
अखिल अमर परम पुरिष, निर्मल निज सारा ॥ २ ॥
परम नूर परम तेज, परम जोति परकासा।
परम पुंज परापरं, दादू निज दासा ॥ ३ ॥

(२८९)

अखिल भाव अखिल भगति, अखिल नाँव देवा।
अखिल प्रेम अखिल प्रीति, अखिल सुरति सेवा ॥ टेक ॥
अखिल अंग अखिल संग, अखिल रंग रामा।
अखिला रत अखिला मत, अखिला निज नामा ॥ १ ॥
अखिल ज्ञान अखिल ध्यान, अखिल आनँद कीजै।
अखिला लय अखिला मय, अखिला रस पीजै ॥ २ ॥
अखिल मगन अखिल मुदित, अखिल गलित साँईं।
अखिल दरस अखिल परस, दादू तुम माहीं ॥ ३ ॥

॥ राग हुसेनी बंगालौ ॥

(२९०)

है दाना है दाना, दिलदार मेरे कान्हा।
तूँही मेरे जान जिगर, यार मेरे खाना[1] ॥टेक॥
तूँही मेरे मादर पिदर[2], आलम[3] बेगाना।
साहिब सिरताज मेरे, तूँही सुलताना ॥ १ ॥

---

(१) सरदार। (२) माता-पिता। (३) संसार।

दोस्त दिल तूँही मेरे, किस का खिलखाना[1]।
नूर चस्म जिंद[2] मेरे, तूँहीं रहमाना ॥ २ ॥
एकै असनाव[3] मेरे, तूँही हम जानाँ[4]।
जान वा अजीज मेरे, खूब खजाना ॥ ३ ॥
नेक नजर मिहर मीराँ, बंदा मैं तेरा।
दादू दरबार तेरे, खूब साहिब मेरा ॥ ४ ॥

(२९१)

तूँ घरि आव सुलच्छन पीव।
हिक[5] तिल[6] मुख दिखलावहु तेरा, क्या तरसावै जीव ॥ टेक ॥
निस दिन तेरा पंथ निहारौं, तू घरि मेरे आव।
हिरदा भीतरि हेत सौं रे वाल्हा, तेरा मुख दिखलाव ॥ १ ॥
वारी फेरी बलि गई रे, सोभित सोई कपोल।
दादू ऊपर दया करीनै, सुनाइ सुहावे[7] बोल ॥ ३ ॥

॥ राग नट नारायण ॥

(२९२)

ता कौं काहे न प्राण सँभालै।
कोटि अपराध कलप के लागे, माहिं महूरत टालै ॥ टेक ॥
अनेक जनम के बधन बाढ़े, बिन पावक फँध जालै।
ऐसो है मन नाँव हरी कौ, कबहूँ दुक्ख न सालै ॥ १ ॥
च्यंतामणि जुगति सौं राखै, ज्यूँ जननी सुत पालै।
दादू देखु दया करै ऐसी, जन कौ जाल नरालै[8] ॥ २ ॥

(२९३)

गोबिंद कबहुँ मिलै पिव मेरा।
चरण कँवल क्यूँहीं करि देखौं, राखौं नैनहुँ नेरा ॥ टेक ॥

---

(१) खिलवत-खाना = एकान्त स्थान। (२) जीवन। (३) आशना। (४) प्रीतम। (५) एक। (६) छिन। (७) सुहावने। (८) काटै।

निरखण का मोहिं चाव घणेरा, कब मुख देखौं तेरा ।
प्राण मिलण कौं भये उदासी, मिलि तूँ मती सबेरा ॥ १ ॥
ब्याकुल ता थैं भइ तन देही, सिर परि जम का हेरा ।
दादू रे जन राम मिलन कूँ, तपई तन बहुतेरा ॥ २ ॥

(२९४)

कब देखौं नैनहुँ रेख[1] रती[2], प्राण मिलन कौं भई मती ।
हरि सौं खेलौं हरी गती, कब मिलिहैं मोहिं प्राणपती ॥ टेक ॥
बलि कीती क्यूँ देखौंगी रे, मुझ माहैं अति बात अनेरी[3] ।
सुणि साहिब इक बिनती मेरी, जनम जनम हूँ दासी तेरी ॥१॥
कहु दादू सो सुनसी साईं, हौं अबला बल मुझ में नाहीं ।
करम करी घरि मेरे आई, तौ सोभा पिव तेरे ताईं ॥२॥

(२९५)

नीके मोहन सौं प्रीति लाई ।
तन मन प्राण देत बजाई, रंग रस के बनाई ॥ टेक ॥
येही जियरे वेही पिव रे, छोरयौ न जाई माई ।
बाण भेद के देत लगाई, देखत ही मुरझाई ॥ १ ॥
निर्मल नेह पिया सौं लाग्यो, रती न राखो काई ।
दादू रे तिल में तन जावै, संग न छाडौं माई ॥ २ ॥

(२९६)

तुम बिन ऐसौं कौन करै ।
गरीब-निवाज गुसाँईं मेरौ, माथैं मुकट धरै ॥ टेक ॥
नीच ऊँच ले करै गुसाईं, टारयौ हूँ न टरै ।
हस्त कँवल की छाया राखै, काहू थैं न डरै ॥ १ ॥
जा की छोति जगत कौं लागै, ता परि तूँ हीं ढरै ।
अमर आप ले करै गुसाईं, मारयो हूँ न मरै ॥ २ ॥
नामदेव कबीर जुलाहो, जन रैदास तिरै ।
दादू बेगि बार नहिं लागै, हरि सौं सबै सरै ॥ ३ ॥

(१) रेखा, चिन्ह । (२) तनिक सा भी (३) बेहूदा ।

(२९७)

नमो नमो हरि नमो नमो ।
ताहि गुसाईं नमो नमो, अकल निरंजन नमो नमो ।
सकल बियापी जिहि जग कीन्हा, नारायण निज नमो नमो ॥टेक॥
जिन सिरजे जल सीस चरण कर, अविगत जीव दियौ ।
स्रवण सँवारि नैन रसना मुख, ऐसौं चित्र कियौ ॥ १ ॥
आप उपाइ किये जग जीवन, सूर नर संकर साजे ।
पीर पैगंबर सिध अरु साधिक, अपने नाँइ निवाजे ॥ २ ॥
धरती अंबर चंद सूर जिन, प्राणी पवन किये ।
भानन घड़न पलक में केते, सकल सँवारि लिये ॥ ३ ॥
आप अखंडित खंडित नाहीं, सब समि पूरि रहे ।
दादू दीन ताहि नइ बंदति[1], अगम अगाध कहे ॥ ४ ॥

(२९८)

हम थैं दूर रही गति तेरी ।
तुम हौ तैसे तुमहीं जानौ, कहा बपुरी मति मेरी ॥ टेक ॥
मन थैं अगम दृष्टि अगोचर, मनसा की गमि नाहीं ।
सुरति समाइ बुद्धि बल थाके, बचन न पहुँचै ताहीं ॥ १ ॥
जोग न ध्यान ज्ञान गमि नाहीं, समझि समझि सब हारे ।
उनमनि रहत प्राण घट साधे, पार न गहत तुम्हारे ॥ २ ॥
खोजि परे गति जाइ न जानी, अगह गहन कैसैं आवै ।
दादू अविगति देइ दया करि, भाग बड़े सो पावै ॥ ३ ॥

॥ राग सोरठ ॥

(२९९)

कोली साल[2] न छाडै रे, सब धावर[3] काढ़ै रे ॥ टेक ॥
प्रेम प्राण लगाई धागै, तत्त तेल निज दीया ।
एक मना इस आरँभ[4] लागा, ज्ञान राछ[5] भरि लीया ॥ १ ॥

(१) झुक कर प्रणाम करता है। (२) करगह। (३) बिकारी वस्तु, कचरा। (४) नया काम। (५) कंघा की सूरत का बुनने का औजार।

नाँव नली भरि बुणकर लागा, अंतर-गति रँग राता।
ताणै बाणै जीव जुलाहा, परम तत्त सौं माता ॥ २ ॥
सकल सिरोमणि बुनै बिचारा, सान्हा[1] सूत न तोड़ै।
सदा सचेत रहै ल्यौ लागा, ज्यौं टूटै त्यौं जोड़ै ॥ ३ ॥
ऐसैं तनि बुनि गहर गजीना[2], साँई के मन भावै।
दादू कोली करता के सँगि, बहुरि न इहि जुगि आवै ॥ ४ ॥

(३००)

बिरहणी बपु[3] न सँभारै।
निस दिन तलफै राम के कारण, अंतरि एक बिचारै ॥ टेक ॥
आतुर भई मिलन के कारण, कहि कहि राम पुकारै।
सास उसास निमिख नहिं बिसरै, जित तित पंथ निहारै ॥ १ ॥
फिरै उदास चहूँ दिसि चितवत, नैन नीर भरि आवै।
राम बियोग बिरह की जारी, और न कोई भावै ॥ २ ॥
ब्याकुल भई सरीर न समझै, बिषम बाण हरि मारै।
दादू दरसन बिन क्यूँ जीवै, राम सनेही हमारै ॥ ३ ॥

(३०१)

मन रे राम रटत क्यूँ रहिये, यहु तत बार बार क्यूँ न कहिये। टेक।
जब लग जिभ्या बाणी, तौ लौं जपि ले सारँग-पाणी[4]।
जब पवना चलि जावै, तब प्राणी पछितावै ॥ १ ॥
जब लग स्रवण सुणीजै, तौ लौं साध सबद सुणि लीजै।
स्रवणौं सुरति जब जाई, ये तब का सुणि है भाई ॥ २ ॥
जब लग नैनहुँ पेखै, तौ लौं चरन कँवल क्यूँ न देखै।
जब नैनहुँ कछू न सूझै, ये तब मूरिख क्या बूझै ॥ ३ ॥
जब लग तन मन नीका, तौ लौं जपि ले जीवनि जी का।
जब दादू जिव आवै, तब हरि के मनि भावै ॥ ४ ॥

---

(१) जोड़ा या मिलाया हुआ। (२) गाढ़ी गर्ज़ा। (३) शरीर। (४) सारँग = धनुष, पाणी = हाथ, अर्थात् धनुषधारी (राम)—"पाणी" = हाथ "के बदले" सब लिपियों औ र छापों में सिवाय एक के प्राणी दिया है।

(३०२)

मन रे तेरा कौन गँवारा, जपि जीवनि प्राण-अधारा ॥ टेक ॥
रे मात पिता कुल जाती, धन जोबन सजन सँगाती ।
रे गृह दारा सुत भाई, हरि बिन सब झूठा है जाई ॥ १ ॥
रे तूँ अंति अकेला जावै, काहू के संगि न आवै ।
रे तूँ ना करि मेरी मेरा, हरि राम बिना को तेरा ॥ २ ॥
रे तूँ चेत न देखै अंधा, यहु माया मोह सब धंधा ।
रे काल मीच सिरि जागै, हरि सुमिरण काहे न लागै ॥ ३ ॥
यहु औसर बहुरि न आवै, फिरि मनिषा जनम न पावै ।
अब दादू ढील न कीजै, हरि राम भजन करि लीजै ॥ ४ ॥

(३०३)

मन रे देखत जनम गयो, ता थैं काज न कोई भयो ॥ टेक ॥
मन इंद्री ज्ञान बिचारा, ता थैं जनम जुवा ज्यूँ हारा ।
मन झूठ साच करि जानै, हरि साध कहै नहिं मानै ॥ १ ॥
मन रे बादि गहै चतुराई, ता थैं सनमुख बात बनाई ।
मन आप आप कौं थापै, करता होइ बैठा आपै ॥ २ ॥
मन स्वादी बहुत बनावै, मैं जान्या बिषै बतावै ।
मन माँगै सोई दीजै, हमहीं राम दुखी क्यूँ कीजै ॥ ३ ॥
मन सब हीं छाड़ि बिकारा, प्राणी होह गुनन थैं न्यारा ।
निर्गुण निज गहि रहिये, दादू साध कहै ते कहिये ॥ ४ ॥

(३०४)

मन रे अंतिकाल दिन आया, ता थैं यहु सब भया पराया ॥ टेक ॥
स्रवनौं सुनै न नैनों सूझै, रसना कह्या न जाई ।
सीस चरण कर कंपन लागे, सो दिन पहुँच्या आई ॥ १ ॥
काले धौले बरन पलटिया, तन मन का बल भागा ।
जोबन गया जुरा चलि आई, तब पछितावन लागा ॥ २ ॥

आव घटै घटि छीजै काया, यहु तन भया पुराना।
पाँचौं थाके कह्या न मानैं, ता का मरम न जाना ॥ ३ ॥
हंस बटाऊ प्राण पयाना, समझि देखि मन माहीं।
दिन दिन काल गरासै जियरा, दादू चेतै नाहीं ॥ ४ ॥

(३०५)

मन रे तूँ देखै सो नाहीं, है सो अगम अगोचर माहीं ॥ टेक ॥
निस अँधियारी कछू न सूझै, संसै सरप दिखावा।
ऐसैं अंध जगत नहिं जानै, जीव जेवड़ी[1] खावा ॥ १ ॥
मृग-जल देखि तहाँ मन धावै, दिन दिन झूठी आसा।
जहँ जहँ जाइ तहाँ जल नाहीं, निहचै मरै पियासा ॥ २ ॥
भरम बिलास बहुत बिधि कीन्हा, ज्यौं सुपिनैं सुख पावै।
जागत झूठ तहाँ कुछ नाहीं, फिरि पीछैं पछितावै ॥ ३ ॥
जब लग सूता तब लग देखै, जागत भरम बिलाना।
दादू अंति इहाँ कुछ नाहीं, है सो सोधि सयाना ॥ ४ ॥

(३०६)

भाई रे बाजीगर नट खेला, ऐसैं आपै रहै अकेला ॥ टेक ॥
यहु बाजी खेल पसारा, सब मोहे कौतिगहारा।
यहु बाजी खेल दिखावा, बाजीगर किनहुँ न पावा ॥ १ ॥
इहि बाजी जगत भुलाना, बाजीगर किनहुँ न जाना।
कुछ नाहीं सो पेखा, है सो किनहुँ न देखा ॥ २ ॥
कुछ ऐसा चेटक कीन्हा, तन मन सब हरि लीन्हा।
बाजीगर भुरकी बाही[2], काहू पै लखी न जाई ॥ ३ ॥
बाजीगर परकासा, यहु बाजी झूठ तमासा।
दादू पावा सोई, जो इहि बाजी लिपत न होई ॥ ४ ॥

(३०७)

भाई रे ऐसा एक बिचारा, यूँ हरि गुर कहै हमारा ॥ टेक ॥

---

(१) रस्सी। (२) चुटकी डाली या जादू किया।

जागत सूते सोवत सूते, जब लग राम न जाना ।
जागत जागे सोवत जागे, जब राम नाम मन माना ॥ १ ॥
देखत अंधे अंध भी अंधे, जब लग सत्त न सूझै ।
देखत देखै अंध भी देखै, जब राम सनेही बूझै ॥ २ ॥
बोलत गूँगे गुंग भी गूँगे, जब लग तत्त न चीन्हा ।
बोलत बोले गुंग भी बोले, जब राम नाम कहि दीन्हा ॥ ३ ॥
जीवत मूए मुए भी मूए, जब लग नहिं परकासा ।
जीवत जीये मुए भी जीये, दादू राम निवासा ॥ ४ ॥

(३०८)

रामजी नाँव बिना दुख भारी, तेरे साधन कही बिचारी ॥ टेक ॥
केई जोग ध्यान गहि रहिया, केई कुल के मारग बहिया ।
केई सकल देव कौं ध्यावैं, केई रिधि सिधि चाहैं पावैं ॥ १ ॥
केई बेद पुरानौं माते, केई माया के सँगि राते ।
केई देस दिसंतर डोलैं, केई ज्ञानी ह्वै बहु बोलैं ॥ २ ॥
केई काया कसैं अपारा, केई मरैं खड़ग की धारा ।
केई अनँत जिवन की आसा, केई करैं गुफा में बासा ॥ ३ ॥
आदि अंति जे जागे, सो तौ राम नाम ल्यौ लागे ।
इब दादू इहे बिचारा, हरि लागा प्राण हमारा ॥ ४ ॥

(३०९)

साधौ हरि सौं हेत हमारा, जिन यहु कीन्ह पसारा ॥ टेक ॥
जा कारण ब्रत कीजे, तिल तिल यहु तन छीजै ।
सहजैं ही सो जाना, हरि जानत ही मन माना ॥ १ ॥
जा कारण तप जइये, धूप सीत सिर सहिये ।
सहजैं ही सो आवा, हरि आवत ही सचु पावा ॥ २ ॥
जा कारण बहु फिरिये, करि तीरथ भ्रमि भ्रमि मरिये ।
सहजैं ही सो चीन्हा, हरि चीन्हि सबै सुख लीन्हा ॥ ३ ॥

प्रेम भगति जिन जानी, सो काहे भरमै प्रानी।
हरि सहजैं ही भल मानै, ता थैं दादू और न जानै ॥ ४ ॥

(३१०)

रामजी जिनि भरमावे हम कौं। ता थैं करौं बीनती तुम्ह कौं ॥टेक॥
चरण तुम्हारे सबही देखौं, तप तीरथ व्रत दाना।
गंग जमुन पासि पाँइन के, तहाँ देहु अस्नाना ॥ १ ॥
संग तुम्हारे सबही लागे, जोग जग्गि जे कीजे।
साधन सकल येई सब मेरे, संग आपणौं दीजे ॥ २ ॥
पूजा पाती देवी देवल, सब देखौं तुम माहीं।
मो कौं ओट आपणी दीजै, चरण कँवल की छाहीं ॥ ३ ॥
ये अरदास दास की सुणिये, दूरि करौ भ्रम मेरा।
दादू तुम्ह बिन और न जाणै, राखौ चरनौं नेरा ॥ ४ ॥

(३११)

सोई देव पूजौं जे टाँकी नहिं घड़िया। गरभ बास नाहीं औतरिया ।टेक।
बिन जल संजम सदा सोइ देवा, भाव भगति करौं हरि सेवा ॥१॥
पाती प्राण हरिदेव चढ़ाऊँ, सहज समाधि प्रेम ल्यौ लाऊँ ॥२॥
इहि बिधि सेवा सदा तहँ होई, अलख निरंजन लखै न कोई ॥३॥
ये पूजा मेरे मन मानै, जिहि बिधि होइ सु दादू न जानै ॥४॥

(३१२)

राम राइ मो कौं अचिरज आवै, तेरा पार न कोई पावै ॥टेक॥
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद, नेति नेति जे गावै।
सरणि तुम्हारी रहैं निस बासुरि, तिन कौं तूँ न लखावै ॥१॥
संकर सेस सबै सुर मुनि जन, तिन कौं तूँ न जनावै।
तीनि लोक रटै रसना भरि, तिन कौं तूँ न दिखावै ॥२॥
दीन लीन राम रँग राते, तिन कौं तूँ सँगि लावै।
अपने अंग की जुगति न जानै, सो मन तेरे भावै ॥३॥

सेवा संजम करैं जप पूजा, सबद न तिन कौं सुनावै ।
मैं अछोप[1] हीन मति मेरी, दादू कौं दिखलावै ॥ ४ ॥

॥ राग गुंड ॥

(३१३)

दरसन दे दरसन दे, हौं तौ तेरी मुकति न माँगौं रे ॥टेक॥
सिद्धि न माँगौं रिद्धि न माँगौं, तुमहीं माँगौं गोबिंदा ॥ १ ॥
जोग न माँगौं भोग न माँगौं, तुमहीं माँगौं रामजी ॥ २ ॥
घर नहिं माँगौं बन नहिं माँगौं, तुमहीं माँगौं देवजी ॥ ३ ॥
दादू तुम बिन और न माँगौं, दरसन माँगौं देहुजी ॥ ४ ॥

(३१४)

तूँ आपैं ही बिचारि, तुझ बिन क्यूँ रहौं ।
मेरे और न दूजा कोइ, दुख किस कौं कहौं ॥ टेक ॥
मीत हमारा सोइ, आदैं जे पीया ।
मुझै मिलावै कोइ, वै जीवनि जीया ॥ १ ॥
तेरे नैन दिखाइ, जीऊँ जिस आसि रे ।
सो धन जीवै क्यूँ, नहीं जिस पासि रे ॥ २ ॥
पिंजर माहैं प्राण, तुझ बिन जाइसी ।
जन दादू माँगै मान, कब घरि आइसी ॥ ३ ॥

(३१५)

हूँ जोइ रही रे बाट, तूँ घरि आवि नैं ।
थाँरा दरसन थैं सुख होइ, ते तूँ ल्यावि नैं ॥ टेक ॥
चरण जोवानी खाँति, ते तूँ दिखाड़ि नैं ।
तुझ बिना जिव देइ, दुहेली कामिनी ॥ १ ॥
नैन निहारूँ बाट, ऊभी[2] चावनी[3] ।
तूँ अंतर थैं उरौ आवै, देही जावनी ॥ २ ॥

(१) अशौच, अपवित्र । (२) खड़ी । (३) चाहवाली ।

तूँ दया करी घरि आव, दासी गावनी।
जण दादू राम सँभालि, बैन सुनावनी॥ ३॥

(३१६)

पिव देखे बिन क्यूँ रहौं, जिय तलफै मेरा।
सब सुख आनँद पाइये, मुख देखौं तेरा॥टेक॥
पिव बिन कैसा जीवना, मोहिं चैन न आवै।
निर्धन ज्यूँ धन पाइये, जब दरस दिखावै॥ १॥
तुम बिन क्यूँ धीरज धरौं, जौ लौं तोहि न पाऊँ।
सन्मुख ह्वै सुख दीजिये, बलिहारी जाऊँ॥ २॥
बिरह बियोग न सहि सकौं, काइर घट काचा।
पावन परसन पाइये, सुनि साहिब साचा॥ ३॥
सुनिये मेरी बीनती, इब दरसन दीजै।
दादू देखन पावही, तैसैं कुछ कीजै॥ ४॥

(३१७)

इहि बिधि बेध्यो मोर मना, ज्यूँ लै भृङ्गी कीट तना॥टेक॥
चात्रिग रटतें रैनि बिहाइ, प्यंड परे[1] पै बानि न जाइ॥१॥
मरे मीन बिसरै नहि पानी, प्राण तजे उन और न जानी॥२॥
जलै सरीर न मोड़ै अंगा, जोति न छाड़ै पड़ै पतंगा॥३॥
दादू इब थैं ऐसैं होइ, प्यंड परे नहिं छाड़ौं तोहि॥४॥

(३१८)

आवो राम दया करि मेरे, बार बार बलिहारी तेरे॥टेक॥
बिरहनि आतुर पंथ निहारै, राम राम कहि पीव पुकारै॥१॥
पंथी बूझै मारग जोवै, नैन नीर जल भरि भरि रोवै॥२॥
निस दिन तलफै रहै उदास, आतम राम तुम्हारे पास॥३॥
बप[2] बिसरै तन की सुधि नाहीं, दादू बिरहनि मिरतक माहीं[3]॥४॥

(३१९)

निरंजन क्यूँ रहै, मानि गह बैराग, केते जुग गये॥टेक॥

(१) शरीर का पतन हो जाय। (२) शरीर। (३) मन की तरंगें मर गई हैं।

जागे जगपति राइ, हँसि बोलै नहीं। परगट घूँघट माहिं पट खोलै नहीं ॥
सदिके[1] करौं संसार, सब जग वारणे। छाड़ौं सब परिवार तेरे कारणे ॥
वारौं प्यंड पराण, पाँऊ सिर धरूं। ज्यूँ ज्यूँ भावै राम, सो सेवा करूं ॥
दीनानाथ दयाल, बिलँब न कीजिये।
दादू बलि बलि जाइ, सेज सुख दीजिए ॥

(३२०)

निरंजन यूँ रहै, काहू लिपत न होइ।
जल थल थावर जंगमा, गुण नहिं लागे कोइ ॥ टेक ॥
धर अंबर लागे नहीं, नहिं लागै ससिहर[2] सूर।
पाणी पवन लागै नहीं, जहाँ तहाँ भरपूर ॥ १ ॥
निस बासरि लागै नहीं, नहिं लागै सीतल घाम।
छुध्या त्रिषा लागै नहीं, घटि घटि आतम राम ॥ २ ॥
माया मोह लागै नहीं, नहि लागै काया जीव।
काल करम लागै नहीं, परगट मेरा पीव ॥ ३ ॥
इकलस[3] एकै नूर है, इकलस एकै तेज।
इकलस एकै जोति है, दादू खेलै सेज ॥ ४ ॥

(३२१)

जग जीवन प्राण अधार, बाचा पालना।
हौं कहाँ पुकारौं जाइ, मेरे लालना ॥ टेक ॥
मेरे बेदन अंगि अपार, सो दुख टालना।
सागर ये निस्तारि, गहरा अति घना ॥ १ ॥
अंतर है सो टालि, कीजै आपना।
मेरे तुम बिन और न कोइ, इहै बिचारना ॥ २ ॥
ता थैं करौं पुकार, यहु तन चालना।
दादू कौं दरसन देहु, जाइ दुख सालना ॥ ३ ॥

---

(१) न्यौछावर। (२) चंद्रमा। (३) एक रस।

(३२२)

मेरे तुमहीं राखणहार, दूजा को नहीं ।
ये चंचल चहुँ दिसि जाइ, काल तहीं तहीं ॥ टेक ॥
मैं केते किये उपाइ, निहचल ना रहे ।
जहँ बरजौं तहँ जाइ, मदमातो बहे ॥ १ ॥
जहँ जाणै तहँ जाइ, तुम थैं ना डरै ।
तास्यौं कहा बसाइ, भावै त्यूँ करै ॥ २ ॥
सकल पुकारैं साध, मैं केता कह्या ।
गुर अंकुस मानै नाहिं, निरभै ह्वै रह्या ॥ ३ ॥
तुम बिन और न कोइ, इस मन को गहै ।
तूँ राखै राखणहार, दादू तो रहै ॥ ४ ॥

(३२३)

निरञ्जन काइर कंपै प्राणिया, देखि यहु दरिया ।
वार पार सूझै नहीं, मन मेरा डरिया ॥ टेक ॥
अति अथाह ये भौजला, आसँघ[1] नहिं आवै ।
देखि देखि डरपै घणा, प्राणी दुख पावै ॥ १ ॥
बिष जल भरिया सागरा, सब थके सयाना ।
तुम बिन कहु कैसैं तिरौं, मैं मूढ़ अयाना ॥ २ ॥
आगैंही डरपै घणा, मेरा का कहिये ।
कर गहि काढ़ौ केसवा, पार तो लहिये ॥ ३ ॥
एक भरोसा तौ रहै, जे तुम होहु दयाला ।
दादू कहु कैसैं तिरै, तूँ तारि गुपाला ॥ ४ ॥

(३२४)

समरथ मेरा साँइयाँ, सकल अघ जारै ।
सुखदाता मेरे प्राण का, संकोच निवारै ॥ टेक ॥

(१) हिम्मत ।

त्रिबिधि ताप तन की हरे, चौथे जन राखै।
आप समागम सेवगा, साधू यूँ भाखै॥ १॥
आप करै प्रतिपालना, दारुन दुख टारै।
इच्छा जन की पूरवै, सबै कारिज सारै॥ २॥
करम कोटि भय भंजना, सुख-मंडन सोई।
मन मनोरथ पूरणा, ऐसा और न कोई॥ ३॥
ऐसा और न देखिहौं, सब पूरण कामा।
दादू साध संगी किये, उन्ह आतम रामा॥ ४॥

(३२५)

तुम बिन राम कवन कलि माहीं, बिषिया थैं कोई बारै रे।
मुनियर मोटा मनवै बाह्या, येन्हा कौन मनोरथ मारै रे॥टेक॥
छिन एकैं मनवौं मरकट माहरो, घर घरबार नचावै रे।
छिन एकैं मनवौं चंचल माहरो, छिन एकैं घर माँ आवै रे॥१॥
छिन एकैं मनवौं मीन अम्हारो, सचराचर माँ धावै रे।
छिन एकैं मनवौं उदमति मातौ, स्वादैं लागो खावै रे॥२॥
छिन एकैं मनवौं जोति पतंगा, भ्रमि भ्रमि स्वादैं दाझै रे।
छिन एकैं मनवौं लोभैं लागो, आपा पर में बाझै रे॥३॥
छिन एकैं मनवौं कुंजर माहरो, बन बन माहिं भ्रमाड़ै रे।
छिन एकैं मनवौं कामी माहरो, बिषिया रंग रमाड़ै रे॥४॥
छिन एकैं मनवौं मिरग अम्हारो, नादैं मोह्यौ जाये रे।
छिन एकैं मनवौं माया रातौ, छिन एकैं अम्हनैं बाहै रे॥५॥
छिन एकैं मनवौं भँवर अम्हारो, बासैं कँवल बँधाणौ रे।
छिन एकैँ मनवौं चहुँ दिसि जाये, मनवाँ नैं कोइ आणै रे॥६॥
तुम बिन राखै कोण बिधाता, मुनियर साखी आणै रे।
दादू मिरतक छिन माँ जीवै, मनवाँ चरित[1] न जाणै रे॥७॥

(१) चरित्र।

(३२६)

करणी पोच सोच सुख करई । लोह की नाव कैसैं भौजल तिरई ॥
दखिन जात पछिम कैसैं आवै । नैन बिन भूलि बाट कत पावै ॥
बिष बन बेलि अमृत फल चाहै । खाइ हलाहल अमर उमाहै ॥
अग्नि गृह पैसि करि सुख क्यूँ सोवै । जलणि जागी घणी सीत क्यूँ होवै ॥
पाप पाखंड कियें पुनि क्यूं पाइये । कूप खनि पड़िबा गगन क्यूँ जाइये ॥
कहै दादू मोहिं अचिरज भारी । हृदै कपट क्यूँ मिलै मुरारी ॥

(३२७)

मेरा मन के मन सौं मन लागा । सबद के सबद सौं नाद बागा ॥
स्रवण के स्रवण सुणि सुख पाया । नैन के नैन सौं निरखि राया ॥
प्राण के प्राण सौं खेलि प्राणी । मुख के मुख सौं बोलि बाणी ॥
जीव के जीव सौं रंगि राता । चित्त के चित्त सौं प्रेम पाता ॥
सीस के सीस सौं सीस मेरा । देखि रे दादू वा भाग तेरा ॥

(३२८)

मेर सिखर चढ़ि बोलि मन मोरा । राम जल बरिखै सबद सुनि तारा ॥
आरति आतुर पीव पुकारै । सोवत जागत पंथ निहारै ॥
निस बासुरि कहि अमृत बाणी । राम नाम ल्यौ लाइ लै प्राणी ॥
टेरि मन भाई जब लग जीवै । प्रीति करि गाढ़ी प्रेम रस पीवै ॥
दादू औसरि जे जन जागै । राम घटा जल बरिखन लागै ॥

(३२९)

नारी नेह न कीजिये, जे तुझ राम पियारा ।
माया मोह न बधिये, तजिये संसारा ॥ टेक ॥
विषिया रँगि राचे नहीं, नहिं करै पसारा ।
देह ग्रेह परिवार में, सब थैं रहै न्यारा ॥ १ ॥
आपा पर उरझै नहीं, नाहीं मैं मेरा ।
मनसा बाचा कर्मना, साँई सब तेरा ॥ २ ॥
मन इंद्री इस्थिर करै, कतहूँ नहिं डोलै ।
जग बिकार सब परिहरै, मिथ्या नहिं बोलै ॥ ३ ॥

रहे निरंतर राम सौं, अंतर गति राता।
गावै गुण गोबिंद का, दादू रसि माता ॥ ४ ॥

(३३०)

तू राखै त्यूँ हो रहै, तेई जन तेरा।
तुम बिन और न जानही, सो सेवग नेरा ॥ टेक ॥
अंबर आपैंही धरचा, अजहूँ उपगारी।
धरती धारी आप थैं, सबही सुखकारी ॥ १ ॥
पवन पासि सब के चलै, जैसैं तुम कीन्हा।
पानी परगट देखिहौं, सब सौं रहै भीना ॥ २ ॥
चंद चिराकी[1] चहुँ दिसा, सब सीतल जानै।
सूरज भी सेवा करै, जैसैं भल मानै ॥ ३ ॥
ये निज सेवग तेरड़े, सब आज्ञाकारी।
मो कौं ऐसैं कीजिये, दादू बलिहारी ॥ ४ ॥

(३३१)

न्यंदक बाबा बीर हमारा। बिनहीं कौड़े बहै बिचारा[2] ॥ टेक ॥
कर्म कोटि के कुसमल काटै। काज सँवारै बिनहीं साटै[3] ॥१॥
आपण डूबै और कौं तारै। ऐसा प्रीतम पार उतारै ॥२॥
जुगि जुगि जीवौ न्यंदक मोरा। राम देव तुम करौ निहोरा ॥३॥
न्यंदक बपुरा पर-उपगारी। दादू न्यंद्या करै हमारी ॥४॥

(३३२)

देहुजी देहुजी, प्रेम पियाला देहुजी। देकरि बहुरि न लेहुजी ॥टेक॥
ज्यूँ ज्यूँ नूर न देखौं तेरा। त्यूँ त्यूँ जियरा तलफै मेरा ॥१॥
अमी महारस नाँव न आवै। त्यूँ त्यूँ प्राण बहुत दुख पावै ॥२॥
प्रेम भगति रस पावै नाहीं। त्यूँ त्यूँ सालै मनहीं माहीं ॥३॥
सेज सुहाग सदा सुख दीजै। दादू दुखिया बिलँब न कीजै ॥४॥

---

(१) चाँदनो। (२) बेचारा बिना पैसे (कौड़े) के काम करता रहता (बहै)।
(३) बदला, मुआवजा।

(३३३)

बरिखहु राम अमृत धारा। झिलिमिलि झिलिमिलि सींचनहारा॥
प्राण बेलि निज नीर न पावै। जलहर बिना कँवल कुम्हिलावै॥१॥
सूकै[1] बेलि सकल बनराइ। रामदेव जल बरिखहु आइ॥२॥
आतम बेली मरै पियास। नीर न पावै दादू दास॥३॥

॥ राग बिलावल ॥

(३३४)

दया तुम्हारी दरसन पइये।
जानतहौ तुम अंतरजामी, जानराइ तुम सौं कहा कहिये॥टेक॥
तुम सौं कहा चतुराई कीजै, कौन करम करि तुम पाये।
को नहिं मिलै प्राण बल अपने, दया तुम्हारी तुम आये॥
कहा हमारो आनि तुम्ह आगैं, कौन कला करि बसि कीये।
जीतैं कौण बुद्धि बल पौरिष, रुचि अपनी तैं सरनि लिये॥
तुमहीं आदि अंति पुनि तुमहीं, तुम करता तिरलोक मँझारि।
कुछ नाहीं थैं कहा होत है, दादू बलि पावै दीदार॥

(३३५)

मालिक मिहरबान करीम।
गुनहगार हर रोज़ हर दम, पनह[2] राखि रहीम[3]॥ टेक॥
अव्वल आखिर बन्दा गुनही[4], अमल बद बिसियार[5]।
ग़रक़[6] दुनिया सतार[7] साहिब, दरदवंद पुकार॥ १॥
फ़रामोश नेकी बदी, करदम[8] बुराई बद .फेल।
बख़शिदा[9] तूँ अज़ाब आख़िर, हुक्म हाज़िर सैल[10]॥ २॥

---

(१) सूखै। (२) पनाह = रक्षा। (३) दयाल पुरुष। (४) अपराधी। (५) अनेक [बिसियार] खोटे कर्म। (६) डूबा हुआ। (७) परदा डालने वाला, ऐब-पोश। (८) मैंने किया। (९) बख़्शनेवाला। (१०) पं० चंद्रिका प्रसाद ने "सैल" के मानी हाकिम के और "फ़िल" के मानी क्षमा के लिखे हैं पर हमारी समझ में "सैल" साइल का अपभ्रंश है जिसका अर्थ याचक या मँगता है। "फ़िल" का शब्द फ़ारसी, सिन्धी, पंजाबी, गुजराती, आदि भाषा में नहीं पाया जाता, ऐसा जान पड़ता है कि यह अरबी शब्द "फिलनार" का संक्षेप है जिसका अर्थ आग में डालना याने नाश करना होता है।

नाम नेक रहीम राज़िक़[1], पाक परवरदिगार ।
गुनह फ़िल करि देहु दादू, तलब दर दादार ॥ ३ ॥

(३३६)

कौन आदमी कमीन बिचारा, किसकूँ पूजे गरीब पियारा ॥टेक॥
मैं जन एक अनेक पसारा, भौजल भरिया अधिक अपारा ॥१॥
एक होइ तो कहि समझाऊँ, अनेक अरुझे क्यूँ सुरझाऊँ ॥२॥
मैं हौं निबल सबल ये सारे, क्यूँ करि पूजौं बहुत पसारे ॥३॥
पीव पुकारौं समझत नाहीं, दादू देखु दसौं दिसि जाहीं ॥४॥

(३३७)

जागहु जियरा काहे सोवै । सेइ[2] करीमा तौ सुख होवै ॥टेक॥
जा थैं जीवन सो तैं बिसारा । पछिम जाना पंथ न सँवारा ॥
मैं मेरी करि बहुत भुलाना । अजहूँ न चेतै दूरि पयाना ॥१॥
साँईं केरी सेवा नाहीं । फिरि फिरि डूबै दरिया माहीं ॥
ओर न आवै पार न पावा । झूठा जीवन बहुत भुलावा ॥२॥
मूल न राख्या लाह[3] न लीया । कौड़ी बदलै हीरा दीया ॥
फिर पछिताना संबलु[4] नाहीं । हारि चल्या क्यूँ पावै साँईं ॥३॥
इब सुख कारण फिर दुख पावै । अजहुँ न चेतै क्यूँ डहकावै ॥
दादू कहै सीख सुणि मेरी । कहहुँ करीम सँभालि सवेरी ॥४॥

(३३८)

बार बार तन नहीं बावरे, काहे कौ बादि गँवावै रे ।
बिनसत बार कछू नहिं लागै, बहुरि कहाँ कौं पावै रे ॥टेक॥
तेरे भाग बड़े भाव धरि कीन्हा, क्यूँ करि चित्र बनावै रे ।
सो तूँ लेइ बिषै में डारै, कंचन छार मिलावै रे ॥१॥
तूँ मति जानै बहुरि पाइये, अब के जिनि डहकावै रे ॥
तीनि लोक की पूँजी तेरी, बनिज बेगि सो आवै रे ॥२॥
जब लग घट में साँस बास है, तब लग काहे न धावै रे ।
दादू तन धरि नाँउ न लीन्हा, सो प्राणी पछितावै रे ॥३॥

(१) अन्न-दाता । (२) सेवा करो । (३) लाभ । (४) सम्हलना, सावधान होना ।

(३३९)

राम बिसार्‌यो रे जगनाथ।
हीरा हार्‌यो देखतही रे, कौड़ी कीन्ही हाथ ॥ टेक॥
काच हुता कंचन करि जानै, भूल्यौ रे भ्रम पास।
साचे सौं पल परचा नाहीं, करि काचे की आस ॥ १ ॥
बिष ता कौं अमृत करि जानै, सो संग न आवै साथ।
सेंबल के फूलन पर फूल्यौ, चूक्यौ अब की घात ॥ २ ॥
हरि भजि रे मन सहज पिछानी, ये सुनि साची बात।
दादू रे इब थैं करि लीजै, आव घटै दिन जात ॥ ३ ॥

(३४०)

मन चंचल मेरो कह्यौ न मानै, दसौं दिसा दौरावै रे।
आवत जात बार नहिं लागै, बहुत भाँति बौरावै रे ॥टेक॥
बेर बेर बरजत या मन कौं, किंचित सीख न मानै रे।
ऐसैं निकसि जात या तन थैं, जैसैं जीव न जानै रे ॥१॥
कोटिक जतन करत या मन कौं, निहचल निमिष न होई रे।
चंचल चपल चहुँ दिसि भरमै, कहा करै जन कोई रे ॥२॥
सदा सोच रहत घट भीतरि, मन थिर कैसैं कीजै रे।
सहजैं सहज साध की संगति, दादू हरि भजि लीजै रे ॥३॥

(३४१)

इन कामनि घर घाले रे।
प्रीति लगाइ प्राण सब सोखै, बिन पावक जिय जालै रे ॥टेक॥
अंगि लगाइ सार सब लेवै, इन थैं कोई न बाचै रे।
यहु संसार जीति सब लीया, मिलन न देई साचै रे ॥ १ ॥
हेत लगाइ सबै धन लेवै, बाकी कछू न राखै रे।
माखण माहिं सोधि सब लेवै, छाछ छिया करि नाखै रे[१] ॥ २ ॥
जे जन जानि जुगति सौं त्यागै, तिन कौं निज पद परसै रे।
काल न खाइ मरै नहिं कबहूँ, दादू तिन कौं दरसै रे ॥ ३ ॥

(१) छाछ और फोक कर के डाल देता है।

(३४२)

जिनि सत छाड़ै बावरे, पूरिक है पूरा।
सिरजे की सब चिंत है,[1] देबे कौं सूरा॥ टेक॥
गर्भ बास जिन राखिया, पावक थैं न्यारा।
जुगति जतन करि सींचिया, दे प्राण अधारा॥ १॥
कुञ्ज कहाँ धरि संचरै,[2] तहँ को रखवारा।
हेम हरत जिन राखिया,[3] सो खसम हमारा॥ २॥
जल थल जीव जिते रहैं, सो सब कौं पूरै।
संपट सिला में देत है, काहे नर झूरै[4]॥ ३॥
जिन यहु भार उठाइया, निरबाहै सोई।
दादू छिन न बिसारिये, ता थैं जीवन होई॥ ४॥

(३४३)

सोई राम सँभालि जियरा, प्राण प्यंड जिन दीन्हा रे।
अंबर आप उपावनहारा, माहिं चित्र जिन कीन्हा रे॥टेक॥
चंद सूर जिन किये चिराका,[5] चरनौं बिना चलावै रे।
इक सीतल इक ताता डोलै, अनँत कला दिखलावै रे॥ १॥
धरती धरनि बरन बहु बाणी, रचि ले सप्त समंदा रे।
जल थल जीव सँभालनहारा, पूरि रह्या सब संगा रे॥ २॥
प्रगट पवन पानी जिन कीन्हा, बरिखावै बहु धारा रे।
अठारह भार बिरख[6] बहु बिधि के, सब का सींचनहारा रे॥ ३॥
पंच तत्त जिन किये पसारा, सब करि देखन लागा रे।
निहचल राम जपी मेरे जियरा, दादू ता थैं जागा रे॥ ४॥

---

(१) उसे सारी रचना की चिंता है। (२) अंडे को सेवै। कहते हैं कि कुंज चिड़िया दूर रह कर सुरत से अंडे को सेती है। (३) श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर को हिमालय पर्वत पर बर्फ में गलने से बचा लिया था। (४) मालिक दो पत्थरों की संधि में बंद जीव जंतु की खबर लेता है तो हे नर तू क्यों सोच करता है। (५) चरागाँ = प्रकाशित। (६) वृक्ष, पेड़।

(३४४)

जब मैं रहते की रह जानी[1]।
काल काया के निकटि न आवै, पावत है सुख प्राणी ॥ टेक ॥
सोग संताप नैन नहिं देखौं, राग दोष नहिं आवै।
जागत है जा सौं रुचि मेरी, सुपिनैं सोई दिखावै ॥ १ ॥
भरम करम मोह नहिं ममता, बाद बिबाद न जानौं।
मोहन सौं मेरी बनि आई, रसना सोई बखानौं ॥ २ ॥
निस बासुर मोहन तन मेरे, चरन कँवल मन मानै।
सोइ निधि निरखि देखि सचु पाऊँ, दादू और न जानै ॥ ३ ॥

(३४५)

जब मैं साचे की सुधि पाई।
तब थैं अंगि और नहिं आवै, देखत हूँ सुखदाई ॥ टेक ॥
ता दिन थैं तन ताप न ब्यापै, सुख दुख संगि न जाऊँ।
पावन[2] पीव परसि पद लीन्हा, आनँद भरि गुन गाऊँ ॥ १ ॥
सब सौं संगि नहीं पुनि मेरे, अरस परस कुछ नाहीं।
एक अनंत सोई सँगि मेरे, निरखत हौं निज माहीं ॥ २ ॥
तन मन माहिं सोधि सो लीन्हा, निरखत हौं निज सारा।
सोई संगि सबै सुखदाई, दादू भाग हमारा ॥ ३ ॥

(३४६)

हरि बिन निहचल कहीं न देखौं, तीनि लोक फिरि सोधा रे।
जे दीसै सो बिनसि जाइगा, ऐसा गुर परमोधा रे ॥टेक॥
धरती गगन पवन अरु पानी, चंद सूर थिर नाहीं रे।
रैनि दिवस रहत नहिं दीसैं, एक रहै कलि माहीं रे ॥ १ ॥
पीर पैगंबर सेख मसाइख, सिव बिरंच सब देवा रे।
कलि आया सो कोइ न रहसी, रहसी अलख अभेवा रे ॥२॥
सवालाख मेरु गिरि पर्वत, समँद न रहसी थीरा रे।
नदी निवान[3] कछू नहिं दीसै, रहसी अकल सरीरा रे ॥३॥

---

(१) जब मैंने अमर पुरुष से मिलने का रास्ता जाना। (२) पवित्र। (३) नीची ज़मीन, नाला।

अबिनासी वो एक रहैगा, जिन यहु सब कुछ कीन्हा रे।
दादू जाता सब जग देखौं, एक रहत सो चीन्हा रे ॥४॥

(३४७)

मूल सींचि बधै[1] ज्यूँ बेला, सो तत तरवर रहै अकेला ॥टेक॥
देवी देखत फिरैं ज्यूँ भूले, खाइ हलाहल बिष कौं फूले।
सुख कौं चाहै पड़ै गल पासी,[2] देखत हीरा हाथ थैं जासी ॥१॥
केइ पूजा रचि ध्यान लगावैं, देवल देखैं खबरि न पावैं।
तोरैं पाती जुगति न जानी, इहि भ्रमि रहे भूलि अभिमानी ॥२॥
तीरथ बरत न पूजै[3] आसा, बनखँडि जाहीं रहैं उदासा।
यूँ तप करि करि देह जलावैं, भरमत डोलैं जनम गँवावैं ॥३॥
सतगुर मिलैं न संसा जाई, ये बंधन सब देइँ छुड़ाई।
तब दादू परम गति पावै, सो निज मूरति माहिं लखावै ॥४॥

(३४८)

सोई साध सिरोमणी, गोबिंद गुण गावै।
राम भजै बिषिया तजै, आपा न जनावै ॥ टेक ॥
मिथ्या मुखि बोलै नहीं, पर - निंद्या नाहीं।
औगुण छाड़ै गुण गहै, मन हरि पद माहीं ॥ १ ॥
निर्बैरी सब आतमा, पर आतम जानै।
सुखदाई समिता गहै, आपा नहिं आनै ॥ २ ॥
आपा पर अंतर नहीं, निर्मल निज सारा।
सतबादी साचा कहै, लैलीन बिचारा ॥ ३ ॥
निर्भै भजि न्यारा रहै, काहू लिपत न होई।
दादू सब संसार में, ऐसा जन कोई ॥ ४ ॥

(३४९)

राम मिल्या यूँ जानिये, जो काल न व्यापै।
जुरा मरण ता कौं नहीं, अरु मेटै आपै ॥ टेक ॥

(१) बढ़ै। (२) फाँसी। (३) पूरन होय।

सुख दुख कबहूँ न ऊपजै, अरु सब जग सूझै ।
करम को बाँधै नहीं, सब आगम बूझै[1] ॥ १ ॥
जागत है सो जन रहै, अरु जुगि जुगि जागै ।
अंतरजामी सौं रहै, कुछ काई न लागै ॥ २ ॥
काम दहै सहजैं रहै, अरु सुन्न बिचारै ।
दादू सो सब की लहै, अरु कबहुँ न हारै ॥ ३ ॥

(३५०)

इन बातनि मेरो मन मानै ।
दुतिया दोइ नहीं उर अंतरि, एक एक करि पिव कौं जानै ॥टेक॥
पूरण ब्रह्म देखै सबहिन में, भ्रम न जीव काहू थैं आनै ।
होइ दयाल दीनता सब सौं, अरि पंचनि कौं करै किसानै[2] ॥१॥
आपा पर सम सब तत चीन्है, हरी भजै केवल जस गानै ।
दादू सोई सहजि घरि आनै, संकुट[3] सबै जीव के भानै ॥२॥

(३५१)

ये मन मेरा पीव सौं, औरन सौं नाहीं ।
पिव बिन पलहि न जीव सौं, ये उपजे माहीं ॥ टेक ॥
देखि देखि सुख जीव सौं, तहँ धूप न छाहीं ।
अजरावर मन बंधिया, ता थैं अनत न जाहीं ॥ १ ॥
तेज पुंज फल पाइया, तहाँ रस खाहीं ।
अमर बेलि अमृत झरै, पिव पीव[4] अघाहीं ॥ २ ॥
प्राणपती तहँ पाइया, जहँ उलटि समाहीं ।
दादू पिव परचा भया, हियरे हित लाहीं ॥ ३ ॥

(३५२)

आज प्रभाति मिले हरि लाल ।
दिल की बिथा पीड़ सब भागी, मिट्यौ जीव कौ साल ॥टेक॥

---

(१) किसी कर्म में चित्त का बंधन न हो और सब भविष्य दरसै । (२) पाँचों इन्द्रियों को जो शत्रु समान हैं दमन करै । (३) कष्ट । (४) पीपी कर ।

देखत नैन सँतोष भयो है, इहै तुम्हारो ख्याल ।
दादू जन सौं हिलि मिलि रहिबौ, तुम्ह हौ दीनदयाल ॥ १ ॥

(३५३)१

अरस इलाही रबदा, इथाँई रहिमान वे ।
मका बिचि मुसाफरीला, मदीना मुलतान वे ॥ टेक ॥
नबी नाल पैकंबरे, पीरौं हंदा थान वे ।
जन तहुँ ले हिकसाँ, लाइ इथाँ भिस्त मुकाम वे ॥ १ ॥
इथाँ आब ज़मज़मा, इथाँई सुबहान वे ।
तख्त रबानी कँगुरेला, इथाँई सुलतान वे ॥ २ ॥
सब इथाँ अंदरि आव वे, इथाँई ईमान वे ।
दादू आप वंजाइ वे ला, इथाँई आसान वे ॥ ३ ॥

(३५४)

आसण रमिदा रामदा, हरि इथाँ अविगत आप वे ।
काया कासी वंजणा, हरि इथैं पूजा जाप वे ॥टेक॥
महादेव मुनिदेव ते, सिधौंदा बिसराम वे ।
सर्ग सुखासण हुलणे, हरि इथैं आतमराम वे ॥ १ ॥
अमी सरोवर आतमा, इथाँई आधार वे ।
अमर थान अविगत रहे, हरि इथैं सिरजनहार वे ॥ २ ॥
सब कुछ इथैं आव वे, इथाँ परमानंद वे ।
दादू आपा दूरि करि, हरि इथाँई आनंद वे ॥ ३ ॥

(३५५)

॥ राग सूही ॥

तुम्ह बिचि अंतर जिनि परै माधव, भावै तन धन लेहु ।
भावै सरग नरक रसातल, भावै करवत देहु ॥ टेक ॥

(१) इस शब्द का अर्थ यह है कि इसी काया में साहिब, मक्का, मदीना, नबी, पैग़म्बर, पीर, सुबहान, बिहिश्त, आबि ज़मज़म, मालिक का सिंहासन, सच्चा बादशाह और ईमान सब मौजूद हैं—दादू आपे का छोड़ना [वंजाइ] काया ही में सहज रीत से बन सकता है ।

भावै बिपति देहु दुख संकुट,[1] भावै संपति सुख सरीर।
भावै घर बन राव रंक करि, भावै सागर तीर ॥ १ ॥
भावै बंध मुकत करि माधव, भावै त्रिभवन सार।
भावै सकल दोष धरि माधव, भावै सकल निवारि ॥ २ ॥
भावै धरणि गगन धरि माधव, भावै सीतल सूर।
दादू निकटि सदा सँगि माधव, तूँ जिनि होवै दूर ॥ ३ ॥

(३५६)

इब हम राम सनेही पाया। आगम अनहद सौं चित लाया ॥
तन मन आतम ता कौं दीन्हा। तब हरि हम अपना करि लीन्हा ॥
बाणी बिमल पंच पराना। पहिली सीस[2] मिले भगवाना ॥
जीवत जनम सुफल करि लीन्हा। पहिली चेते तिन भल कीन्हा ॥
औसरि आपा ठौर लगावा। दादू जीवत ले पहुँचावा ॥

(३५७)

॥ ग्रंथ कायाबेली ॥

साचा सतगुर राम मिलावै। सब कुछ काया माहिं दिखावै ॥टेक॥
काया माहैं सिरजनहार। काया माहैं ओंकार ॥ १ ॥
काया माहैं है आकास। काया माहैं धरती पास ॥ २ ॥
काया माहैं पवन प्रकास। काया माहैं नीर निवास ॥ ३ ॥
काया माहैं ससिहर[3] सूर। काया माहैं बाजे तूर ॥ ४ ॥
काया माहैं तीन्यूँ देव। काया माहैं अलख अभेव ॥ ५ ॥
काया माहैं चारच्यूँ वेद। काया माहैं पाया भेद ॥ ६ ॥
काया माहैं चारच्यूँ खाणी। काया माहैं चारच्यूँ बाणी ॥ ७ ॥
काया माहैं उपजै आइ। काया माहैं मरि मरि जाय ॥ ८ ॥
काया माहैं जामै मरै। काया माहैं चौरासी फिरै ॥ ९ ॥
काया माहैं ले अवतार। काया माहैं बारम्बार ॥१०॥

---

(१) कष्ट। (२) "सीस" अर्थात् आपा—पहिले आपा को भेंट किया तब भगवान मिले।
(३) चंद्र।

काया माहैं राति दिन, उदै अस्त इकतार।
दादू पाया परम गुर, कीया एकंकार ॥११॥
(३५८)

काया माहैं खेल पसारा। काया माहैं प्राण अधारा ॥१२॥
काया माहँ अठारह भारा[1]। काया माहँ उपावणहारा[2] ॥१३॥
काया माहैं सब बनराइ। काया माहँ रहे घर छाइ ॥१४॥
काया माहैं कंदलि[3] बास। काया माहैं है कविलास ॥१५॥
काया माहैं तरवर छाया। काया माहैं पंखी माया ॥१६॥
काया माहैं आदि अनन्त। काया माहैं है भगवन्त ॥१७॥
काया माहैं त्रिभुवन राइ। काया माहैं रह्या समाइ ॥१८॥
काया माहैं सरग पयाल। काया माहैं आप दयाल ॥१९॥
काया माहैं चौदह भवन। काया माहैं आवागवन ॥२०॥
काया माहैं सब ब्रह्मंड। काया माहैं है नौखंड ॥२१॥

काया माहैं लोक सब, दादू दिये दिखाइ।
मनसा बाचा कर्मना, गुर बिन लख्या न जाइ ॥२२॥
(३५९)

काया माहैं सागर सात। काया माहैं अविगत[4] नाथ ॥२३॥
काया माहैं नदिया नीर। काया माहैं गहर गँभीर ॥२४॥
काया माहैं सरवर पाणी। काया माहैं बसैं बिनाणी[5] ॥२५॥
काया माहैं नीर निवान[6]। काया माहैं हंस सुजान ॥२६॥
काया माहैं गंग तरंग। काया माहैं जमना संग ॥२७॥
काया माहैं है सुरसती। काया माहैं द्वारामती ॥२८॥
काया माहैं कासी थान। काया माहैं करै सनान ॥२९॥
काया माहैं पूजा पाती। काया माहैं तीरथ जाती ॥३०॥
काया माहैं मुनियर मेला। काया माहैं आप अकेला ॥३१॥
काया माहैं जपिये जाप। काया माहैं आपै आप ॥३२॥

---

(१) अट्ठारह प्रपंच सृष्टि के ब्रह्माण्ड में और अट्ठारह पिंड में कहे हैं। (२) पैदा करने वाला। (३) गुफा। (४) जिसकी गति कोई नहीं जानता। (५) विज्ञानी। (६) नीचा।

काया नगर निधान है, माहैं कौतिग होइ।
दादू सतगुर संगि ले, भूलि पड़ै जिनि कोइ ॥३३॥

(३६०)

काया माहैं बिषमी बाट। काया माहैं औघट घाट ॥३४॥
काया माहैं पट्टण गाँव। काया माहैं उत्तिम ठाँव ॥३५॥
काया माहैं मंडप छाजै। काया माहैं आप बिराजै ॥३६॥
काया माहैं महल अवास। काया माहैं निहचल बास ॥३७॥
काया माहैं राज दुवार। काया माहैं बोलणहार ॥३८॥
काया माहैं भरे भँडार। काया माहैं बस्तु अपार ॥३९॥
काया माहैं नौ निधि होइ। काया माहैं अठ सिधि सोइ ॥४०॥
काया माहैं हीरा साल[1]। काया माहैं निपजै लाल ॥४१॥
काया माहैं माणिक भरे। काया माहैं ले ले धरे ॥४२॥
काया माहैं रतन अमोल। काया माहैं मोल न तोल ॥४३॥

काया महँ करतार है, सो निधि जाणै नाहिं।
दादू गुरमुख पाइये, सब कुछ काया माहिं ॥४४॥

(३६१)

काया माहैं सब कुछ जाणि। काया माहैं लेहु पिछाणि ॥४५॥
काया माहैं बहु बिस्तार। काया माहैं अनन्त अपार ॥४६॥
काया माहैं अगम अगाध। काया माहैं निपजै साध ॥४७॥
काया माहैं कह्या न जाइ। काया माहैं रहै ल्यौ लाइ ॥४८॥
काया माहैं साधन सार। काया माहैं करै बिचार ॥४९॥
काया माहैं अमृत बाणी। काया माहैं सारँग प्राणी ॥५०॥
काया माहैं खेलै प्राण। काया माहैं पद निर्बाण ॥५१॥
काया माहैं मूल गहि रहै। काया माहैं सब कुछ लहै ॥५२॥
काया माहैं निज निरधार। काया माहैं अपरम्पार ॥५३॥
काया माहैं सेवा करै। काया माहैं नीझर झरै ॥५४॥

---

(१) सार।

काया माहैं बास करि, रहै निरन्तर छाइ।
दादू पाया आदि घर, सतगुर दिया दिखाइ ॥५५॥

(३६२)

काया माहैं अनभै सार। काया माहैं करै बिचार ॥५६॥
काया माहैं उपजै ज्ञान। काया माहैं लागै ध्यान ॥५७॥
काया माहैं अमर अस्थान। काया माहैं आतम राम ॥५८॥
काया माहैं कला अनेक। काया माहैं करता एक ॥५९॥
काया माहैं लागै रंग। काया माहैं साँईं संग ॥६०॥
काया माहैं सरवर तीर। काया माहैं कोकिल कीर[1] ॥६१॥
काया माहैं कच्छब नैन। काया माहैं कुंजी बैन ॥६२॥
काया माहैं कँवल प्रकास। काया माहैं मधुकर बास ॥६३॥
काया माहैं नाद कुरंग[2]। काया माहैं जोति पतंग ॥६४॥
काया माहैं चातृग मोर। काया माहैं चंद चकोर ॥६५॥

काया माहैं प्रीति करि, काया माहिं सनेह।
काया माहैं प्रेम रस, दादू गुरमुख येह ॥६६॥

(३६३)

काया माहैं तारण हार। काया माहैं उतरै पार ॥६७॥
काया माहैं दूतर[3] तारै। काया माहैं आप उबारै ॥६८॥
काया माहैं दूतरि तिरै। काया माहैं होइ उधरै ॥६९॥
काया माहैं निपजै आइ। काया माहैं रहै समाइ ॥७०॥
काया माहैं खुलै कपाट। काया माहँ निरंजन हाट ॥७१॥
काया माहैं है दीदार। काया माहैं देखणहार ॥७२॥
काया माहँ राम रग राते। काया माहँ प्रेम रस माते ॥७३॥
काया माहैं अबिचल भये। काया माहैं निहचल रहे ॥७४॥
काया माहैं जीवै जीव। काया माहैं पाया पीव ॥७५॥
काया माहैं सदा अनंद। काया माहैं परमानंद ॥७६॥

---

(१) कोइल और तोंता अर्थात् मनसा और मन। (२) हिरन। (३) कठिन, जो तरने के योग्य नहीं है।

काया माहैं कुसल है, सो हम देख आइ।
दादू गुरमुख पाइये, साध कहैं समझाइ ॥७७॥

(३६४)

काया माहैं देख्या नूर। काया माहैं रह्या भरपूर ॥७८॥
काया माहैं पाया तेज। काया माहैं सुंदर सेज ॥७९॥
काया माहैं पुंज प्रकास। काया माहैं सदा उजास ॥८०॥
काया माहैं झिलिमिलि सारा। काया माहैं सब थैं न्यारा ॥८१॥
काया माहैं जोति अनंत। काया माहैं सदा बसन्त ॥८२॥
काया माहैं खेलै फाग। काया माहैं सब बन बाग ॥८३॥
काया माहैं खेलै रास। काया माहैं बिबिध बिलास ॥८४॥
काया माहैं बाजैं बाजे। काया माहँ नाद धुनि साजे ॥८५॥
काया माहैं सेज सुहाग। काया माहैं मोटे भाग ॥८६॥
काया माहैं मंगलचार। काया माहैं जैजैकार ॥८७॥

काया अगम अगाध है, माहैं तूर बजाइ।
दादू परगट पिव मिल्या, गुरमुखि रहे समाइ ॥८८॥

॥ राग बसंत ॥

(३६५)

निर्मल नाउँ न लीया जाइ। जा के भाग बड़े सोई फल खाइ ॥
मन माया मोह मद मांते, कर्म कठिन ता माहिं परे।
बिषै बिकार मान मन माहीं, सकल मनोरथ स्वाद खरे ॥१॥
काम क्रोध ये काल कल्पना, मैं मैं मेरी अति अहंकार।
तृष्णा तृपति न मानैं कबहूँ, सदा कुसंगी पंच बिकार ॥२॥
अनेक जोध रहैं रखवाले, दुर्लभ दूरि फल अगम अपार।
जा के भाग बड़े सोई फल पावै, दादू दाता सिरजनहार ॥३॥

(३६६)

तूँ घरि आवने म्हारे रे, हूँ जाऊँ वारणे त्हारे रे ॥ टेक ॥
रैनि दिवस मूनै निरखताँ जाये।

वेलो थई[1] घरि आवै वाल्हा आकुल थाये ॥ १ ॥
तिल तिल हूँ तो त्हारी बाटड़ी जोऊँ ।
एणी रे आँसूड़े वाल्हा मुखड़ो धोऊँ ॥ २ ॥
त्हारी दया करि धरि आवे रे वाल्हा ।
दादू तो त्हारो छे रे मा कर टाला[2] ॥ ३ ॥

(३६७)

मोहन दुख दीरघ तूँ निवार, मोहिं सतावै बारंबार ॥टेक॥
काम कठिन घट रहै माहिं, ता थैं ज्ञान ध्यान दोउ उदै नाहिं ।
गति मति मोहन बिकल मोर, ता थैं चीति न आवे नाँव तोर ॥
पाँचौं दूँदर[3] देह पूरि, ता थैं सहज सील सत रहैं दूरि ।
सुधि बुधि मेरी गई भाज, ना थैं तुम बिसरे महराज ॥
क्रोध न कबहूँ तजै संग, ता थैं भाव भजन का होइ भंग ।
समझि न काई[4] मन मँझारि, ताथैं चरण बिमुख भये श्रीमुरारि ॥
अंतरजामी करि सहाइ, तेरो दीन दुखित भयो जनम जाइ ।
त्राहि त्राहि प्रभु तूँ दयाल, कहै दादू हरि करि सँभाल ॥

(३६८)

मेरे मोहन मूरति राखि मोहिं, निसबासुरि गुनरमौं तोहिं ॥ टेक ॥
मन मीन होइ ज्यूँ स्वाद खाइ, लालच लाग्यो जल थैं जाइ ।
मन हस्ती मातौ अपार, काम अंध गज लहै न सार ॥१॥
मन मतंग पावग[5] परै, अग्नि न देखै ज्यूँ जरै ।
मन मिरगा ज्यूँ सुनै नाद, प्राण तजै यूँ जाइ बाद ॥२॥
मन मधुकर जैसें लुबधि बास, कँवल बँधावै होइ नास ।
मनसा बाचा सरण तोर, दादू कौं राखौ गोब्यँद मोर ॥३॥

(३६९)

बहुरि न कीजै कपट काम, हिरदै जपिये राम नाम ॥ टेक ॥

---

(१) देर हुई । (२) उसे हटाव मत । (३) दन्द्व । (४) कोई । (५) आग ।

हरि पाषैं[1] नहिं कहूँ ठाम, पिव बिन खड़भड़[2] गाँव गाँव ।
तुम राखौ जियरा अपनी माम,[3] अनत जिनि जाय रहो बिश्राम ॥१॥
कपट काम नहिं कीजै हाम,[4] रहु चरन कँवल कहु राम नाम ।
जब अंतरजामी रहै जाम, तब अखै पद जन दादू प्राम[5] ॥२॥

(३७०)

तहँ खेलौं नितहीं पिव सूँ फाग । देखि सखी री मेरे भाग ॥टेक॥
तहँ दिन दिन अति आनंद होइ, प्रेम पिलावै आप सोइ ।
संगियन सेती रमौं रास, तहँ पूजा अरचा चरन पास ॥१॥
तहँ बचन अमोलिक सबहिं सार, तहँ बरतै लीला अति अपार ।
उमंगि देइ तब मेरे भाग, तिहि तरवर फल अमर लाग ॥२॥
अलख देव कोइ जाणै भेव, तहँ अलख देव की कीजै सेव ।
दादू बलि बलि बारबार, तहँ आप निरंजन निराधार ॥३॥

(३७१)

मोहन माली सहजि समाना । कोई जाणै साध सुजाना ॥टेक॥
काया बाड़ी माहैं माली, तहाँ रास बनाया ।
सेवग सौं स्वामी खेलन कौं, आप दया करि आया ॥ १ ॥
बाहरि भीतरि सर्ब निरंतरि, सब में रह्या समाई ।
परगट गुप्त गुप्त पुनि परगट, अविगत लख्या न जाई ॥ २ ॥
ता माली की अकथ कहाणी, कहत कही नहिं आवै ।
अगम अगोचर करै अनंदा, दादू ये जस गावै ॥ ३ ॥

(३७२)

मन मोहन मेरे मनहिं माहिं । कीजै सेवा अति तहाँ ॥टेक॥
तहँ पायो देव निरंजना, परगट भयो हरि ये तनाँ ।
नैन नहीं निरखौं अघाइ, प्रगट्यो है हरि मेरे भाइ ॥ १ ॥
मोहिं कर नैनन की सैन देइ, प्राण मूसि हरि मोर लेइ ।
तब उपजै मोकौं इहै बाणि, निज निरखत हौं सारंग पाणि ॥ २ ॥

(१) बिना । (२) खड़बड़ । (३) सहारा । (४) हिम्मत । (५) जब अंतरजामी आठ पहर हृदय में रहै तब, हे दादू, अक्षय पद मिले ।

अंकुर आदैं प्रगट्यौ सोइ, बैन बान ता थैं लागे मोहिं।
सरणैं दादू रह्यौ जाइ, हरि चरण दिखावै आप आइ ॥३॥

(३७३)

मतवाले पंचूँ प्रेम पूरि, निमख न इत उत जाहिं दूरि ॥टेक॥
हरि रस माते दया दीन, राम रमत ह्वै रहे लीन।
उलटि अपूठे भये थीर, अमृत धारा पिवहिं नीर ॥१॥
सहजि समाधी तजि बिकार, अविनासी रस पिवहिं सार।
थकित भये मिलि महल माहिं, मनसा बाचा आन नाहिं ॥२॥
मन मतवाला राम रंगि, मिलि आसणि बैठे एक संगि।
इस्थिर दादू एक अंग, प्राणनाथ तहँ परमानंद ॥३॥

॥ राग भैरो ॥

(३७४)

सतगुर चरणा मस्तक धरणा, राम नाम कहि दूतर तिरणा ॥
अठ सिधि नव निधि सहजैं पावै, अमर अभै पद सुख में आवै॥
भगति मुकति बैकुंठाँ जाइ, अमर लोक फल लेवै आइ ॥
परम पदारथ मंगलचार, साहिब के सब भरे भँडार ॥
नूर तेज है जोति अपार, दादू राता सिरजनहार ॥

(३७५)

तन हीं राम मन हीं राम, राम रिदै रमि राखी ले ॥ टेक ॥
मनसा राम सकल परिपूरण, सहज सदा रस चाखी ले।
नैना राम बैना राम, रसना राम सँभारी ले।
स्रवणाँ राम सन्मुख राम, रमिता राम बिचारी ले ॥ १ ॥
साँसै राम सुरतै राम, सबदै राम समाई ले।
अंतरि राम निरंतरि राम, आतम राम ध्याई ले ॥ २ ॥
सबैं राम संगे राम, राम नाम ल्यौ लाई ले।
बाहरि राम भीतरि राम, दादू गोबिंद गाई ले ॥ ३ ॥

(३७६)

ऐसी सुरति राम ल्यौ लाइ, हरि हिरदै जिनि बीसरि जाइ ।।टेक।।
छिन छिन मात सँभारै, पूत, बिंद राखै जोगी औधूत[१] ।
त्रिया कुरूप रूप कौं रटै, नटनी निरखि बाँस ब्रत[२] चढ़ै ।।१।।
कच्छिब दृष्टी धरै धियान, चात्रिग नीर प्रेम की बान ।
कुँजी कुरलि संभालै सोइ, भृङ्गी ध्यान कीट कौं होइ ।।२।।
स्रवणौं सबद ज्यूँ सुनै कुरंग,[३] जोति पतंग न मोड़ै अङ्ग ।
जल बिन मीन तलफि ज्यों मरै, दादू सेवग ऐसैं करै ।।३।।

(३७७)

निर्गुण राम रहै ल्यौ लाई । सहजैं सहज मिलै हरि जाइ ।।
भौजल व्याधि लिपै नहिं कबहूँ । करम न कोई लागै आइ ।।
तीन्यूँ ताप जरै नहिं जियरा । सो पद परसै सहज सुभाइ ।।
जनम जुरा जोनि नहिं आवै । माया मोह न लागै ताहि ।।
पाँचौं पीड़ प्राण नहिं व्यापै । सकल सोधि सब इहै उपाइ ।।
संकुट संसा नरक न नैनहुँ । ता कौं कबहूँ काल न खाइ ।।
कंप[४] न काई भै भ्रम भागै । सब बिधि ऐसी एक लगाइ ।।
सहज समाधि गहौ जे डिढ़ करि । जा सौं लागै सोई आइ ।।
भृङ्गी होइ कीट की न्याईं । हरि जन दादू एक दिखाइ ।।

(३७८)

धनि धनि तूँ धनि धणी, तुम्ह सौं मेरी आइ बणी ।।टेक।।
धनि धनि तूँ तारै जगदीस, सुर नर मुनि जन सेवैं ईस ।
धनि धनि तूँ केवल राम, सेस सहस मुख ले हरि नाम ।।१।।
धनि धनि तूँ सिरजनहार, तेरा कोइ न पावै पार ।
धनि धनि तूँ निरंजन देव, दादू तेरा लखै न भेव ।। २ ।।

(३७९)

का जाणौ मोहिं का ले करसी ।
तनहिं ताप मोहिं छिन न विसरसी ।। टेक ।।

(१) जोगी अवधूत बीर्य को पात नहीं होने देते । (२) रस्सी । (३) हिरन । (४) मैल ।

आगम मो पैं जान्यूँ न जाइ । इहै बिमासण[1] जियरे माहिं ॥१॥
मैं नहिं जाणौं क्या सिरि होइ । ता थैं जियरा डरपै रोइ ॥२॥
काहू थैं ले कछू करै । ता थैं मइया जीव डरै ॥३॥
दादू न जाणे कैसें कहै । तुम सरणागति आइ रहै ॥४॥

(३८०)

का जाणौं राम को गति मेरी । मैं बिषयी मनसा नहिं फेरी ॥
जे मन माँगै सोई दीन्हा । जाता देखि फेरि नहिं लीन्हा ॥
देवा दुन्दर अधिक पसारे । पंचौं पकरि पटकि नहिं मारे ॥
इन बातनि घट भरे बिकारा । तृष्णा तेज मोह नहिं हारा ॥
इनहिं लागि मैं सेव न जाणी । कहे दादू सो कर्म कहाणी ॥

(३८१)

डरिये रे डरिये । ता थैं राम नाम चित धरिये ॥टेक॥
जिन ये पंच पसारे रे । मारे रे ते मारे रे ॥ १ ॥
जिन ये पंच समेटे रे । भेटे रे ते भेटे रे ॥ २ ॥
कच्छिब ज्यूँ करि लीये रे । जीये रे ते जीये रे ॥ ३ ॥
भृङ्गी कीट समाना रे । ध्याना रे यहु ध्याना रे ॥ ४ ॥
अज्या[2] सिंह ज्यूँ रहिये रे । दादू दरसन लहिये रे ॥ ५ ॥

(३८२)

तहँ मुझ कमीन की कौण चलावै ।
जा कौं अजहूँ मुनि जन महल न पावै ॥ टेक ॥
सिव बिरंच नारद जस[3] गावै । कौन भाँति करि निकटि बुलावै ॥
देवा सकल तेंतीसौं कोरि[4] । रहे दरबार ठाढ़े कर जोरि ॥
सिध साधिक रहे ल्यौ लाइ । अजहूँ मोटे[5] महल न पाइ ॥
सब थैं नीच मैं नाँव न जाना । कहै दादू क्यूँ मिलै सयाना ॥

(३८३)

तुम्ह बिन कहु क्यौं जीवन मेरा । अजहुँ न देख्या दरसन तेरा ॥

(१) पछतावा । (२) बकरी । (३) कीर्ति । (४) करोड़ । (५) बड़ा ।

होहु दयाल दीन के दाता । तुम पति पूरण सब बिधि साचा ॥
जो तुम्ह करो सोई तुम्ह छाजे । अपणे जन कौं काहे न निवाजै ॥
अकरन करन ऐसें अब कीजे । अपनो जानि करि दरसन दीजे ॥
दादू कहै सुनहु हरि साँईं । दरसन दीजे मिलो गुसाँईं ॥

(३८४)

कागा रे करंक परि बोलै । खाइ मांस अरु लगहीं[1] डोलै ॥टेक॥
जा तन कौं रचि अधिक सँवारा । सो तन ले माटी में डारा ॥
जा तन देखि अधिक नर फूले । सो तन छाड़ि चल्या रे भूले ॥
जा तन देखि मन में गरबाना । मिलि गया माटी तजि अभिमाना ॥
दादू तन की कहा बड़ाई । निमख माहिं माटी मिलि जाई ॥

(३८५)

जपि गोबिंद बिसरि जिनि जाइ । जनम सुफल करिये लै लाइ ॥
हरि सुमिरण स्यूँ हेत लगाइ । भजन प्रेम जस गोबिंद गाइ ॥
मनिषा देह मुकति का द्वारा । राम सुमिरि जग सिरजनहारा ॥
जब लग बिषम ब्याधि नहिं आई । जब लग काल काया नहिं खाई ॥
जब लग सब्द पलटि नहिं जाई । तब लग सेवा करि राम राई ॥
ओसरि राम कहसि नहिं लोई । जनम गया तब कहै न कोई ॥
जब लग जीवै तब लग सोई । पीछे फिरि पछितावा होई ॥
साँईं सेवा सेवग लागे । सोई पावै जे कोइ जागे ॥
गुरमुखि तिमर भर्म सब भागे । बहुरि न उलटे मारगि लागे ॥
ऐसा ओसर बहुरि न तेरा । देखि बिचारि समझि जिय मेरा ॥
दादू हारि जीति जगि आया । बहुत भाँति कहि कहि समझाया ॥

(३८६)

राम नाम तत काहे न बोलै । रे मन मूढ़ अनत जिनि डोलै ॥
भूला भरमत जनम गमावै । यहु रस रसना काहे न गावै ॥
क्या झखि[2] औरै परत जँजालै । बाणी बिमल हरि काहे न सँभालै ॥

---

(१) पास, निकट । (२) झांकना ।

राम बिसारि जनम जिनि खोवै । जपि ले जीवनि साफल होवै ॥
सार सुधा सदा रस पीजै । दादू तन धरि लाहा लीजै ॥

(३८७)

आप आपण में खोजौ रे भाई । बस्तु अगोचर गुरु लखाई ॥टेक॥
ज्यूँ मही बिलोयें माखण आवै । त्यूँ मन मथियाँ तें तत पावै ॥
काठ हुतासन[1] रह्या समाइ । त्यूँ मन माहिं निरंजन राइ ॥
ज्यूँ अवनी[2] में नीर समाना । त्यूँ मन माहैं साच सयाना ॥
ज्यूँ दर्पन के नहिं लागै काई । त्यूँ मूरति माहैं निरख लखाई ॥
सहजैं मन मथियाँ तें तत पाया । दादू उन तौ आप लखाया ॥

(३८८)

मन मैला मनहीं स्यूँ धोइ । उनमनि लागै निर्मल होइ ॥टेक॥
मनहीं उपजै बिषै बिकार । मनहीं निर्मल त्रिभुवन सार ॥
मनहीं दुबिधा नाना भेद । मनहीं समझै द्वै पष छेद ॥
मन हीं चंचल चहुँ दिसि जाइ । मनहीं निहचल रह्या समाइ ॥
मनहीं उपजै अगिनि सरीर । मनहीं सीतल निर्मल नीर ॥
मन उपदेस मनहिं समझाइ । दादू यहु मन उनमनि लाइ ॥

(३८९)

रहु रे रहु मन मारौंगा । रती रती करि डारौंगा ॥ टेक ॥
खंड खंड करि नाखौंगा[3] । जहाँ राम तहँ राखौंगा ॥ १ ॥
कह्या न मानै मेरा । सिर भानौंगा तेरा ॥ २ ॥
घर में कदे न आवै । बाहरि कौं उठि धावै ॥ ३ ॥
आतम राम न जानै । मेरा कह्या न मानै ॥ ४ ॥
दादू गुरमुखि पूरा । मन सौं जूझै सूरा ॥ ५ ॥

(३९०)

नर्भै नाँव निरंजन लीजै । इन लोगन का भय नहिं कीजै ॥टेक॥
सेवग सूर संक नहिं मानै । राणा राव रंक करि जानै ॥१॥

(१) आग । (२) पृथ्वी । (३) डालूँगा ।

नाँव निसंक मगन मतवाला । राम रसाइन पिवै पियाला ॥२॥
सहजैं सदा राम रँगि राता । पूरण ब्रह्म प्रेम रस माता ॥३॥
हरि बलवन्त सकल सिरि गाजै । दादू सेवग कैसैं भाजै ॥४॥

(३८१)

ऐसो अलख अनंत अपारा, तीनि लोक जाकौ बिस्तारा ॥टेक॥
निर्मल सदा सहजि घरि रहै, ता कौ पार न कोई लहै ।
निर्गुण निकटि सब रह्यो समाइ, निहचल सदा न आवै जाइ ॥१॥
अबिनासी है अपरंपार, आदि अनंत रहै निरधार ।
पावन सदा निरंतर आप, कला अतीत लिपत नहिं आप ॥२॥
समरथ सोई सकल भरपूरि, बाहरि भीतरि नेड़ा न दूरि ।
अकल[1] आप कलै[2] नहिं कोई, सब घट रह्यौ निरंजन होई ॥३॥
अबरण आपैं अजर अलेख, अगम अगाध रूप नहिं रेख ।
अविगत की गति लखी न जाइ, दादू दीन ताहि चित लाइ ॥४॥

(३८२)

ऐसौं राजा सेऊँ ताहि, और अनेक सब लागे जाहि ॥टेक॥
तीनि लोक गृह धरे रचाइ, चंद सूर दोउ दीपक लाइ ।
पवन बुहारै गृह अँगणा, छपन कोटि जल जा के घराँ ॥१॥
राते सेवा संकर देव, ब्रह्म कुलाल[3] न जानै भेव ।
कीरति करणा चारचूँ वेद, नेति नेति नवि[4] जाणै भेद ॥२॥
सकल देव-पति सेवा करैं, मुनि अनेक एक चित धरैं ।
चित्र विचित्र लिखैं दरबार, धर्मराइ ठाढ़े गुणसार ॥३॥
रिधि सिधि दासी आगैं रहैं, चारि पदारथ जी जी कहैं ।
सकल सिद्धि रहे ल्यौ लाइ, सब परिपूरण ऐसौ राइ ॥४॥
खलक खजीना भरे भँडार, ता घरि बरतै सब संसार ।
पूरि दिवान सहजि सब दे, सदा निरंजन ऐसौ है ॥५॥

---

(१) अकाल । (२) मारै । (३) कुम्हार । (४) नहीं ।

नारद गाइए गुण गोबिंद, सारदा करै सब छंद ।
नटवर नाचै कला अनेक, आपण देखै चरित अलेख ॥६॥
सकल साध बाजै नीसान, जै जै कार न मेटै आन ।
मालनि पहुप अठारह भार, आपण दाता सिरजनहार ॥७॥
ऐसौ राजा सोई आहि, चौदह भुवन में रह्यौ समाइ ।
दादू ता की सेवा करै, जिन यहु रचि ले अधर धरै ॥८॥

(३९३)

जब यहु मैं मैं मेरी जाइ । तब देखत बेगि मिलै राम राइ ॥टेक॥
मैं मैं मेरी तब लग दूरि । मैं मैं मेटि मिलै भरपूरि ॥ १ ॥
मैं मैं मेरी तब लग नाहिं । मैं मैं मेटि मिलै मन माहिं ॥ २ ॥
मैं मैं मेरी न पावै कोइ । मैं मैं मेटि मिलै जन सोइ ॥ ३ ॥
दादू मैं मैं मेरी मेटि । तब तूँ जाणि राम सौं भेटि ॥ ४ ॥

(३९४)

नाहीं रे हम नाहीं रे, सत्ति राम सब माहीं रे ॥टेक॥
नाहीं धरणि अकासा रे, नाहीं पवन प्रकासा रे ।
नाहीं रबि ससि तारा रे, नहिं पावक परजारा रे ॥ १ ॥
नाहीं पंच पसारा रे, नाहीं सब संसारा रे ।
नहिं काया जीव हमारा रे, नहिं बाजी कौतिगहारा रे ॥ २ ॥
नाहीं तरवर छाया रे, नहिं पंखी नहिं माया रे ।
नाहीं गिरवर बासा रे, नाहीं समँद निवासा रे ॥ ३ ॥
नाहीं जल थल खंडा रे, नाहीं सब ब्रह्मंडा रे ।
नाहीं आदि अनंता रे, दादू राम रहंता रे ॥ ४ ॥

(३९५)

अलह कहौ भावै राम कहौ । डाल तजौ सब मूल गहौ ॥टेक॥
अलह राम कहि कर्म दहौ । झूठे मारगि कहा बहौ ॥ १ ॥
साधू संगति तौ निबहौ । आइ परै सो सीसि सहौ ॥ २ ॥
काया कँवल दिल लाइ रहौ । अलख अलह दीदार लहौ ॥ ३ ॥
सतगुर की सुणि सीख अहौ । दादू पहुँचे पार पहौ ॥ ४ ॥

(३९६)

हिंदू तुरक न जाणौं दोइ ।
साँईं सबनि का सोई है रे, और न दूजा देखौं कोइ ॥टेक॥
कीट पतंग सबै जोनिन में, जल थल संगि समाना सोइ ।
पीर पैगंबर देवा दानव, मीर मलिक मुनि जन कौं मोहि ॥१॥
कर्ता है रे सोई चीन्हौं, जिनि वै क्रोध करै रे कोइ ।
जैसें आरसी मञ्जन कीजै, राम रहीम देही तन धोइ ॥२॥
साँईं केरी सेवा कीजै, पायौ धन काहे कौं खोइ ।
दादू रे जन हरि भजि लीजै, जनमि जनमि जे सुरजन होइ ॥३॥

(३९७)

कोइ स्वामी कोइ सेख कहै । इस दुनिया का मर्म न कोई लहै ॥
कोई राम कोइ अलह सुनावै । पुनि अलह राम का भेद न पावै ॥
कोइ हिंदू कोइ तुरक करि मानै । पुनि हिंदू तुरक की खबरि न जानै ॥
यहु सब करणी दून्यूँ वेद[1] । समझ परी तब पाया भेद ॥
दादू देखै आतम एक । कहिबा सुनिबा अनंत अनेक ॥

(३९८)

निन्दत है सब लोक बिचारा । हम कौं भावै राम पियारा ॥टेक॥
निरसंसै निरदोष लगावै । ता थैं मो कौं अचिरज आवै ॥१॥
दुबिधा द्वै पष रहिता जे । ता सनि कहत गये रे ये ॥२॥
निरबैरी निहकामी साध । ता सिरि देत बहुत अपराध ॥३॥
लोहा कंचन एक समान । ता सनि कहत करत अभिमान ॥४॥
निन्द्या अस्तुति एकै तोलै । तासु कहैं अपवादहि बोलै ॥५॥
दादू निन्द्या ता कौं भावै । जा के हिरदै राम न आवै ॥६॥

(३९९)

माहरू स्यूँ जेहूँ आपूँ । ताहरूँ छै तूँनै थापूँ[2] ॥ टेक ॥
सब जीव नै तूँ दातार । तैं सिरज्या नै तूँ प्रतिपाल ॥ १ ॥
तन धन ताहरो तैं दीधो । हूँ ताहरो नै तैं कीधो ॥ २ ॥

---
(१) मत । (२) मेरा क्या है जो तुझे दूँ सब तेरा ही है सो तुझे भेंट करता हूँ ।

सहुवे[1] ताहरो साचौ ये। मैं ने माहरो झूठो ते ॥ ३ ॥
दादू नै मनि और न आवे। तूँ कर्ता नै तूँहि जु भावे ॥ ४ ॥

(४००)

ऐसा अवधू राम पियारा, प्राण प्यंड थैं रहै नियारा ॥ टेक ॥
जब लग काया तब लग माया, रहै निरंतर अवधू राया ॥१॥
अठ सिधि भाई नौ निधि आई, निकटि न जाई राम दुहाई ॥२॥
अमर अभै पद बैकुंठ बास, छाया माया रहै उदास ॥३॥
साँई सेवग सब दिखलावे, दादू दूजा दिष्टि न आवे ॥४॥

(४०१)

तूँ साहिब मैं सेवग तेरा। भावै सिर दे सूली मेरा ॥टेक॥
भावे करवत सिर पर सारि। भावे लेकर गरदन मारि ॥१॥
भावे चहुँ दिसि अगिन लगाइ। भावै काल दसौं दिसि खाइ ॥२॥
भावे गिरवर गगन गिराइ। भावै दरिया माहिं बहाइ ॥३॥
भावै कनक कसौटी देहु। दादू सेवग कसि कसि लेहु ॥४॥

(४०२)

काम क्रोध नहिं आवै मेरे। ताथैं गोबिंद पाया नेरे ॥ टेक ॥
भर्म कर्म जालि सब दीन्हा। रमिता राम सबनि में चीन्हा ॥१॥
दुबिधा दुरमति दूरि गँवाई। राम रमति साची मनि आई ॥२॥
नीच ऊँच मद्धिम को नाहीं। देखौं राम सबन के माहीं ॥३॥
दादू साच सबनि में सोई। पेंड[2] पकरि जन निर्भय होई ॥४॥

(४०३)

हाजिरा हजूर साँईं। है हरि नेड़ा दूरि नाहीं ॥टेक॥
मनी मेटि महल में पावै। काहे खोजन दूरि जावै ॥१॥
हिरस न होइ गुसा सब खाइ। ता थैं सँइयाँ दूरि न जाइ ॥२॥
दुई दूरि दरोग न होइ। मालिक मन में देखै सोइ ॥३॥
अरि[3] ये पंच सोधि सब मारै। तब दादू देखै निकटि बिचारै ॥४॥

---

(१) सब। (२) पेंड़ी, डाल। (३) शत्रु।

(४०४)

राम रमत देखै नहिं कोई। जो देखै सो पावन होई ॥टेक॥
बाहरि भीतरि नेड़ा न दूरि। स्वामी सकल रह्या भरपूरि ॥१॥
जहँ देखौं तहँ दूसर नाहिं। सब घटि राम समाना माहिं ॥२॥
जहाँ जाउँ तहँ सोई साथ। पूरि रह्या हरि त्रिभुवन नाथ ॥३॥
दादू हरि देखें सुख होई। निस दिन निरखन दीजे मोहिं ॥४॥

(४०५)

मन पवना ले उनमन रहै, अगम निगम मूल सो लहै ॥टेक॥
पंच बाइ जे सहजि समावै, ससिहर[1] के घरि आणै सूर।
सीतल सदा मिलै सुखदाई, अनहद सबद बजावै तूर ॥१॥
बंक नालि सदा रस पीवै, तब यहु मनवाँ कहीं न जाइ।
बिगसे कँवल प्रेम जब उपजे, ब्रह्म जीव की करै सहाइ ॥२॥
बैसि गुफा में जोति बिचारै, तब तेहिं सूझै त्रिभुवन राइ।
अंतरि आप मिलै अबिनासी, पद आनंद काल नहिं खाइ ॥३॥
जामण मरण जाइ भव भाजै, अबरण के घरि बरण समाइ।
दादू जाय मिलै जग-जीवन, तब यहु आवागवन बिलाइ ॥४॥

(४०६)

जीवनमूरि मेरे आतमराम। भाग बड़े पायो निज ठाम ॥टेक॥
सबद अनाहद उपजै जहाँ, सुखमन रंग लगावै तहाँ।
तहँ रँग लागै निर्मल होइ, ये तत उपजै जानै सोइ ॥१॥
सरवर[2] तहाँ हंसा रहै, करि असनान सबै सुख लहै।
सुखदाई कौं नैनहुँ जोइ, त्यूँ त्यूँ मन अति आनँद होइ ॥२॥
सो हंसा सरनागति जाइ, सुंदरि तहाँ पखालै पाँइ।
पीवै अमृत नीझर नीर, बैठे तहाँ जगत-गुर पीर ॥३॥
तहँ भाव प्रेम की पूजा होइ, जा परि किरपा जानै सोइ।
किरपा करि हरि देइ उमंग, ता जन पायो निर्भय संग ॥४॥

(१) चाँद। (२) मानसरोवर।

तब हंसा मन आनंद होइ, बस्त अगोचर लखै रे सोइ ।
जा कौं हरी लखावे आप, ताहि न लेपै पुन्य न पाप ॥५॥
तहँ अनहद बाजे अद्भुत खेल, दीपक जलै बाती बिन तेल ।
अखंड जोति तहँ भयौ प्रकास, फाग बसन्त जो बारह मास ॥६॥
त्री-अस्थान[1] निरंतरि निरधार, तहँ प्रभु बैठे समरथ सार ।
ननहुँ निरखौं तो सुख होइ, ताहि पुरिस कौं लखै न कोइ ॥७॥
ऐसा है हरि दीन-दयाल, सेवग की जानै प्रतिपाल ।
चलु हंसा तहँ चरण समान, तहँ दादू पहुँचे परिवान ॥८॥

(४०७)

घटि घटि गोपी घटिघटि कान्ह, घटिघटि राम अमर अस्थान ॥टेक॥
गंगा जमुना[2] अंतरबेद[3] । सुरसती[4] नीर बहै परसेद[5] ॥१॥
कुंज केलि तहँ परम बिलास । सब संगी मिलि खेलैं रास ॥२॥
तहँ बिन बेना बाजै तूर । बिगसै कँवल चंद अरु सूर ॥३॥
पूरण ब्रह्म परम परकास । तहँ निज देखै दादू दास ॥४॥

(४०८)

॥ राग ललित ॥

राम तूँ मोरा हूँ तोरा । पाँइन परत निहोरा ॥ टेक ॥
एकै संगैं बासा । तुम ठाकुर हम दासा ॥ १ ॥
तन मन तुम कौं देबा । तेज पुंज हम लेबा ॥ २ ॥
रस माहैं रस होइबा । जोति सरूपी जोइबा ॥ ३ ॥
ब्रह्म जीव का मेला । दादू नूर अकेला ॥ ४ ॥

(४०९)

मेरे गृह आवहु गुर मेरा । मैं बालक सेवग तेरा ॥ टेक ॥
मात पिता तूँ अम्हचा[6] स्वामी । देव हमारे अंतरजामी ॥ १ ॥
अम्हचा सज्जन अम्हचा बंधू । प्राण हमारे अम्हचा जिंदू ॥ २ ॥
अम्हचा प्रीतम अम्हचा मेला । अम्हची जीवनि आप अकेला ॥३॥

---

(१) त्रिकुटी । (२) पिंगला और इड़ा अथवा दाहिना और बायाँ स्वर । (३) मध्य स्थान । (४) सुखमना । (५) पसीना अर्थात् प्रेम धारा । (६) हमारा ।

अम्हचा साथी संग सनेही । राम बिना दुख दादू देही ॥ ४ ॥

(४१०)

वाल्हा म्हारा, प्रेम भगति रस पीजिये,
रमिये रमिता राम, म्हारा वाल्हा रे ।
हिरदा कँवल में राखिये, उत्तिम एहज ठाम, म्हारा वाल्हा रे ॥टेक॥
वाल्हा म्हारा, सतगुर सरणै अणसरै,[१]
साध समागम थाइ, म्हारा वाल्हा रे ।
बाणी ब्रह्म बखाणिये, आनँद में दिन जाइ, म्हारा वाल्हा रे ॥१॥
वाल्हा म्हारा आतम अनभै ऊपजै,
उपजै ब्रह्म गियान म्हारा वाल्हा रे ।
सुख सागर में झूलिये, साचौ ये असनान, म्हारा वाल्हा रे ॥२॥
वाल्हा म्हारा, भौ बन्धन सब छूटिये,
कर्म न लागै कोइ, म्हारा वाल्हा रे ।
जीवनि,मुकति फल पामिये, अमर अभय पद होइ, म्हारा वाल्हा रे ॥३॥
वाल्हा म्हारा, अठ सिधि नौ निधि आँगणै,
परम पदारथ चार, म्हारा वाल्हा रे ।
दादू जन देखै नहीं, रातौ सिरजनहार, म्हारा वाल्हा रे ॥४॥

(४११)

हमारौ मन माई, राम नाम रँगि रातौ ।
पिव पिव करै पीव कौं जानै, मगन रहै रस मातौ ॥टेक॥
सदा सील संतोष सु भावत, चरण कँवल मन बाँधौ ।
हिरदा माहिं जतन करि राखौं, मानौं रंक धन लाधौ[२] ॥ १ ॥
प्रेम भग्ति प्रीति हरि जानौं, हरि सेवा सुखदाई ।
ज्ञान ध्यान मोहन कौ मेरे, कंप[३] न लागै काई ॥ २ ॥
संगि सदा हेत हरि लागौ, अंगि और नहिं आवै ।
दादू दीनदयाल दमोदर, सार सुधा रस भावै ॥ ३ ॥

(१) अनुसार चलै । (२) पाया । (३) सोने की मैल ।

(४१२)

मिहरबान मिहरबान, आब बाद खाक आतस, आदम नीसान ॥टेक॥

सीस पाँव हाथ कीये, नैन कीये कान।
मुख कीया जीव दीया, राजिक रहमान ॥ १ ॥
मादर पिदर परदा-पोस, साँई सुबहान।
संग रहै दस्त गहै, साहिब सुलतान ॥ २ ॥
या करीम या रहीम, दाना तू दीवान।
पाक नूर है हजूर, दादू है हैरान ॥ ३ ॥

॥ राग जैतश्री ॥

(४१३)

तेरे नाँउ की बलि जाऊँ, जहाँ रहौं जिस ठाऊँ ॥ टेक ॥
तेरे बैनौं की बलिहारी, तेरे नैनहुँ ऊपरि वारी।
तेरि मूरति की बलि कीतो, वारि वारि हौं दीती ॥ १ ॥
सोभित नूर तुम्हारा, सुंदर जोति उजारा।
मीठा प्राण - पियारा, तूँ है पीव हमारा ॥ २ ॥
तेज तुम्हारा कहिये, निर्मल काहे न लहिये।
दादू बलि बलि तेरे, आव पिया तूँ मेरे ॥ ३ ॥

(४१४)

मेरे जिय की जाणै जाणराइ, तुम थैं सेवग कहा दुराइ ॥टेक॥
जल बिन जैसैं जाइ जिय तलफत, तुम बिन तैसैं हमहुँ बिहाइ।
तन मन ब्याकुल होइ बिरहनी, दरस पियासी प्रान जाइ ॥१॥
जैसैं चित्त चकोर चंदमनि, ऐसैं मोहन हमहिं आहि।
बिरह अगिनि दहत दादू कौं, दर्सन परसन तन सिराइ[1] ॥२॥

॥ राग धनाश्री ॥

(४१५)

रँग लागौ रे राम कौ, सो रँग कदे न जाई रे।
हरि रँग मेरौ मन रँग्यौ, और न रंग सुहाई रे ॥ टेक ॥

---

(१) शीतल होय।

अबिनासी रँग ऊपनौ, रचि मचि लागौ चौलौ रे ।
सो रँग सदा सुहावणौ, ऐसो रंग अमोलौ रे ॥ १ ॥
हरि रँग कदे न ऊतरै, दिन दिन होइ सुरंगौ रे ।
नित्त नवौ निरबाण है, कदे न होइला भंगौ रे ॥ २ ॥
साचौ रँग सहजैं मिल्यौ, सुंदर रंग अपारौ रे ।
भाग बिना क्यूँ पाइये, सब रँग माहैं सारौ रे ॥ ३ ॥
अबरण कौं का बरणिये, सो रँग सहज सरूपौ रे ।
बलिहारी उस रंग की, जन दादू देखि अनूपौ रे ॥ ४ ॥

(४१६)

लागि रह्यौ मन राम सौं, अब अनतैं नहिं जाये रे ।
अचला सौं थिर ह्वै रह्यौ, सकै न चीत डुलाये रे ॥टेक॥
ज्यूँ फुनिंग[1] चंदन रहै, परिमल[2] रहै लुभाये रे ।
त्यूँ मन मेरा राम सौं, अब की बेर अघाये रे ॥ १ ॥
भँवर न छाड़ै बास कूँ, कँवलिहिं रह्यौ बँधाये रे ।
त्यूँ मन मेरा राम सौं, बेधि रह्यौ चित लाये रे ॥ २ ॥
जल बिन मीन न जीवई, बिछुरत हीं मरि जाये रे ।
त्यूँ मन मेरा राम सौं, ऐसी प्रीति बनाये रे ॥ ३ ॥
ज्यूँ चात्रिग जल कौं रटै, पिव पिव करत बिहाये रे ।
त्यूँ मन मेरा राम सौं, जन दादू हेत लगाये रे ॥ ४ ॥

(४१७)

मन मोहन हो, कठिन बिरह की पीर । सुंदर दरस दिखाइये ॥टेक॥
सुनहु न दीनदयाल । तव मुख बैन सुनाइये ॥ १ ॥
करुणामय किरपाल । सकल सिरोमणि आइये ॥ २ ॥
मम जीवन प्राण - अधार । अबिनासी उर लाइये ॥ ३ ॥
इब हरि दरसन देहु । दादू प्रेम बढ़ाइये ॥ ४ ॥

---

(१) नाग । (२) सुगंधि ।

(४१८)

कतहूँ रहे हो बिदेस, हरि नहिं आये हो।
जनम सिरानौ जाइ, पिव नहिं पाये हो ॥टेक॥
बिपति हमारी जाइ, हरि सौं को कहै हो।
तुम्ह बिन नाथ अनाथ, बिरहनि क्यूँ रहै हो ॥ १ ॥
पिव के बिरह बियोग, तन की सुधि नहिं हो।
तलफि तलफि जिव जाइ, मिरतक ह्वै रही हो ॥ २ ॥
दुखित भई हम नारि, कब हरि आवैं हो।
तुम्ह बिन प्राण-अधार, जिव दुख पावै हो ॥ ३ ॥
प्रगटहु दीनदयाल, बिलम न कीजे हो।
दादू दुखी बेहाल, दरसन दीजे हो ॥ ४ ॥

(४१९)

मोहन माधो कब मिलै, सकल सिरोमणि राइ।
तन मन ब्याकुल होत है, दरस दिखावै आइ ॥टेक॥
नैन रहे पंथ जोवताँ, रोवण रैणि बिहाइ।
बाल-सनेही कब मिलै, मो पैं रह्या न जाइ ॥ १ ॥
छिन छिन अंगि अनल दहै, हरि जी कब मिलिहैं आइ।
अंतरजामी जाणि करि, मेरे तन की तपति बुझाइ ॥ २ ॥
तुम दाता सुख देत हो, हाँ हो सुणि दीनदयाल।
चाहैं नैन उतावले[1], हाँ हो कब देखौं लाल ॥ ३ ॥
चरन कँवल कब देखिहौं, सन्मुख सिरजनहार।
साँईं संग सदा रहौं, हाँ हो तब भाग हमार ॥ ४ ॥
जीवनि मेरी जब मिलै, हाँ हो तबहीं सुख होइ।
तन मन में तूँ ही बसै, हाँ हो कब देखौं सोइ ॥ ५ ॥
तन मन की तूँ ही लखै, हाँ हो सुणि चतुर सुजाण।
तुम देखे बिन क्यूँ रहौं, हाँ हो मोहिं लागे बाण ॥ ६ ॥

---

(१) जल्दी।

बिन देखें तुम पाइये, हाँ हो इब बिलंब न लाइ ।
दादू दरसन कारनै, हाँ हो सुख दीजे आइ ॥ ७ ॥

(४२०)

सुरजन[1] मेरा वे कीहैं पार लहाउँ ।
जे सुरजन घरि आवे वे, हिक कहाण कहाउँ[2] ॥टेक॥
तो बाझें[3] मे कौं चैन न आवे, ये दुख कीह कहाउँ ।
तो बाझें[3] मे कौं निंदु न आवे, अँखियाँ नीर भराउँ ॥ १ ॥
जे तूँ मे कौं सुरजन डेवै[4], सो हौं सीस सहाउँ ।
ये जन दादू सुरजन आवे, दरगह सेव कराउँ ॥ २ ॥

(४२१)

ये खुहि पये[5] सब भोग बिलासन, तैसहु वा कौ छत्र सिंघासन ॥टेक॥
जनत[6] हुँ राम भिस्त नहिं भावे, लाल पलिंग क्या कीजे ।
भाहि[7] लगै इहि सेज सुखासण, मे कौं देखण[8] दीजे ॥१॥
बैकुंठ मुकति सरग क्या कीजे, सकल भवन नहिं भावे ।
भठी पये[9] सब मंडप छाजे, जे घरि कंत न आवे ॥२॥
लोक अनंत अभय क्या कीजे, मैं बिरही जन तेरा ।
दादू दरसन देखण दीजे, ये सुनि साहिब मेरा ॥३॥

॥ राग काफी ॥

(४२२)[10]

अल्लह आसिकाँ ईमान ।
भिस्त दोजख दीन दुनिया, चिकारे रहमान ॥ टेक ॥

---

(१) सिरजनहार, भगवन्त । (२) एक बात कहूँ । (३) सिंध की गँवारी भाषा में बाझें के अर्थ बिना या बगैर के हैं । (४) दे । (५) कुए में पड़ें । (६) जन्नत या स्वर्ग । (७) आग । (८) दर्शन । (९) भाड़ में पड़ें । (१०) अल्लाह ही आशिकों का ईमान है, उस दयाल के मुकाबले में स्वर्ग नर्क दीन दुनिया सब किस काम के ॥टेक॥ ऐसे ही मीर की मीरी, पीर की पीरी, फरिश्ते का लाया हुकम, पानी, आग, ऊँचे आस्मानी मुक़ामात, उस मालिक के दीदार के सामने तुच्छ हैं ॥ १ ॥ दोनों जहान में, रचना में, सत मत में, हाजियों के हज [यात्रा] में, क़ाज़ियों के न्याव में तू ही सुलतान है ॥ २ ॥ विद्वानों की विद्या, सृष्टि मात्र का ज्ञान, खोजी की जिज्ञासा, भक्तों का भेद, इन सब में तेरा ही रूप प्रकाशित है ॥ ३ ॥ तू ही आदि है तू ही अंत है तुझी पर अवधूत न्योछावर है, आशिक़ों को अपना जलवा जो प्रकाश का पुञ्ज है दिखला ॥ ४ ॥

मीर मीरी पीर पीरी, फिरिस्ताँ फुरमान ।
आब आतिस अरस कुर्सी, दीदनी दीवान ॥ १ ॥
हर दो आलम खलक खाना, मोमिनाँ इसलाम ।
हजाँ हाजी कजा काजी, खान तू सुलतान ॥ २ ॥
इल्म आलिम मुल्क मालुम, हाजते हैरान ।
अजब याराँ खबरदाराँ, सूरते सुबहान ॥ ३ ॥
अवल आखिर एक तूँही, जिंद है कुरबान ।
आसिकाँ दीदार दादू, नूर का नीसान ॥ ४ ॥

(४२३)

अल्ला तेरा जिक्र[1] फिक्र[2] करते हैं ।
आसिकाँ मुस्ताक तेरे, तर्स तर्स मरते हैं ॥ टेक ॥
खलक खेस दिगर नेस, बैठे दिन भरते हैं ।
दायम दरबार तेरे, गैर महल डरते हैं[3] ॥ १ ॥
तन सहीद[4] मन सहीद, रात दिवस लड़ते हैं ।
ज्ञान तेरा ध्यान तेरा, इस्क आग जलते हैं ॥ २ ॥
जान तेरा जिंद तेरा, पावों सिर धरते हैं ।
दादू दीवान तेरा, जरखरीद[5] घर के हैं ॥ ३ ॥

(४२४)

मुखि बोलि स्वामी, तूँ अंतरजामी, तेरा सबद सुहावै रामजी ॥टेक॥
धेन चरावन बेन बजावन, दरस दिखावन कामिनी ॥ १ ॥
बिरह उपावन तपति बुझावन, अंगि लगावन भामिनी ॥ २ ॥
संगि खिलावन रास बनावन, गोपी भावन भूधरा ॥ ३ ॥
दादू तारण दुरित निवारण, संत सुधारण रामजी ॥ ४ ॥

(४२५)

हाथ दे हो रामा, तुम पूरण सब कामा । हौं तो उरझि रह्यो संसार ।टेक।
अंध कूप गृह में पर्‌यो, मेरी करहु सँभार ।
तुम बिन दूजा को नहीं, मेरे दीनानाथ दयार ॥ १ ॥

---

(१) सुमिरन । (२) ध्यान, चिन्तवन । (३) सृष्टि तेरा ही रूप है और कुछ नहीं है इस समझौती को दृढ़ किये हुए सदा तेरे दरबार में भक्त जन डटे रहते हैं और दूसरी ओर जाने से डरते हैं । (४) धर्म के लिये सिर देने वाला । (५) मोल लिया हुआ ।

मारग को सूझै नहीं, दह दिसि माया जार ।
काल पासि कसि बाँधियो, मेरो कोइ न छुड़ावनहार ॥ २ ॥
राम बिना छूटै नहीं, कीजै बहुत उपाइ ।
कोटि किया सुरझै नहीं, अधिक अरूझत जाइ ॥ ३ ॥
दीन दुखी तुम देखताँ, भय दुख भंजन राम ।
दादू कहै कर हाथ दे हो, तुम सब पूरण काम ॥ ४ ॥

(४२६)

जिनि छाड़ै राम जिनि छाड़ै, हमहिं बिसारि जिनि छाड़ै,
जीव जात न लागै बार जिनि छाड़ै ॥ टेक ॥
माता क्यूँ बालक तजै, सुत अपराधी होइ ।
कबहुँ न छाड़ै ज़ीव थैं, जिनि दुख पावै सोइ ॥ १ ॥
ठाकुर दीनदयाल है, सेवग सदा अचेत ।
गुण औगुण हरि ना गिणै, अंतरि ता सौं हेत ॥ २ ॥
अपराधी सुत सेवगा, तुम्ह हौ दीनदयाल ।
हम थैं औगुण होत है, तुम्ह पूरण प्रतिपाल ॥ ३ ॥
जब मोहन प्राणी चलै, तब देही किहि काम ।
तुम्ह जानत दादू का कहै, अब जिनि छाड़ौ राम ॥ ४ ॥

(४२७)

बिषम बार हरि अधार, करुणा बहु नामी ।
भगति भाइ बेगि आइ, भीड़-भँजन स्वामी ॥ टेक ॥
अंत अधार संत सधार, सुंदर सुखदाई ।
काम क्रोध काल ग्रसत, प्रगट्यो हरि आई ॥ १ ॥
पूरण प्रतिपाल कहिये, सुमिर्‌याँ थैं आवै ।
भर्म कर्म मोह लागे, काहे न छुड़ावै ॥ २ ॥
दीन दयाल होहु कृपाल, अंतरजामी कहिये ।
एक जीव अनेक लागे, कैसैं दुख सहिये ॥ ३ ॥
पावन पीव चरण सरण, जुगि जुगि तैं तारे ।
अनाथ नाथ दादू के, हरि जी हमारे ॥ ४ ॥

(४२८)

साजनिया नेह न तोरी रे ।

जो हम तोरैं महा अपराधी, तौ तूँ जोरी रे ॥ टेक ॥
प्रेम बिना रस फीका लागै, मीठा मधुर न होई ।
सकल सिरोमणि सब थैं नीका, कड़वा लागै सोई ॥ १ ॥
जब लगि प्रीति प्रेम रस नाहीं, त्रिषा बिना जल ऐसा ।
सब थैं सुंदर एक अमीरस, होइ हलाहल जैसा ॥ २ ॥
सुंदरि साँईं खरा पियारा, नेह नवा नित होवै ।
दादू मेरा तब मन मानै, सेज सदा सुख सोवै ॥ ३ ॥

(४२९)

काइमा[1] कीरति करौंली रे । तूँ मोटौ[2] दातार ।
सब तैं सिरजीला[3] साहिबजी, तूँ मोटौ कर्तार ॥ टेक ॥
चौदह भवन भानै घड़ै, घड़त न लागै बार ।
थापै उथपै तूँ धणी, धनि धनि सिरजनहार ॥ १ ॥
धरती अंबर तैं धरचा, पाणी पवन अपार ।
चंद सूर दीपक रच्या, रैण दिवस बिस्तार ॥ २ ॥
ब्रह्मा संकर तैं किया, बिस्नु दिया अवतार ।
सुर नर साधू सिरजिया, करि ले जीव विचार ॥ ३ ॥
आप निरंजन है रह्यो, काइमौं कौतिगहार ।
दादू निर्गुण गुण कहै, जाउँली हौं बलिहार ॥ ४ ॥

(४३०)

जियरा राम भजन करि लीजै ।
साहिब लेखा माँगैगा रे, ऊतर[4] कैसैं दीजै ॥टेक॥
आगैं जाइ पछितावन लागौ, पल पल यहु तन छीजै ।
ता थैं जिय समझाइ कहूँ रे, सुकिरत अब थैं कीजै ॥ १ ॥
राम जपत जम काल न लागै, संगि रहै जन जीजै ।
दादू दास भजन करि लीजै, हरिजी की रासि रमीजै ॥ २ ॥

(४३१)

काल काया गढ़ भेलिसी[5], छीजै दसौं दुवारो रे ।

(१) हे अडोल । (२) बड़ा । (३) सजीला, रूपवान । (४) जवाब । (५) मटिया मेल करता है ।

देखतड़ाँ ते लूटसी, होसी हाहाकारो रे ।।टेक।।
नाइक नगर न मेलसी, एकलड़ो ते जाई रे[1] ।
संग न साथी कोइ न आवसी, तहँ को जाणै किम थाई रे ।। १ ।।
संतजन साधो म्हारा भाईड़ा, काईं सुकिरत लीजै सारो रे ।
मारग विषमें चलिबौ, काईं लीजै प्राण अधारो रे ।। २ ।।
जिमि नीर निवाणा ठाहरै, तिमि साजी बाँधो पालो रे ।
समरथ सोई सेविये, तौ काया न लागै कालो रे ।। ३ ।।
दादू थिर मन आणिये, तौ निहचल थिर थाये रे ।
प्राणो नें पूरो मिलौ, तौ काया न मेलो जाये रे ।। ४ ।।

(४३२)

डरिये रे डरिये, परमेसुर थैं डरिये रे ।
लेखा लेवै भरि भरि देवै, ता थैं बुरा न करिये रे ।।टेक।।
साचा लीजी साचा दीजी, साचा सौदा कीजी रे ।
साचा राखी झूठा नाखी, बिष ना पीजी रे ।। १ ।।
निर्मल गहिये निर्मल रहिये, निर्मल कहिये रे ।
निर्मल लीजी निर्मल दीजी, अनत न बहिये रे ।। २ ।।
साह पठाया बनिज न आया, जिनि डहकावै रे ।
झूठ न भावै फेरि पठावै, कीया पावै रे ।। ३ ।।
पंथ दुहेला जाइ अकेला, भार न लीजी रे ।
दादू मेला होइ सुहेला, सो कुछ कीजी रे ।। ४ ।।

(४३३)

डरिये रे डरिये, देखि देखि पग धरिये ।
तारे तरिये मारे मरिये, ता थैं गर्ब न करिये रे डरिये ।।टेक।।
देवै लेवै समरथ दाता, सब कुछ छाजै रे ।
तारै मारै गर्ब निवारै, बैठा गाजै रे ।। १ ।।
राखैं रहिये बाहैं बहिये, अनत न लहिये रे ।
भानै घड़ै सँवारै आपै, ऐसा कहिये रे ।। २ ।।

(१) शरीर का नायक जीवातमा शरीर में न मिलेगा अर्थात् उसको छोड़कर अकेला जायगा।

निकटि बुलावै दूरि पठावै, सब बनि आवै रे।
पाके काचे काचे पाके, ज्यूँ मन भावै रे ॥ ३ ॥
पावक पाणी पाणी पावक, करि दिखलावै रे।
लोहा कंचन कंचन लोहा, कहि समझावै रे ॥ ४ ॥
ससिहर सूर सूर थैं ससिहर, परगट खेलै रे।
धरती अंबर अंबर धरती, दादू मेलै रे ॥ ५ ॥

(४३४)

मनसा मन सबद सुरति, पंचौं थिर कीजै।
एक अंग सदा संग, सहजैं रस पीजै ॥ टेक ॥
सकल रहित मूल गहित, आपा नहिं जानैं।
अंतरगति निर्मल रति, एकै मन मानैं ॥ १ ॥
हृदय सुद्धि बिमल बुद्धि, पूरण परकासै।
रसना निज नाँउ निरखि, अंतरगति बासै ॥ २ ॥
आतम मति पूरण गति, प्रेम भगति राता।
मगन गलित अरस परस, दादू रस माता ॥ ३ ॥

(४३५)

गोब्यँद के चरनों ही ल्यौ लाऊँ।
जैसें चात्रिग बन में बोलै, पीव पीव करि ध्याऊँ ॥ टेक ॥
सुरजन मेरी सुनहु बीनती, मैं बलि तेरे जाऊँ।
बिपति हमारी तोहि सुनाऊँ, दे दरसन क्यूँ ही पाऊँ ॥ १ ॥
जात दुक्ख सुख उपजत तन कौं, तुम सरनागति आऊँ।
दादू कौं दया करि दीजै, नाँउ तुम्हारो गाऊँ ॥ २ ॥

(४३६)

ये प्रेम भगति बिन रह्यौ न जाई। परगट दरसन देहु अघाई ॥
ताला बेली तलफै माहीं। तुम बिन राम जियरे जक नाहीं ॥१॥
निसबासुरि मन रहै उदासा। मैं जन ब्याकुल साँस उसाँसा ॥२॥
एकमेक रस होइ न आवै। ताथैं प्राण बहुत दुख पावै ॥३॥
अंग संग मिलि यहु सुख दीजै। दादू राम रसाइन पीजै ॥४॥

(४३७)

तिस घरि जाना वे, जहाँ वे अकल सरूप।

सो इब ध्याइये रे, सब देवनि का भूप ॥ टेक ॥
अकल सरूप पीव का, बान बरन न पाइये ।
अखंड मंडल माहिं रहै, सोई प्रीतम गाइये ॥ २ ॥
गावहु मन बिचारा वे, मन बिचारा सोई सारा, प्रगट पीव ते पाइये ।
साँई सेती संग साचा, जीवत तिस घरि जाइये ॥ ३ ॥
अकल सरूप पीव का, कैसें करि आलेखिये ।
सुन्य मंडल माहिं साचा, नैन भरि सो देखिये ॥ ४ ॥
देखौं लोचन सार वे, देखौं लोचन सारा सोई, प्रगट होइ यह अचंभा पेखिये।
दयावंत दयाल ऐसौ, बरण अति बसेखिये ॥ ५ ॥
अकल सरूप पीव का, प्राण जीव का सोई जन जे पावई ।
दयावंत दयाल ऐसौ, सहजैं आप लखावई ॥ ६ ॥
लखै सुलखणहार वे, लखै सोई सँग होई, अगम बैन सुनावही ।
सब दुख भागा रङ्ग लागा, काहे न मंगल गावही ॥ ७ ॥
अकल सरूपी पीव का, कर कैसें करि आणिये ।
निरंतर निर्धार आपै, अंतरि सोई जाणिये ॥ ८ ॥
जाणहु मन बिचारा वे, मनि बिचारा सोई सारा। सुमिर सोई बखानिये।
स्रीरंग सेती रंग लागा, दादू तौ सुख मानिये ॥ ९ ॥

(४३८)

राम तहाँ प्रगट रहे भरपूर, आतमा कँवल जहाँ ।
परम पुरिष तहाँ, झिलिमिलि झिलिमिलि नूर ॥ टेक ॥
चंद सूर मधि भाइ, तहाँ बसै राम राइ ।
गंग जमन के तीर, तिरबेणी संगम जहाँ ।
निर्मल बिमल तहाँ, निरखि निरखि निज नीर ॥ १ ॥
आतमा उलटि जहाँ, तेज पुंज रहै तहाँ सहजि समाइ ।
अगम निगम अति, तहाँ बसै प्राणपति, परसि परसि निज आइ ॥२॥
कोमल कुसम दल, निराकार जोति जल वार पार ।
सुन्य सरोवर जहाँ, दादू हंसा रहै तहाँ, बिलसि बिलसि निज सार ॥३॥

(४३९)

गोब्यंद पाया मनि भाया, अमर कीये संग लीये ।

अखै अभय दान दीये, छाया नहीं माया ॥ टेक ॥
अगम गगन अगम तूर, अगम चंद अगम सूर ।
काल झाल रहै दूर, जीव नहीं काया ॥ १ ॥
आदि अंति नहीं कोइ, राति दिवस नहीं होइ ।
उदै अस्त नहीं दोइ, मनहीं मन लाया ॥ २ ॥
अमर गुरू अमर ज्ञान, अमर पुरिष अमर ध्यान ।
अमर ब्रह्म अमर थान, सरज सुन्य आया ॥ ३ ॥
अमर नूर अमर बास, अमर तेज सुख निवास ।
अमर जोति दादू दास, सकल भुवन राया ॥ ४ ॥

(४४०)

राम की राती भई माती, लोक बेद विधि निषेध ।
भागे सब भरम भेद, अमृत रस पीवै ॥ टेक ॥
भागे सब काल झाल, छूटे सब जग जँजाल ।
बिसरे सब हाल चाल, हरि की सुधि पाई ॥ १ ॥
प्रान पवन जहाँ जाइ, अगम निगम मिले आइ ।
प्रेम मगन रहे समाइ, बिलसै बपु[1] नाहीं ॥ २ ॥
परम नूर परम तेज, परम पुंज परम सेज ।
परम जोति परम हेज, सुंदरि सुख पावै ॥ ३ ॥
परम पुरिष परम रास, परम लाल सुख बिलास ।
परम मंगल दादू दास, पीव सौं मिलि खेलै ॥ ४ ॥

॥ आरती ॥

(४४१)

इहि बिधि आरती राम की कीजै । आतमा अंतरि वारणा लीजै ॥टेक॥
तन मन चंदन प्रेम की माला । अनहद घंटा दीनदयाला ॥१॥
ज्ञान का दीपक पवन की बाती । देव निरंजन पाँचौ पाती ॥२॥
आनँद मंगल भाव की सेवा । मनसा मंदिर आतम देवा ॥३॥
भगति निरंतर मैं बलिहारी । दादू न जानै सेव तुम्हारी ॥४॥

(४४२)

आरती जग जीवन तेरी । तेरे चरन कँवल पर वारी फेरी ॥टेक॥
चित चाँवरी हेत हरि ढारै । दीपक ज्ञान जोति विचारै ॥१॥

(१) शरीर ।

घंटा सबद अनाहद बाजै। आनँद आरति गगना गाजै ॥२॥
धूप ध्यान हरि सेती कीजै। पुहुप प्रीति हरि भाँवरि लीजै ॥३॥
सेवा सार आत्मा पूजा। देव निरंजन और न दूजा ॥४॥
भाव भगति सौं आरति कीजै। इहि बिधि दादू जुगि जुगि जीजै ॥५॥

(४४३)

अबिचल आरति देव तुम्हारी। जुगि जुगि जीवनि राम हमारी ॥टेक॥
मरण मीच जम काल न लागै। आवागवन सकल भ्रम भागै ॥१॥
जोनी जीव जनमि नहिं आवै। निर्भय नाँउ अमर पद पावै ॥२॥
कलि बिष कुसमल बंधन कापै[1]। पारि पहूँते थिर करि थापै ॥३॥
अनेक उधारे तैं जन तारे। दादू आरति नरक निवारे ॥४॥

(४४४)

निराकार तेरी आरती, बलि जाउँ अनंत भवन के राइ ॥टेक॥
सुर नर सब सेवा करैं, ब्रह्मा बिस्नु महेस।
देव तुम्हारा भेव न जानैं, पार न पावै सेस ॥ १ ॥
चंद सूर आरति करैं, नमो निरंजन देव।
धरनि पवन आकास अराधैं, सबै तुम्हारी सेव ॥ २ ॥
सकल भवन सेवा करैं, मुनियर सिद्ध समाध।
दीन लीन ह्वै रहे संत जन, अविगत के आराध ॥ ३ ॥
जै जै जीवनि राम हमारी, भगति करै ल्यौ लाइ।
निराकार की आरति कीजै, दादू बलि बलि जाइ ॥ ४ ॥

(४४५)

तेरी आरती ए, जुगि जुगि जैजकार ॥ टेक ॥
जुगि जुगि आतम राम। जुगि जुगि सेवा कीजिये ॥ १ ॥
जुगि जुगि लंघै पार। जुगि जुगि जगपति कौं मिलै ॥ २ ॥
जुगि जुगि तारणहार। जुगि जुगि दरसन देखिये ॥ ३ ॥
जुगि जुगि मंगलचार। जुगि जुगि दादू गाइये ॥ ४ ॥

॥ अंत समय का पद ॥

(४४६)

जेते गुण व्यापै, ते ते तैं तजि रे मन। साहिब अपणे कारणे ॥ १ ॥
बाणी दीन-दयाल, सब सास्तर की सार।
पढ़ै बिचारै प्रीति सौं, सो जन उतरै पार ॥ २ ॥

॥ इति ॥

(१) काटै।